विजयेश्वर
नित्य नियम विधि

ॐ

विजयेश्वर

नित्य नियम
विधि

संग्रहीत कर्ता

ओंकार नाथ शास्त्री

मैं उन समस्त मित्रों, सहयोगियों के प्रति
आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने
मेरा उत्साह बढ़ाया और मुझे
इस शुभ कार्य के लिये
प्रेरित किया।

ओंकार नाथ शास्त्री

मूल्य : 60 रु

प्रकाशक :
विजयेश्वर पंचांग कार्यालय
अजीत कॉलोनी, गोल गुजराल, जम्मू
फोन : 2555607

सम्पादकीय

शास्त्रानुसार प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं देव ऋण - ऋषि ऋण और पितृ ऋण। नित्य कर्म करने से मनुष्य तीनों प्रकार के ऋणों से मुक्त हो जाता है ***"यत्कृत्वा नृण्यमाप्नोति दैवात् पैत्र्याच्च मानुषात्"*** अथार्त जो व्यक्ति भक्ति तथा श्रद्धा पूर्वक जीवन पर्यन्त प्रतिदिन नित्य कर्म, स्नान, सन्ध्या, जप इत्यादि करता है उसे परमानन्द की अनुभूति होती है तथा उस का जीवन सफल हो जाता है तथा वह इन तीन ऋणों से मुक्त हो जाता है। कवि सम्राट कवि कालिदास ने भी कहा है '**स्तोत्रं कस्ये न तुष्टये**' अर्थात् संसार में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जो स्तुति पाठ, नित्यकर्म से शुभ फल प्राप्त करता नहीं है। स्तोत्रों को यदि देखा जाये तो हज़ारों की संख्या में स्तोत्र हैं परन्तु समयानुसर पूरी स्थिति को ध्यान में रखते हुए मैंने वही स्तोत्र तथा पाठ इत्यादि इस संग्रह में रखे हैं जो एक व्यक्ति को समकालीन जीवन के अनुरूप हैं तथा वह स्तोत्र फिर से जीवित करने का प्रयास किया है जो मृतप्राय हैं तथा जिन की प्रथा कश्मीरी समाज में अधिक थी जैसे *आदित्य हृदय, गणेशस्तवराज, मुकुन्दमाला* इत्यादि। उन तीनों ऋणों को चुकाने के निमित यह ***'विजयेश्वर नित्य नियम विधि'*** जनता की कामनाओं के अनुरूप संगृहीत करके प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैंने एक निश्चित लक्ष्य और उद्देश्य से प्ररित होकर यह संग्रह कार्य किया है। मुझे पूरी आशा है कि ***'विजयेश्वर नित्य नियम विधि'*** समस्त जनता के लिये उपयोगी तथा लाभ प्रद रहेगी।

ओंकार नाथ शास्त्री

सम्पादक

विजयेश्वर तथा रणवीरेश्वर पंचाङ्ग

जम्मू - 2555607

कश्मीरी पण्डितों की सांस्कृतिक विरासत के अनमोल रत्न स्वर्गीय ज्योतिषी प्रेम नाथ शास्त्री के सुपुत्र ज्योतिषी ओ३मकार नाथ शास्त्री अपनी वंश परम्परा को जीवित रखने में आज महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाह रहे हैं। धर्म, संस्कृति का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। वस्तुतः यह आधार भूमि है जिस पर संस्कृति का विविध आयामी भवन अपने पूरे वैभव के साथ खड़ा रहकर प्रतिष्ठा पूर्वक रष्ट्र गौरव का प्रतीक बन जाता है। धर्म यदि प्रकाश स्तम्भ है तो संस्कृति उस की पहचान है। विजयेश्वर कार्यालय ने पिछले पचास वर्षों से हिन्दू धर्म एवं हिन्दुत्व की पहचान को सुरक्षित रखने के लिये जो योग दान दिया है उस का अत्यन्त भव्य इतिहास है और समस्त हिन्दू समाज स्वर्गीय ज्योतिषी आफ़ताभ राम शर्मा के परिवार का ऋणी है।

विविध धार्मिक उत्सवों पर की जाने वाली पूजा पाठ विधि आज न केवल पुस्तक रूप में अपितु कैसटों में रिकार्डिड उपलब्ध है। चाहे वह शिवरात्रिपूजा है अथवा जन्मदिन पूजा, गृहप्रवेश पूजा है अथवा भवन शिल्यान्यास पूजा 'पन'-पूजा अथवा नवदुर्गा पूजा किसी भी प्रकार के धार्मिक उत्सव को विधि पूर्वक मनाने का विधान लिखित रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय स्वर्गीय प्रेमनाथ शास्त्री तथा उन के योग्य सन्तनों को जाता है। गतवर्ष मृत व्यक्ति के दसवें, ग्यारहवें तथा बारहवें दिन की क्रिया-पूजा-विधि तथा श्राद्ध करने की विधि को लेकर भी ***"विजयेश्वर पंचांग कार्यालय"*** से पुस्तकें प्रकाश में आई। स्वर्गीय प्रेमनाथ शास्त्री ने सम्पूर्ण श्रीमद् भगवद्गीता को कैसटों में अपनी मधुर प्रभावशाली वाणी में रिकार्ड किया है। कैसटों के ये सेट आज न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी पर्याप्त लोकप्रिय हुए हैं।

"विजयेश्वर पंचांग" का अपना भव्य इतिहास है। यह वास्तव में प्रत्येक हिन्दू के लिये मार्ग दर्शिका है।

पण्डित प्रेम नाथ शास्त्री के वरिष्ठ पुत्र ज्योतिषी ओ३मकार नाथ शास्त्री मर्यादा पूर्वक अपनी वंश परम्परा को आगे चला

रहे हैं। नव-प्रकाशन की सूची में *"विजयेश्वर नित्य नियम विधि"* एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध होगी। इस पुस्तक में कुछ ऐसी विशिष्ट पाठ-विधियाँ सविस्तार शामिल की गई हैं जो समय गुज़रने के साथ साथ अप्रचलित हो चुकी थीं। यदि ज्योतिषी जी यह प्रयास न करते तो कुछ ही वर्षों में यह अनमोल पाठ विधियाँ सदा के लिये नष्ट हो जाती। अतः इस दृष्टि से उन का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

इस में सन्देह नहीं कि ज्योतिषी ओ३मकार नाथ जी एक सज्जन दिव्य पुरुष हैं। अत्यंत नम्र स्वभाव के ज्ञानी, महा पण्डित, लोक हितैषी, दृढ़-संकल्पी एवं परोपकारी जातिबन्धु तथा कश्मीरी पण्डित समाज के भविष्य की सुखद आशा हैं। हमारी सांस्कृतिक धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं, परम्पराओं एवं दृढ़ विश्वासों को इन की सतर्क लेखनी से बल मिलेगा इस में कोई सन्देह नहीं।

मुझे पूरा विश्वास है कि समस्त समाज के द्वारा प्रस्तुत पाठ विधि पुस्तक *"विजयेश्वर नित्य नियम विधि"* का भी सहर्ष और श्रद्धा पूर्वक सम्मान होगा और जाति के लिये यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक के मूल पाठ को देखकर मुझे लगा कि निकट भविष्य में यह पुस्तक एक बहुमूल्य संदर्भ ग्रन्थ सिद्ध होगां कश्मीर के सांस्कृतिक इतिहास को जानने के हेतु तथा अपनी मूलभूत परम्परा से परिचित होने के लिये निस्सन्देह इस रचना का अपना विशिष्ट महत्त्व है।

31 दिसम्बर, 2003
जम्मू यात्री भवन
हरिद्वार

प्रोफ़ेसर (डॉ०) भूषण लाल कौल
डी० लिट्
भूतपूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य स्नातकोत्तर
हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर, कश्मीर

हमारे प्रकाशन

1. कर्म काण्डदीपक (हिन्दी उर्दू)
   जिसमें धूप-दीप, विष्णु पूजन, प्रेप्युन, शिव पूजा, दिवचक्षीर पूजा, गृह प्रवेश पूजा, दीपमाला पूजा, श्राद्ध संकल्प विधि, पन्न पूजा, रुद्र मन्त्र, चमानु वाक्य।
2. पंचस्तवी (हिन्दी उर्दू में) अर्थ तथा व्याख्या सहित।
3. भवानी सहस्रनाम।
4. महिम्नस्तोत्र
5. बहुरूप गर्भ
6. शिव रात्रि पूजा (हिन्दी उर्दू)
7. सहस्रनामावली : शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य, भवानी, शारिका, ज्वाला, महाराज्ञा शारदा और उमा सहस्रनाम
8. राम गीता (हिन्दी उर्दू में)
9. श्रीमत् भगवत् गीता (उर्दू में)
10. शारदा प्राईमर
11. विजयेश्वर नित्य नियम विधि
12. नवग्रह पूजा पुस्तक।
13. श्राद्ध पद्धति पुस्तक।
14. दसवें, ग्यारहवें, बारहवें दिन की किताब।

विजयेश्वर कैसट्स

"प्रेम नाथ शास्त्री" की वाणी से

(1) गीता प्रवचन (11 कैसटों में), (2) लल्ल वाक्य (7 कैसटों में), (3) महिम्नापार (3 कैसटों में), (4) जगद्धरभट्ट के विलाप, (5) कर्म भूमिकाय दिजि धर्मुक बल, (6) राम गीता, (7) अन्तिम संस्कार विधि, (8) शिव रात्रि पूजा, (9) भवानी सहस्रनाम, (10) नित्य नियम विधि, (11) पंचस्तवी, (12) भगवत् गीता (पाठ रूप में), (13) दूर्गा सप्तशती, (14) पौष पूजा तथा लग्न संस्कार। (15) श्राद्ध, (16) दसवां, ग्यारहवां, बारहवां दिन, (17) नवग्रह पूजा, (18) जन्मदिन पजा विधि।

विषय सूची

नित्य नियम

प्रातः काल ब्राह्मी मुहूर्त में नींद से उठते ही, दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुये पढ़ें:-

करा‍ग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।

बिस्तरे से उठने पर यह पढ़ें:-

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनं मण्डिते ।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढ़ें:- नमोस्त्व नन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाक्षि-शिरोरु बाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्र कोटी - युगधारिणे नमः।

दायां पैर धोते हुए पढ़ें:- ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने। नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते।

मुंह धोते हुए पढ़ें:- गंगा, प्रयाग, गयनै मिष पुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुवि सन्ति-हरिप्रसादात् आयान्तु तानि कर पद्म पुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशा कलंकम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अरुरुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पढ़ें:- ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

यज्ञोपवीत गले में फिर से धरण करते हुए पढें:- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम् - असि यज्ञस्यत्वा - उपवीतेन - उपनह्यामि।।

स्नान इत्यादि करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके धूप, दीप जला कर शुद्ध आसन पर बैठ कर आदि देव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुए पढें:-

प्रातः-स्मरामि-गणनाथम्-अनाथ बन्धुं,
सिन्दूर-पूरपरि-शोभित-गण्ड-युग्मम्।
उद्दण्ड-विघ्न-परि-खण्डन-चण्ड-दण्डम्,
आखण्ड-लादि-सुरनायक-वृन्द-वन्द्यम्।।
प्रातः-स्मरामि-भवभीति-महार्ति-नाशं,
नारायणं-गरुड-वाहनम्-अब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत-वर-वारण-मुक्ति-हेतुं,
चक्रायुधं- तरुण-वारिज-पत्र-नेत्रम्।।
प्रातः स्मरामि भव-भीतिहरं-सुरेशं,
गङ्गाधारं वृषभ-वाहनम्-अम्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग-शूल-वरदा-भय-हस्तम्-ईशं,
संसार-रोगहरम्-औषधम्-अद्वितीयम्।।
ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्तकारी,
भानुः-शशि-भूमिसुतो-बुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः,

कुर्वन्तु-सर्वे-मम-सु प्रभातम्।।
भृगुः वसिंष्ठः क्रतुः, अङ्गिगराश्च,
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिः-च्यवनश्च दक्षः,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्,
प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नोप-शान्तये।
अभिप्रीतार्थ - सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि,
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।
बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,
वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीति त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे,
शंखौ वहन् मौलिमान्,
दिश्यात् - ईश्वरपुत्र-ईश भगवान्
लम्बोदरः- शर्म-नः।।
सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क,
रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय,
सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।
मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्- सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं

यज्ञोपवीत गले में फिर से धरण करते हुए पढें:- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम् - असि यज्ञस्यत्वा - उपवीतेन - उपनह्यामि।।

स्नान इत्यादि करके पूर्व दिशा की ओर मुंह करके धूप, दीप जला कर शुद्ध आसन पर बैठ कर आदि देव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुए पढें:-

प्रातः-स्मरामि-गणनाथम्-अनाथ बन्धुं,
सिन्दूर-पूरपरि-शोभित-गण्ड-युग्मम्।
उद्दण्ड-विघ्न-परि-खण्डन-चण्ड-दण्डम्,
आखण्ड-लादि-सुरनायक-वृन्द-वन्द्यम्।।
प्रातः-स्मरामि-भवभीति-महार्ति-नाशं,
नारायणं-गरुड-वाहनम्-अब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत-वर-वारण-मुक्ति-हेतुं,
चक्रायुधं- तरुण-वारिज-पत्र-नेत्रम्।।
प्रातः स्मरामि भव-भीतिहरं-सुरेशं,
गङ्गाधारं वृषभ-वाहनम्-अम्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग-शूल-वरदा-भय-हस्तम्-ईशं,
संसार-रोगहरम्-औषधम्-अद्वितीयम्।।
ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्तकारी,
भानुः-शशि-भूमिसुतो-बुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः,

कुर्वन्तु-सर्वे-मम-सु प्रभातम्।।
भृगुः वसिंष्ठः क्रतुः, अङ्गिगराश्च,
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिः-च्यवनश्च दक्षः,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्,
प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नोप-शान्तये।
अभिप्रीतार्थ - सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि,
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।
बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,
वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीति त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे,
शंखौ वहन् मौलिमान्,
दिश्यात् - ईश्वरपुत्र-ईश भगवान्
लम्बोदरः- शर्म-नः।।
सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क,
रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय,
सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।
मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्- सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं

कृष्णपिंगं तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एव च, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं। नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र - नायकम्। पठते शृणुते यस्तु, गणेश - स्तवम् - उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखोश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विघ्नराजो गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-शृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे, विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

श्री गणपति स्तोत्रम्

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बघ्नता
स्त्रष्टुं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम्।
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैः सिद्धये।
ध्यातः पंचशरेण विश्वजितये पायात्स नागाननः।।
विघ्न ध्वान्त निवारर्णे कतरणिर्विघ्नाट वीह व्यवाड्
विघ्न व्यालकुलाभिमान गरुडो विघ्नेभ पंचाननः।

विघ्नोत्तुङ्ग गिरि प्रभेदनपवि र्विघ्नाम्बु धेर्वाडवो
विघ्नाघौघ घनप्रचण्ड, पवनो विघ्नेश्वरः पातु नः।।
खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्यन्दन-मदगन्धलुब्ध-मधुप-व्यालोल-गण्डस्थलम्।
दन्ताघात विदारितारि रुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।
श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशब्जा भयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं,
ध्ययायत्-शान्त्यर्थमीशं गणपतिम्-अमलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।
आवाहये तं गणराजदेवं-रक्तोत्पलाभासम् अशेषवन्द्यम्।,
विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं-भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या।।
यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति-परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा-तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।
विघ्नेश वीर्याणि विचित्रकाणि-वन्दीजनैमार्गधकैः स्मृतानि।
श्रुत्वा समुत्तिष्ठ गजानन त्वं-ब्राह्मे जगन्मङ्गलकं कुरुष्व।।
गणेश हेरम्ब गजाननेति-महोदर स्वानुभवप्रकाशिन्।
वरिष्ठ सिद्धिप्रिय बुद्धिनाथ-वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।
अनेकविघ्नान्तक वक्रतुण्ड-स्वसंज्ञवासिंश्च चतुर्भुजेति।
कवीश देवान्तक नाशकारिन्-वदन्त एवं त्यजत प्रभीतीः।।
अनन्तचित्-रूपमयं गणेशं-ह्यभेदभेदादि विहीनम्- आद्यम्।
हृदि प्रकाशस्य धरं स्वधीस्थं-तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।
विश्वादिभूतं हृदि योगिनां वै-प्रत्यक्षरूपेण विभान्तमेकम्।
सदा निरालम्ब समाधिगम्य-तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।
यदीयवीर्येण समर्थभूता-माया तया संरचितं च विश्वम्।

नागात्मकं ह्यात्मतया प्रतीतं-तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।
सर्वान्तरे संस्थितम्-एक मूढं-यदाज्ञया सर्वमिदं विभाति।
अनन्तरूपं हृदि बोधकं वै-तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।
यं योगिनो योगबलेन साध्यं-कुर्वन्ति तं कः स्तवनेन नौति।
अतः प्रणामेन सुसिद्धिदोऽस्तु-तमेकदन्तं शरणं व्रजामः।।
देवेन्द्र मौलिमन्दार मकरन्द कणारुणाः,
विघ्नान् हरन्तु हेरम्ब चरणाम्बु जरेणवः।।
एकदन्तं महाकायं लम्बोदर गजाननम्।,
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।,
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

गणेश स्तुतिः

आसय शरण करतम क्षमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपत गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज़ राज़न हुन्द विभो।।
पज़ि लोलु पादन तल नमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
गुडनी च्यय छुय आधिकार, कलिकालकुय चुय ताजदार।
पज़ि लोल पादन तल प्यमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
मूषक च़्य वाहन शूभवुन, त्रन लूकनय मंज फेरवुन,
सहायक म्य रोज़तम हर दमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
यज्ञस ज़पस व्यवहारसय, गुडु छिय सुरान प्रथकारसय,
कारस अनान छुख चय जमः, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त, स्मरन चाञ वंतिन म्ये अन्द।
रति वेल, सुन्दर छुम समः, ओं श्री गणेशाये नमः।
स्मरन यि चोनी यिम करान, भवुसागरस अपोर तरान,
रट्अ सानि नावे चुय नमा, ओं श्री गणेशाये नमः।

स्मरन यि चानी भक्ति जन, पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रन,
चरणोदकुक अमृत चमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
ज़गतुक महेश्वर च्य पिता, सति रूप सीति धर्मुच सत्ता,
माता च़्य गौरी श्री वुमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
बाह नाव सुन्दर शूभुवुज, स्वर्गस गछान तिम बोलुवुज,
पूरण करुम पूरण तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
आमुत भक्त च़्येय छुय शरण, प्योमुत खोरन तल छुय परण,
वर दिय कास्तम चुय गमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान, प्रेम पोश ह्यय छिय प्रारान,
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा, ओं श्री गणेशाये नमः।
गणिशबल प्यठ आख चलिथय, अंग अंग स्यंदरा मलिथय,
गोअड़ बोअज म्यन प्रार्थना, ओं श्री गणेशाये नमः।

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्।
एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।

रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।

पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्।
अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।

चित्रमाल भक्तिज़ाल भालचन्द्र शोभितम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्।

विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।

चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुंर्युगम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्।
देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।

पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्।
यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।

भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै र्सदार्चितम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्।
शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।

योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्।
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

गणेशकवचम्

अस्य श्री गणेशकवचस्य भृगुऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीगज वदनो देवता, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं, अमुककामनासिद्ध्यर्थे जपे पाठे वा विनियोगः।।

।। अथ ध्यानम्।।

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदन्तं त्रिनेत्रं
बृहदुदर मशेषव्यक्तिरूपं पुराणम्।
अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशं
पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि।।
ॐ शिरोवत्वीशपुत्रो मे बालं पातु विनायकः।
त्रिनेत्रः पातु नेत्रे मे शूर्पकर्णस्तथा श्रुती।।
हेरंबो रक्षतु घ्राणं मुखं पातु गजाननः।
जिह्वां पातु गणेशो मे कण्ठं श्रीकण्ठवल्लभः।।
स्कन्दौ महाबलः पातु भुजौ मे पातु विघ्नहा।
करौ परशुभृत्पातु नाभिं सिन्दूरभूषितः।।
जघनं पार्वतीपुत्रस्तूरू मे पातु पाशभृत्।
जानुनी जगतां नाथो जङ्घे मूषकवाहनः।।
गुल्फौ पद्मासनः पातु पादौ दुर्दैत्यदर्पहा।
एकदन्तोऽग्रतः पातु पृष्ठं पातु गणाधिपः।।
पार्श्वौ तु मोदका हारो दिग्विदिक्षु च सिद्धिदः।
व्रजतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोपि वा।।
चतुर्थीवल्लभो देवो पातु मे भुक्तिमुक्तिदः।।
इदं पवित्रं यः स्तोत्रं चतुर्थ्यां नियतः पठेत्।
सिन्दूररक्तपुष्पैश्च दूर्वयाऽऽपूज्य विघ्नपम्।।
राजा राजसुतो वापि राजपत्नी कुलं बलम्।
तस्यावश्यं भवेद्वश्यो विघ्नराजप्रसादतः।।
समन्त्रयन्त्रं यः स्तोत्रं करे संलिख्य धारयेत्।
धनधान्य समृद्धिस्तु भवत्येव न संशयः।।
वाग्भवं कामराजस्य माया चादौ विधीयताम्।

हुंनमो वक्रतुण्डाय मध्ये यस्य जपेन्नरः।।
रसनालसत् एकाग्रं षडङ्गं स्स पूर्वकम्।
हुत्वा दत्वा च विधिवन्नष्टद्रव्यं समेष्यति।।
यं यं काममभिध्याय कुरुते कर्म किञ्चन।
तं तं सर्वमवाप्नोति वक्रतुण्डप्रसादतः।।
भवेदव्याहतैश्वर्यः सः गणेशप्रसादतः।।

गणेशस्तवराजः

ॐ विघ्नेशो नः स पायात्विहृतिषु जलधिं पुष्कराग्रेण पीत्वा
यस्मिन्-उद्धृत्य हस्तं वमति तदऽखिलं दृश्यते व्योम्नि देवैः
क्वाप्यम्भः क्वापि विष्णुः क्वचन कमलभूः क्वाप्यऽनन्तः क्वच श्रीः
क्वाप्यौर्वः क्वापि शैलः क्वचन मणिगणः क्वापि नक्रादि सत्वाः।।
निर्विध्न विश्व निर्माण सिद्धये यदनुग्रहम्।
मन्ये स वक्रे धातापि तस्मै विघ्न जिते नमः।।
सर्गारम्भेऽप्यजाताय बीजरूपेण तिष्ठते।
धात्रा कृतप्रणामाय गणाधिपतये नमः।।
गणेशाय नमः प्रह्ववाञ्छिताम्बुजभानवे।
सितदंष्ट्राकुर स्फीतविघ्नौघ तिमिरेन्दवे।।
प्रणमाम्यजमीशानं योगशास्त्रविशारदम्।
निःशिषगणवृन्दस्य नायकं सुविनायकम्।।
"श्रीब्रह्मोवाच"।।
भगवन् श्रोतुम् इच्छामि विस्तरेण यथायथम्।
स्तवराजस्य माहात्म्यं स्वरूपंच विशेषतः।।

"श्रीनन्दिकश्वर उवाच"।।
स्तवराजस्य माहात्म्यं प्रवक्ष्यामि समासतः।।
शृणुष्वावहितो भूत्वा सर्व सिद्धिकरं परम्।
कर्मणा मनसा वाचा ये प्रपन्ना विनायकम्।
ते तरन्ति महाघोरं संसारं कामवर्जिताः।।
सकृच्च जप्त्वा स्तवराजमुत्तमं तरत्यशेषं भवपाशपञ्जरम्।
विमुच्यते संसृतिसागरान्नरो विभूतिमाप्नोति सुरैः सुदुर्लभाम्।।
यत्फलं लभते जप्त्वा स्वरूपं चापि यादृशम्
यः प्रातरुत्थितो विद्वान्ब्राह्मे वापि मुहूर्तके।
विषुवायनकालेषु पुण्ये वा समयान्तरे।।
सर्वदा वा जपञ्जन्तुः स्तवराजं स्तवोत्तमम्
यत्फलं लभते मर्त्यः तच्छृणुष्व चतुर्मुख।।
गङ्गाप्रवाहवत्तस्य वाग्विभूतिर्विजृम्भते।।
बृहस्पतिसमो बुद्धया पुरन्दरसमः श्रिया।
तेजसादित्यसङ्काशो भार्गवेण समो नये।।
धनदेन समो दाने तथा वित्तपरिग्रहे।
धर्मराजसमो न्याये शिवभक्तो मया समः।।
प्रतापे वह्निसंकाशः प्रसादे शशिना समः।
बलेन महता तुल्यो भवता ब्रह्मवर्चसे।।
सर्वतत्वार्थविज्ञाने मयापि समतां व्रजेत्।
एवमेतत्त्रिसन्ध्यं वै जपन्स्तवमनुत्तमम्।।
सर्वान्कामान्नरः प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान्।
सशरीरः सुरेन्द्रस्य पदं न्यस्यति मूर्धनि।।

प्राप्याष्टगुणमैश्वर्यं भुक्त्वा भोगान्सुपुष्कलान्।
अक्षयो वीतशोकश्च निरातङ्को निरामयः।।
जरामरणनिर्मुक्तो वेदशास्त्रार्थ कोविदः।
सिद्वचारण गन्धर्व देवविद्या धरादिभिः।।
संस्तूयमानो मुनिभिः शंस्यमानो दिनेदिने।
विचरत्यऽखिलां ल्लोका न्बन्धुवर्गैः समं नरः।।
एवं चिराय निर्वाह्य देवस्यानुचरोंभवेत्।
स्तवराजं सकृज्जप्त्वा मुच्यते सर्वकिल्विषैः।।
सर्वसिद्धिम् अवाप्नोति पुनात्यासप्तमं कुलम्।
नाश्येत् विघ्न संघातांस्तेन वैनायकं स्मृतम्।।
स्तवराजमनुस्मरञ्जपन्हृदयाग्रे विलिखन्पठन्नपि।
स सुरासुर सिद्धचारणै र्मुनिभिः प्रत्यहमेव पूज्यते।
तरति च भवचक्रं सर्वमोहं निहन्ति
क्षिपति च परवादं मान्यते बन्धुवर्गैः।
अखिलमपि च लोकं क्षेमतामाशु नित्वा
व्रज्नति यतिभिरीड्यं शाश्वतं धाम मर्त्यः।।
यो जपति स्तवराजमशोकः क्षेमतमं पदमेति मनुष्यः।
चारणसिद्धसुरैरभिवन्द्यो याति पदं परमं स विमुक्तः।।
जपेद्यः स्तवराजाख्यमिमं प्रातःस्तवोत्तमम्।
तस्यापचारं क्षमते सर्वदैव विनायकः।।
सर्वान्निहन्ति वै विघ्नान्विपदश्च समन्ततः।
अशेषाभिर्गणाध्यक्षः सम्पद्भिरभिषिञ्चति।।
अस्य च प्रणता लक्ष्मीः कटाक्षानुविधायिनी।

किं करोमीति वै भीत्या पुरस्तादेव तिष्ठति।।
तस्मान्निः श्रेयसं गन्तुमतिभक्त्या विचक्षणः।
स्तवराजं जपेज्जन्तुर्धर्मकामार्थ सिद्धये।।
आधि व्याध्यस्त्र शस्त्राग्नि तपः पङ्कार्णवादिषु।
भयेष्वन्येषु चाप्येतत्स्मरन्मुक्तो भवेन्नरः।।
स्तवराजं सकृज्जप्त्वा मार्गं गच्छति मानवः।
न जातु जायते तस्य चौरव्याघ्रादिभि र्भयम्।।
यथा वरिष्ठो देवानाम शेषाणां विनायकः।
तथा स्तवो वरिष्ठोयं स्तवानां शम्भुनिर्मितः।।
अवतीर्णो यदा देवो विघ्नराजो विनायकः।
तदा लोकोपकारार्थं प्रोक्तोयं शम्भुना स्वयम्।
विनायकप्रियकरो देवस्य हृदयङ्गमः।
जप्यः स्तवोयं यत्नेन धर्मकामार्थसिद्धये।।
"अस्य श्रीमहागणपति स्तवराज मंत्रस्य ईश्वर ऋषिः, नानावृत्तानि छन्दांसि विनायको देवता तत्पुरुष इति बीजं एकदन्त्त इति शक्तिः आत्मनो वाङ्मनः कायो पार्जित पाप निवारणार्थं धर्मार्थ कामसिध्यर्थे पाठे विनियोगः"।।
ध्यानं।।
जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलेर्बन्धने
स्रष्टुं वारिरुहोद्भवेन विधिना शेषेण धर्तुंधराम्।
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैर्मुक्तये
ध्यातः पञ्चशरेण लोकविजये पायात्स नागाननः।।

।।"ईश्वर उवाच"।।

ॐ कारममृतं ब्रह्म शिवमक्षरमव्ययम्।
यमामनन्ति वेदेषु तं प्रपद्ये विनायकम्।।
यतः प्रवृत्तिर्जगतां यः साक्षी हृदयस्थितः।
आधारभूतो विश्वस्य तं प्रपद्ये विनायकम्।।
यस्य प्रसादाच्छक्राद्याः प्राणन्ति निमिषन्ति च।
प्रवर्तकं तं लोकानां प्रणमामि विनायकम्।।
शिखाग्रे द्वादशाङ्गुल्ये स्थितं सूक्ष्मतनुं विभुम्।
युञ्जन्ति यं मरीच्याद्यास्तं नमामि गणाधिपम्।।
लीलया लोक रक्षार्थं द्विधाभूतो महेश्वरः।
यः स्वयं जगतः साक्षी तं वन्दे द्विरदाननम्।।
विघ्नेश्वरं विधातारं धातारं जगतामपि।
प्रणमामि गणाध्यक्षं प्रणतार्तिविनाशनम्।।
उत्सङ्गतल्पे यो देव्या भवान्याः क्रीडते विभुः।
बालो हरन्मनस्तस्यास्तं प्रपद्ये विनायकम्।।
विधाय भूषणैश्चित्रैर्वेशकर्म मनोरमम्।
यं दृष्टा पश्यतीशानी तं प्रपद्ये विनायकम्।।
लीलया यः सृजंल्लोकान्भिन्दन्नपि मुहुर्मुहुः
संक्रीडते महासत्वस्तं नतोस्मि गणाधिपम्।।
सिन्दूरितमहाकुम्भस्तुङ्गदन्तः सुभैरवः।
भिनत्ति दैत्यकरिणस्तं वन्दे द्विरदाननम्।।
यस्य मूर्तिं व्रजन्त्याशु मदामोदानुषङ्गिणः।
भ्रमरास्तीव्रसंरावास्तं नमामि विनायकम्।।

गम्भरभीमनिनदं श्रुत्वा यत् बृंहितं क्षणात्।
पतन्त्यसुरनागेन्द्रास्तं वन्दे द्विरदाननम्।।
यो भिनत्ति गिरीन्सर्वान्घोरनिर्घातभैरवैः।
रवैः सन्त्रासजननैस्तं वन्दे द्विरदाननम्।।
लीलया प्रहता येन पादाभ्यां धरणी क्षणात्।
संशीर्यते सशैलौघा तं वन्दे चण्डविक्रमम्।।
यत्करताडनै र्भिन्नमम्भः शतसहस्रधा।
विशीर्यते समुद्राणां तं नतोस्मि गणाधिपम्।।
विमुखा यत्र दृश्यंते भ्रष्टवीर्याः पदच्युताः।
निष्प्रभा विबुधाः सद्यस्तं प्रपद्ये विनायकम्।।
यत् भ्रूप्रणिहितां लक्ष्मीं लभन्ते वासवादयः।
स्वतन्त्रमेकं नेतारं विघ्नराजं नमाम्यहम्।।
यत्पादपांसुनिचयं बिभ्राणा मणिमौलिषु।
अमरा बहु मन्यन्ते तं नतोस्मि गणाधिपम्।।
वेदान्तगीतं पुरुषं वरेण्यमऽभयप्रदम्।
हिरण्मयपुरान्तःस्थं तमस्मि शरणं गतः।।
चित्सुधानन्दसन्मात्रं परानन्दस्वरूपिणम्।
निष्कलं निर्मलं साक्षाद्विनायकमुपैमि तम्।।
अनपायं च सद्भूतं भूतिदं भूतिवर्धनम्।
नमामि सत्यविज्ञानमनन्तं ब्रह्मरूपिणम्।।
अनाद्यन्तं महादेव प्रियपुत्रं मनोरमम्।
द्विपाननं विभुं साक्षादात्मानं तं नमाम्यहम्।।
विश्वामरेश्वरैर्वन्द्यमाधारं जगतामपि।

प्रणमामि गणाध्यक्षं प्रणताज्ञान मोचनम्।।
शिखाग्रे द्वादशाङ्गुल्ये स्थितं स्फटिक सन्निभम्।
गोक्षीरधवलाकारं प्रणमामि गजाननम्।।
अनाधारं नवाधारम नन्ताधार संस्थितम्।
धातारं च विधातारं तमस्मि शरणं गतः।।
अनन्तदृष्टिं लोकादिमनन्तं विद्रुमप्रभम्।।
अप्रतर्क्यमनिर्देश्यं निरालम्बं नमाम्यहम्।।
भूतालयं जगद्योनिमणी यांसमणोरपि।
स्वसंवेद्यमसंवेद्यं वेद्यावेद्यं नमाम्यहम्।।
प्रमाणप्रत्ययातीतं हंसमव्यक्तलक्षणम्।
अनाविलमनाकारं तमस्मि शरणं गतः।।
विश्वाकारमनाकारं विश्वावासमनामयम्।
सकलं निष्कलं नित्यं नित्यानित्यं नमाम्यहम्।।
संसारवैद्यं सर्वज्ञं सर्वभेषज भेषजम्।
आत्मानं सदसद्व्यक्तं धातारं प्रणमाम्यहम्।।
भ्रूमध्ये संस्थितं देवं नाभिमध्ये प्रतिष्ठितम्।
हृन्मध्ये दीपवत्संस्थं वन्दे सर्वस्य मध्यगम्।।
हृत्पुण्डरीकनिलयं सूर्यमण्डलनिष्ठितम्।
तारकान्तरसंस्थानं तारकं तं नमाम्यहम्।।
तेजस्विनं विकर्तारं सर्वकारणकारणम्।
भक्तिगम्यमहं वन्दे प्रणवप्रतिपादितम्।।
अन्तर्योगरतैर्युक्तैः कल्पितैः स्वस्तिकासनैः।
बद्धं हृत्कर्णिकामध्ये ध्यानगम्यं नमाम्यहम्।।

ध्येयं दुर्ज्ञेयमद्वैतं त्रयीसारं त्रिलोचनम्।
आत्मानं त्रिपुराराते: प्रियसूनुं नमाम्यहम्।।
स्कन्दप्रियं स्कन्दगुरुं स्कन्दस्याग्रजमेव च।
स्कन्देन सहितं शश्वन्नमामि स्कन्दवत्सलम्।।
नमस्ते विघ्नराजाय भक्तविघ्नविनाशिने।
विघ्नध्यक्षाय विघ्नानां निहन्त्रे विश्वचक्षुषे।।
विघ्नदात्रेऽप्यभक्तानां भक्तानां विघ्नहारिणे।
विघ्नेश्वराय वीराय विघ्नेशाय नमोनमः।।
कुलाद्रिमेरुः कैलासशिखराणां प्रभेदिने।
दन्तभिन्ना भ्रमालाय करिराजाय ते नमः।।
किरीटिने कुण्डलिने मालिने हारिणे तथा।
नमो मौञ्जी सनाथाय जटिने ब्रह्मचारिणे।।
डिण्डिमुण्डाय चण्डाय कमण्डलुधराय च।
दण्डिने चैव मुण्डाय नमोऽध्ययनशीलिने।।
वेदाध्ययनयुक्ताय सामगानपराय च।
त्र्यक्षाय च वरिष्ठाय नमश्चन्द्रशिखण्डिने।।
कपर्दिने करालाय शंकर प्रियसूनवे।
सुताय हैमवत्याश्च हर्त्रे च सुर विद्विषाम्।।
ऐरावणादिभि र्दिव्यैदिग्गजैः संस्तुताय च।
स्वबृंहितपरित्रस्तै र्नमस्ते मुक्तिहेतवे।।
कूष्माण्डगणनाथाय गणानां पतये नमः।
वज्रिणाराधितायैव वज्रिवज्रनिवारिणे।।
पूष्णो दन्तभिदे साक्षान्महतां भीष्णाय च।

ब्रह्मणश्च शिरोहर्त्रे विवस्वद्बन्धनाय च।।
अग्नेश्चैव सरस्वत्या इन्द्रस्य च बलच्छिदे।
भैरवाय सुभीमाय भयानकरवाय च।।
बिभीषणाय भीष्माय नागाभरणधारिणे।
प्रमत्ताय प्रचण्डाय वक्रतुण्डाय ते नमः।
हेरम्बाय नमस्तुभ्यं प्रलम्बजठराय च।
आखुवाहाय देवाय चैकदन्ताय ते नमः।।
शूर्पकर्णाय शूराय परश्वधधराय च।
सृणिहस्ताय धीराय नमः पाशासिपाणये।।
धारणाय नमस्तुभ्यं धारणाभिरताय च।
धारणाभ्यासयुक्तानां पुरस्तात्संस्तुताय च।।
प्रत्याहाराय वै तुभ्यं प्रत्याहाररताय च।
प्रत्याहाररतानां च प्रत्याहारस्थितात्मने।।
विघ्नाध्यक्षाय दक्षाय लोकाध्यक्षाय धीमते।
भूताध्यक्षाय भव्याय गणाध्यक्षाय ते नमः।।
योगपीठान्तरस्थाय योगिने योगधारिणे।
योगिनां हृदिसंस्थाय योगगम्याय ते नमः।।
ध्यानाय ध्यानगम्याय शिवध्यानपराय च।
ध्येयानामपि ध्येयाय नमो ध्येयतमाय च।।
सप्तपातालपादाय सप्तद्वीपोरुजंघिने।
नमो दिग्बाहवे तुभ्यं व्योमदेहाय ते नमः।।
सोमसूर्याग्निनेत्राय ब्रह्मविद्यामदाम्भसे।
ब्रह्माण्डकुण्डपीठाय सामघोषस्वनाय च।।

ज्योतिर्मण्डलपुच्छाय हृदयालानकाय च।
ध्यानार्द्रबद्धपादाय पूजाधोरणधारिणे।।
सोमार्कबिम्बघण्टाय दिक्करीन्द्रवियोगिने।
आकाशसरसो मध्ये क्रीडागहनशालिने।।
सुमेरुदन्तकोशाय पृथिवीस्थलगाय च।
सुघोषाय सुभीमाय सुरकुञ्जरभेदिने।।
हेमाद्रिकूटभेत्रे च दैत्यदानवमर्दिने।
गजाकाराय देवाय गजराजाय ते नमः।।
ब्रह्मणे ब्रह्मरूपाय ब्रह्मगोत्रेऽव्ययाय च।
ब्रह्मघ्ने ब्राह्मणायैव ब्रह्मणः प्रियबन्धवे।।
यज्ञाय यज्ञगोत्रे च यज्ञानां फलदायिने।
यज्ञहर्त्रे यज्ञकर्त्रे सर्वयज्ञमयाय च।।
सर्वनेत्राधिवासाय सर्वैश्वर्यप्रदायिने।
गुहाशयाय गुह्याय योगिने ब्रह्मवादिने।।
"ॐ गंतत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि,
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्"। 3।
एकाक्षरपरायैव मायिने ब्रह्मचारिणे।
भूतानां भुवनेशानां पतये पापहारिणे।।
सर्वारम्भनिहर्त्रे च विमुखानां निजार्चने।
नमो नमो गणेशाय विघ्नेशाय नमो नमः।।
विनायकाय वै तुभ्यं विकृताय नमोनमः।
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रे नमस्तुभ्यं वियोगिने।।
नमस्तुभ्यं त्रिनेत्राय त्रिनेत्र प्रियसूनवे।

सप्तकोटि महामन्त्रै र्मन्त्रिता वयवाय ते।।
मन्त्राय मन्त्रिणां नित्यं मन्त्राणां फलदायिने।
लीलया लोकरक्षार्थं विभक्त निजमूर्तये।।
स्वयं शिवाय देवाय लोकक्षेमानु पालिने।
नमोनमः क्षमाभर्त्रे नमः क्षेमतमाय च।।
दयामयाय देवाय सर्वभूतदयालवे।
दयाकर दयारूप दयामूर्ते दयापर।।
दयाप्राप्य दयासार दयाकृतिरतात्मक।
जगतां तु दयाकर्त्रे सर्वकर्त्रे नमो नमः।।
नमः कारुण्यदेहाय वीराय शुभदन्तिने।
भक्तिगम्याय भक्तानां दुःखहर्त्रे नमोस्तु ते।।
त्रिपुरं दग्धुकामेन पूजिता त्रिशूलिना।
दयाशील दयाहार दयापर नमोस्तुते।।
नमः समस्तगीर्वाण वन्दिताङ्घ्रि युगाय ते।
जगतां तस्थुषां भर्त्रे विघ्नहर्त्रे नमोस्तुते।।
नमो नमस्ते गणनायकाय सुनायकाया खिलनायकाय।
विनायकाया भयदायकाय नमः शुभा नामु पनायकाय।।
गणाधिराजाय गणानुशास्त्रे गजाधिराजाय गजाननाय।
शताननायामितमाननाय नमो नमो दैत्यविनाशनाय।।
अनामयायामलधीमयाय स्वमाययाविष्ट जगन्मयाय।
अमेयमायाविकसन्मयाय नमो नमस्तेस्तु मनोमयाय।।
नमस्ते समस्ताधिनाथाय कर्त्रे नमस्ते समस्तोरुविस्तारभाजे।
नमस्ते समस्ताधिकायातिभूम्ने नमस्ते पुनर्व्यस्तविन्यस्तधाम्ने।।

पात्रे सुराणां प्रमथेश्वराणां शास्त्रेऽनुशास्त्रे सचराचरस्य।
नेत्रे प्रनेत्रे च शरीरभाजां धात्रे वराणां भवते नमोऽस्तु।।
नमोस्तु ते विघ्नविनाशकाय नमोस्तुते भक्तभयापहाय।
नमोस्तुते मुक्तमनस्थिताय नमश्च भूयो गणनायकाय।।
आखिलभूवनभर्त्रे सम्पदामेकदात्रे
निखिल तिमिर भेत्रे निष्कलायाव्ययाय।
प्रणतमनुज गोप्त्रे प्राणिनां त्राणकर्त्रे
सकलविबुधशास्त्रे विश्वनेत्रे नमोऽस्तु।।
दशनकुलिशभिन्नै निर्गतै दिग्गजानां
विलसितशुभदन्तं मौक्तिकैश्चन्द्रगौरैः।
भवनमुपसरन्तं प्रेक्ष्य गौरी भवन्तं
सुदृढमथ कराभ्यां ष्लिष्यते प्रेमनुन्ना।।
मृदुनि ललितशीते तल्परङ्गे भवान्याः
शुभविलसितभावां नृत्यलीलां विधाय।
अचल दुहितुरङ्कादऽङ्कमन्यं विसर्पन्
पितुरुपहरसि त्वं नृत्यहर्षोपहारम्।।
भुजगवलयितेनो पस्पृशन्पाणिना त्वां
सरभसमथ बाह्वोरन्तराले निवेश्य।
कलमधुरसुगीतं नृत्तमालोकयंस्ते
कलमऽविकलतालं चुम्बते हस्तपद्मे।।
कुवलयशतशीतैर्भूरिकल्हारहृद्यै
स्तव मुहुरपि गात्रस्पर्शनैः संप्रहृष्यन्।
क्षिपति च सुविशाले स्वाङ्कमध्ये भवन्तं

तव मुहुरनुरागान्मूर्ध्नि जिघ्रन्महेशः।।
बालो बालपराक्रमः सुरगणैः संप्रार्थ्यसेऽहर्निशं
गायन्किपुरुषाङ्गनाविरचितैः स्तोत्रै रभिष्टूयसे।
हाहाहूहुकतुम्बुरुप्रभृतिभिस्त्वं गीयसे नारद
स्तोत्रैरद्भुतचेष्टितैः प्रतिदिनं प्रोद्घोषते सामभिः।।
त्वां नमन्ति सुरसिद्धचारणाः
त्वां यजन्ति निखिला द्विजातयः।
त्वां पठन्ति मुनयः पुराविदः
त्वां स्मरन्ति यतयः सनातनाः।।
परं पुराणं गुणिनं महान्तं
हिरण्मयं पुरुषं योगगम्यम्।
यमामनन्त्यात्मभुवं मनीषिणो
विपश्चितं कविमप्यखयं च।।
गणानान्त्वां गणनाथ सुरेन्द्रं
कविं कवीनामतिमेध्यविग्रहम्।
ज्येष्ठराजमृषभं केतुमेकमा
नःश्रृण्वन्नूतिभिः सीद शश्वत्।
नमो नमोनन्तसुखैकदायिने
नमो नमोनन्तसुखैकसिन्धवे।।
नमो नमः शाश्वतशान्ति हेतवे
क्षमा दयापूरित चारु चेतसे।
गजेन्द्ररूपाय गणेश्वराय ते
परस्य पुंसः प्रथमाय सूनवे।।

नमो नमः कारणकारणाय ते

नमो नमो मङ्गलमङ्गलात्मने।

नमो नमो वेदविदां मनीषणाम्

उपासनीयाय नमो नमो नमः।

"श्रीईश्वर उवाच"।।

वैनायकं स्तवं पुण्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुरारोग्यवर्धनम्।।
नृपाणां सततं रक्षा द्विजानां च विशेषतः।
स्तवराज इति ख्यातं सर्वसिद्धिकरं परम्।।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते।
रूपं वीर्यं बलं प्रज्ञां यशश्चायुः समन्वितम्।।
मनीषां सिद्धिमारोग्यं श्रियमप्यक्षयिष्णुताम्।
सर्वलोकाधिपत्यं च सर्वदेवाधिराजताम्।।
प्राप्याष्टगुणमैश्वर्यं प्राप्य भूतिं च शाश्वतीम्।
उद्धृत्या सप्तमं वंशं दुस्तराद्भवसागरात्।।
काञ्चनेन विमानेन शतनागायुतेन च।
विचरत्यखिलांल्लोकान्सशरीरो गणाधिपः।।
मत्प्रियश्च भवेन्मर्त्यः सर्वदेवप्रियः सदा।
प्रियो विनायकस्यापि प्रियोस्माकं विशेषतः।।
सङ्कल्पसिद्धः सर्वज्ञः सर्वभूतहिते रतः।
स्तवराजं जपन्मर्त्यः सुहृद्भिः सह मोदते।।
स्तवराज जपासक्त भावयुक्तस्य धीमतः।
अस्मिञ्जगत्त्रयेप्यस्ति नासाध्यं न च दुष्करम्।।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन स्तवराजं जपेन्नरः।
सकृज्जप्त्वा लभेन्मुक्तिं दुःस्वप्नेषु भयेष्वपि।।
सर्वं तरति पाप्मानं ब्रह्मभूतो भवेन्नरः।
तस्मात्संपूजितो ह्येष धर्मकामार्थसिद्धये।।
स्तवराजमिमं स्तवोत्तमं प्रलपंश्चैव पठन्स्मरन्नपि।
कुरुते शुभकर्म मानवः शुभमभ्येति शुभानि चाश्नुते।।
बहुनात्र किमुक्तेन स्तवराजमिमं जपन्।
सर्वं तद्भद्रमाप्नोति यद्यदिच्छति शाश्वतम्।।
स्तवानामप्यशेषाणां वरिष्ठोयं यतः स्तवः।
स्तवराज इति ख्यातिं सर्वलाकेषु यास्यति।।
श्रीनन्दिकेश्वर उवाच।।
इत्थमेष स्तवः प्रोक्तः प्रशस्तः शम्भुना स्वयम्।
सर्वसिद्धिकरो नृणां सर्वाभीष्टफलप्रदः।।
तस्मादनेन स्तोत्रेण स्तवराजेन मानवः।
स्तवञ्जपन्स्मरन्चापि कुर्वन्निर्वाणमृच्छति।।
एवं ते कथितं ह्येतत्क्रमेण परिपृच्छतः।
विनायकस्य माहात्म्यं प्रतिष्ठार्चनयोर्विधिः।।
प्रशंसा ब्रह्मगायत्र्याः कल्पस्तस्याच शोभनः।
उक्तमेत्परं ब्रह्म किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।
इति विरचयति स्म त्र्यम्बकः स्तोत्रमेतत्
वरमिभवदनस्य स्वामिनोऽत्यादरेण।
गुरुवरचरणाग्रान्मूर्ध्नि कृत्वा वराज्ञां
पठितमिह वरेण्यं घोरविघ्नौघशान्त्यै।।

लाक्षासिन्दूरवर्णं सुरवरनमितं मोदकैर्मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं दिन करसदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम्।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपरशुधरं साखुसिंहासनस्थं
गाङ्गेयं रौद्रमूर्तिं त्रिपुरवधकरं विघ्नभक्षं नमामि।।
नमताशेषविघ्नौघ वारणं वारणाननम्।
कारणं सर्वसिद्धीनां दुरितार्णव तारणम्।।
शङ्कर जगदम्बिकयोरङ्के पङ्केन खेलन्तम्।
लम्बोदरमवलम्बे स्तम्भेर मराजचारुमुखम्।।

इति श्रीभविष्योत्तर उत्तरखण्डे नन्दिकेश्वरसंवादे गणेशस्तवराजः समाप्तः।।

गणेशस्तोत्रम्

ॐ लाक्षासिन्दूरवर्णं सुरवरनमितं मोदकैर्मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं हिमकरसदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम्।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपरशुधरं साखसिंहासनस्थं
गांगेयं रौद्रमूर्तिं त्रिपुरवधकरं विघ्नभक्षं नमामि।।
गौरीपुत्रं त्रिनेत्रं गजमुखसहितं नागयज्ञोपवीतं
पद्माक्षं सर्वभक्षं सकलजनप्रियं सर्वगन्धर्वपूज्यम्।
संपूर्णं भालचन्द्रं वरदमतिबलं हन्तृकं चासुराणां
हेरम्बमादिदेवं गणपतिममलं सिद्धिदातारमीडे।।
यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशकाय।।
गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदन्तं त्रिनेत्रं

बृहदुदरमनन्तं दन्तमाले ददानम्।
परशुचषकपद्म द्वन्द्वहस्तारविन्दं
हरियुगलनिविष्टं श्रीगणेशं भजामि।।
अभयवरदपाणिं लडडुपात्रं सुदन्तं
नरपतिजपमालां नागपाशाङ्कुशं च।
कनकमयविचित्रं मुद्गरं पाणिपद्मे
परशुमपि वहन्तं विघ्नराजं नमामि।।
विघ्नेशं विश्ववन्द्यं सुविपुलयशसं लोकरक्षाप्रदक्षं
साक्षात्सर्वापदासु प्रशमनसुमतिं पार्वतीप्राणसूनुम्।
प्रायः सर्वासुरेन्द्रैः ससुरमुनिगणैः साधकैः पूज्यमानं
कारुण्येनान्तरायामि भयशमनं विघ्नराजं नमामि।।
नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्तधराय च।
नम ईश्वरपुत्राय गणेशाय नमो नमः।
माता यस्य उमादेवी पिता यस्य महेश्वरः।
मूषको वाहनं यस्य स नः पायाद्गणाधिपः।।
वन्दे वराभयपिनाककपालखड्ग
खटवाङ्ग दन्तमुसलाब्जकरं त्रिनेत्रम्।
भीमं जटामुकुटिनं कमलासनस्थं
कश्मीरवासममलं गणराजमाद्यम्।।
रक्ताङ्गरागं परश्वक्षमाला
सुदन्तपाणिं सितलड्डुपात्रम्।
गजाननं सिंहरथाधिरूढं
गणेश्वरं विघ्नहरं नमामि।।

संसिद्ध्यर्थनमत्सुरासुरमिलं मौलिस्थितप्राल्ल सत्
सद्रत्नप्रभवप्रकृष्टविभव प्रेङ्खन्मयूखोज्जवलत्।
श्रेयो विघ्नमहाभयप्रशमने दिव्यं यदेकौषधं
भूयान्नो द्विरदाननाङ्घ्रिकमलद्वन्द्वं तदिष्टाप्तये।।
बिभ्रत्पञ्चमुखानि योयमुदितः स्वातन्त्र्यमात्रात्मना
शक्तेर्वैभवतः परप्रतिहतद्वैताख्यविघ्नव्ययः।
एकीभूतमुखः सकारणगणानुकारिणा तेजसा
देवः संप्रति भासतां मयि यथा तत्वं गणाधीश्वरः।।
हस्तीन्द्राननमिन्दुचूडमरुणच्छायं त्रिनेत्रं रसात्
आश्लिष्टं प्रियया सपद्मकरया स्वाङ्कस्थया सन्ततम्।
द्विचतुर्दशवर्णभूषिताङ्गं मुसलाम्भोजधरं महोपवीतम्।
द्विमृगाधिपगामिनं त्रिनेत्रं हरपुत्रं द्विरदाननं भजेऽहम्।।
जटामुकुटमण्डितं त्रिनयनं भजे षड्भुजं
सतीसरनिवासिनमसुरनाशनं लोहितम्।
वराभयपिनाकिनंत्वसिकपालभृच्छूलिनं
गणैर्वृतगणेश्वरं कमलगं च भीमाकृतिम्।।
गजाननं भूतगणाधि सेवितं
कपित्थजाम्बू फलसार भक्षणम्।
उमापतेः शोकविनाश कारणं
नमामि विश्वेश्वरमाशु सिद्धिदम्।।
लम्बोदरैकवदनः कमलासनस्थ
श्चन्द्रार्धमौलिरमलो भुजगेन्द्रहारः।
भीमोऽष्टबाहुरुदितार्कमरीचिरष्ट

सिद्धिप्रदो भवतु वाञ्छितसिद्धिदो नः।।
योऽभ्यर्चितः सुरगणैर्वरसिद्धिहेतो
श्छेत्तुं भयानि च करे परशुं दधानः।
देवः स शम्भुदयितापरिवर्धित श्रीः
र्विघ्नान्निवारयतु वारणराजवक्त्रः।।
श्रीगणेशाय नमः।।
विभ्रद्दक्षिणहस्तपद्मयुगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे
वामे मोदकपूर्णपात्रपरशू नागोपवीती त्रिदृक्।
श्री मान्सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शङ्खौ वहन्मौलिमा
न्दिश्यादीश्वरपुत्र एष भगवांल्लम्बोदरः शर्म नः।।
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।
गणानामधिपश्चण्डो गजवक्त्रस्त्रिलोचना।
प्रसन्नो भवतानित्यं वरदाता विनायकः।।
सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि गणेशस्य समाहितः।।
यः पठेत्तु शिवोक्तानि स लभेत्सिद्धिमुत्तमाम्।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

ओं।। चिदचित्पदगम्भीरं गमागमपदोज्झितम्।
गहनाकाशसंकाशं वन्दे देवं गणेश्वरम्।।
श्री सनत्कुमार उवाच।।
शङ्कराब्रह्मणा प्राप्तं पद्मयोनेर्मया प्रभोः।
तदहं कीर्तयिष्यामि स्तोत्रं परमदुर्लभम्।।
षष्ठ्यां चतुर्थ्यामष्टम्यां चतुर्दश्यां च भक्तितः।
पूजयेच्च गणाध्यक्षं श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।।
अर्घैः पुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्माल्यैश्च चामरैः।
वस्त्रैः कुण्डलकेयूरैर्मौलिभिश्च वितानकैः।।
गङ्गाह्लदे तु गाङ्गेयं श्रीशैले तु गणेश्वरम्।
वाराणस्यां गजमुखं गयायां टङ्कधारिणम्।।
प्रयागे तु गणाध्यक्षं केदारे विकटाननम्।
लम्बोदरं कुरुक्षेत्रे नैमिषे च मदोत्कटम्।।
जम्बकं दण्डकारण्ये लोकेशं हिमवद्गिरौ।
विष्वक्सेनं च विन्ध्याद्रौ मलये हेमकुम्भकम्।।
नायकं पुष्करद्वीपे विघ्नेशं शल्मलौ स्थितम्।
इलावृते विश्वरूपं हरिवर्षे घटोदरम्।।
त्रिनेत्रं सिंहलद्वीपे श्वेतद्वीपे तु वामनम्।
उज्जयिन्यां तु लम्बोष्ठं मालवे शूर्पकर्णकम्।।
सौराष्ट्रे वरदं नित्यं काश्मीरे भीमरूपिणम्।
सिन्धुसागरयोर्मध्ये विज्ञेयं मन्त्रनायकम्।।
हर्यक्षं यक्षभवने कैलासे परमेश्वरम्।
महोदरं तु लुम्पायां चम्पायां शिखिवाहनम्।।

पाशहस्तं त्रिकूटेषु पूजयेत्सर्वसिद्धिदम्।
बलमग्निगुहायां तु पाटले सिंहवाहनम्।।
पौण्ड्रे रौद्रमुखं चापि कलापिग्रामके जयम्।
मेरुपृष्ठे कामरूपं नन्दनं नन्दने वने।।
विजयं वै गन्धवने देवदारुवने गणम्।
आर्तानां विघ्नहरणं गङ्गासागरसङ्गमे।।
महापथे विरूपाक्षं चित्रसेनं तु पुष्करे।
दुर्जयं यमुनातीरे स्तम्भनं गन्धमादने।।
अम्बरीषं भद्रवटे मोहनं हस्तिनःपुरे।
किष्किन्धायामुग्रकेतुं लङ्कायां तु विभीषणम्।।
कलिङ्गे वरुणं चैव विन्ध्यपादे मदोत्कटम्।
अश्वत्थं च तुरुष्केषु चीनेषु त्रिशिखायुधम्।।
वज्रहस्तं कोसलेषु दाक्षिणात्येषु लोहितम्।
शूलोद्धतकरं चैव मध्यदेशे प्रकीर्तितम्।।
एकदंष्ट्रं पश्चिमाद्रौ पूर्वदेशेऽपराजितम्।
उत्तरे चारुवक्त्रं च वरिष्ठं त्रिपुरेषु च।।
हिरण्यकवचं चैव गिरिसन्धिषु संस्थितम्।
सुमुखं नागरन्ध्रेषु नर्मदायां च षड्भुजम्।।
मायापुर्यामहामायं भद्रकर्णह्रदे शिवम्।
गोकर्णे गजकर्णं च कान्यकुब्जे वराननम्।।
पद्मासनं कामरूपे श्रीमुखं सर्वतः स्थितम्।
वेदवेदाङ्गशास्त्रेषु चिन्तयेद्गणनायकम्।।
अष्टाषष्टिस्तु नामानि स्तुतान्यद्भुतकर्मणः।

नित्यं प्रभातकाले तु चिन्तयेत्सर्वसिद्धिदम्।।
एतत्स्तोत्रं पवित्रं तु मङ्गलं पापनाशनम्।
शस्त्रखर्वोद वेताल यक्षरक्षो भयापहम्।।
चौरारण्य भयव्याघ्र व्याधिदुर्भिक्ष नाशनम्।
कृत्यादिमायाशमनं सर्वशत्रुविमर्दनम्।।
त्रिसन्ध्यं यः पठेदेतत्स भवेत्सर्वसिद्धिभा।
गणेश्वरप्रसादेन लभते शाङ्करं पदम्।।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धरी।
मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
अंध्न को आंख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

शंकर पूजन

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुए पढ़ें:-

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।
यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ।भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय महादेवाय भीमायदेवाय ईशानायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय जलं समर्पयामि नमः।

नेत्र स्पर्श करते हुए पढ़ें:- तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवायदेवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्शं परिगृहणामि नमः।

तिलक लगाते हुये पढ़ें:- सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासन सुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोप शोभितम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः। ठाकुर

फूल चढ़ाते हुए पढ़ें:- सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि गृहाण मे। भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय

पुष्पं समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कपूर चढ़ाते हुए पढ़ें:- हिरण्यबाहो सेनानीः औषधीनां पते शिव। दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुए निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें-

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधि स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत् यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।
पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि,
धूपो गुरु र्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि,
पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीवः ।।2।।
जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि,
माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतु।
किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्,
मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते ।।3।।

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषं,
चिन्मयम्- एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्-

तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे ।।1।।
त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं,
भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या,
त्वं च महेश सदैव ममात्मा,
स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।।2।।
स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे,
तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति।
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह,
त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु ।।3।।
अन्तक मां प्रति मा दृशम्-एनां,
क्रोध-कराल-तमां विदधीहि।
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो,
भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि।।4।।
इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्,
दीधिति-दारित- भूरि-तमिस्रः।
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचैः,
नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।5।।
प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि,
प्रोक्षित-विश्व- पदार्थ-सतत्वः।
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे,
त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि ।।6।।
मानस-गोचरम्-एति-यदैव,
क्लेश-तनु-ताप- विधात्री।
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद,
स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।।7।।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत-दान,
स्नान-तपो-भव- ताप-विनाशि।
तावक-शास्त्र-परामृत-चिन्ता,
सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा।।8।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं,
संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं,
दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम्।।9।।
वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां,
अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्।
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं,
शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।।10।।

शिव संकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं,
तदु सुप्तस्य तथैव्-ऐति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं,
तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।1।।
येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो,
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां,
तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु ।।2।।
यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च,
यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।

यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते,
तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु ।।3।।
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्,
परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता,
तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।4।।
यस्मिन्-ऋचः साम यजूँषि यस्मिन्,
प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां,
तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।5।।
सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव यन्मनुष्यान्,
नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनः इव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं,
तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।।6।।

शिवाष्टकम्

शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं,
ध्यान स्थितं धरणिभृत्-तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं,
श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि।।
गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि,
पद्मोद्-भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति यं यमिनम्-इन्दु-कलावतं सं,

सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।
त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरंच,
भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं,
विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।
नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण,
प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्तदेव।
भक्त्या सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति,
यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।
भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं,
भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं,
तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।
येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां,
नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शैव धाम,
त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।
पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं,
सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश-वशादवाप्ताः,
तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।
अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न,
नो भक्तवत्सल कृतं तव किंचिदन्यत्।

वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि,
मामू पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव,
निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्,
जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।।
कर्पूर-गौरं करुणावतारं,
संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं,
भवं भवानी सहितं नमामि।।
हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ।
शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।
तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर,
यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं, व्याधीनां मूलकृन्तनम्,
उपद्रवाणां दलनं, महादेवम्-उपास्महे।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयो-पभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।
संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यत्यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम्।।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिः सुरार्चित लिंगं,
निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ।।1।।
देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं,
कामदहं करुणाकर-लिंगम्।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।2।।
सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं,
बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।
सिद्ध-सुरासर-वंदित-लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।3।।
कनक-महामणि-भूषित-लिंगं,
फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।4।।
कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं,
पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगं,
तत्प्रणमामि-सदाशिव लिंगम् ।।5।।
देव-गणार्चित सेवित लिंगम्,
भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।

दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम्,

तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।।6।।

अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं,

सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।

अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगम्,

तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।।7।।

सुरगुरु-सुरवर-पूजित-लिंगम्,

सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।

परात्परं-परमात्मक-लिंगम्,

तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।8।।

शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्धय-हंकार-चित्तानि नाहं,

न च श्रोत्र-जिह्वे न च घ्राण-नेत्रे।

न च व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायुः,

चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।

न च प्राण-संज्ञो न वै पंचवायुः,

न-वा सप्त-धतु-र्न वा पंचकोशः।

न वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायुः,

चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ,

मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भावः।

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः,

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोहम्।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं,
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः,
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो,
लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय,
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय,
तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय।1।
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय,
नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय,
तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय।2।
शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द,
सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय,

तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय।3।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य,

मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय,

तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय।4।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय,

पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय,

तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय।5।

पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।

शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिव षडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।1।

नमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।

नरा नमन्ति देवेश 'न'काराय नमो नमः।2।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।

महापापहरं देवं 'म'काराय नमो नमः।3।

शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।

शिवमेकपदं नित्यं 'शि'काराय नमो नमः।4।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं 'व'काराय नमो नमः।5।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां 'य'काराय नमो नमः।6।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।7।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं,
विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं,
चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।
निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं,
गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
रालं-महाकाल-कालं-कृपालं,
गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं-गम्भीरं,
मनो-भूत-कोटि-प्रभाश्री-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलि-कल्लोलिनी-चारु-गङ्गा,
लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-भ्रू सुनेत्रं-विशालं

प्रसन्नाननं- नीलकण्ठं-दयालम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं,
प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं,
अखण्डं-अजं-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
यः-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं,
भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी,
सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहाप-हारी,
प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं,
भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं,
प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जपं-नैव-पूजां,
नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।
जरा-जन्म दुखौघ तातप्यमानं,
प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।
रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

शिव स्तुतिः

असित गिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवर-शाखा-लेखिनी-पत्रम्-ऊर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं,
तदपि तव गुणानाम् ईश पारं न याति।।
वन्दे देवम् उमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत् कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनाम् पतिम्।
वन्दे सूर्य्यशशांक-वह्नि नयनम्-वन्दे मुकुन्द-प्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।
शान्तं पद्मासनस्थं शशधर-मुकुटं, च वक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गपरशुमभयदं, दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितं, सां कुशं वामभागे,
नानालंकार युक्तं स्फटिक-मणिनिभं, पार्वतीशं नमामि।
श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः,
चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि।
पापोऽहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः,
त्राहि मां पार्वती नाथ सर्व पाप हरो भव।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली,
कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।

उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।।1।।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते,
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्,
दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्,
शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर मे हर दुरितम्।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये,
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।
भवसम्भव विविधामय परिपीडित वपुषं,
दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं,
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो,
जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो।

चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय,

शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।

च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा,

च मोक्षदायक गुसोज्य नंगा।

अलक्ष अगोचर छ्‌यपन गुफाये,

शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

बिहिथ छय गौरी च्य़ सूत्य नालय,

वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशाले।

सहस्र सूर्यि तीज च्य मंज़ जटाये,

शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान,

कपाल-माल त्रिशूल धारान।

भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये,

शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ,

धनुर धनन मंज पिनाक चारिथ।

वुदनि बू डंड्‌वथ करय हा माये,

शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवाय दीवो शर्वाय दीवो,

भस्माय दीवो सुरान च्य जीवो।

च्य जीव पूजान छिय भावनाये,

शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

संसार सुदरस, म्य तार तारुम,

अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर,
संसार की दुःख म्य यिम छि, तिम चठ।
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।

भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दय नाव स्वरि,
सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
भावनाइ सान सुस तस पूजा करि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सुलि प्रभातन श्रान ध्यान करि,
गरि गरि हर हर परि लो लो।।
द्वख त संकट तस पान भगवान् हरि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
गृहस्थ आश्रम कुय युस व्रत दरि,
लूक सीवाई प्यठ मरि लो लो।।
निष्काम कर्मन लोला युस बरि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
सन्तोष व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि,
हर सात सुय व्रत दरि लो लो।
सुख त शान्ती हुंद युस हलमा बरि,

सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।
श्वास उश्वासस दय नाव युस स्वरि,
दय सुन्द ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि तथ मंज कारुबारा करि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
पऽछय सीवाय प्यठ पान अर्पण करि,
बेलूस बऽग रावि घरि लो लो।
ड्यक मुचरिथ युस दान धर्मा करि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
हु त ब्ह मशरावि सारिनीय लोल भरि,
लोलुक सोदा करि लो लो।
जीव जाचन सूत लो लुच माय बरि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
काम क्रूध लूभ मोह अहंकार यस खरि,
सत-असत वार सर करि लो लो।
अपजिस दुय करि पजरस लोल बरि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
तरवुन करनोव आलव दिवान तरि,
कंसि मा छु तरुन घर लो लो।
आलुस त्राविथ उद्यूग युस करि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।
प्रथ शायि मंज़ जानुन कुस वास करि,
सोरुय कस मंज! स्वरि लो लो।
बेबस जानिथ देह अद त्याग करि,
सुयहा यमि भवसर तरि लो लो।।

तेरे पूजन को भगवान्

तेरे पूजन को भगवान,
बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया,
किसने भेद तुम्हारा पाया।।
हारे ऋषि-मुनि कर ध्यान,
बना मन मन्दिर आलीशान!
तू ही जल में तू ही थल में,
तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान,
बना मन मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में, तु बुलबुल में,
तू हर डाल के पातन में।
तू हर दिल में है मुर्तिमान,
बना मन मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये,
तूने भिक्षुक राज बिठाये।।
तेरी लीला ऐसी महान,
बना मन मन्दिर आलीशान।
झूठे जग की झूठी माया,
मूर्ख इस में क्यों भरमाया।।
कर कुछ जीवन का कल्याण,
बना मन मन्दिर आलीशान।।

श्री शिवप्रातः स्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभ वाहनम म्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग शूल वरदा भयहस्तमीशं
संसार रोग हरमौषधम द्वितीयम्।।
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्द्ध देहं
सर्गस्थिति प्रलय कारणमादि देवम्।
विश्वेश्वरं विजित विश्वमनोऽभिरामं
संसार रोगहरमौषधम द्वितीयम्।।
प्रातर्भजामि शिवमेकम नन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादि भेद रहितं च विकार शून्यं
संसार रोग हरमौषधम द्वितीयम्।।
प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य
श्लोक त्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजातं बहु जन्म सञ्चितं
हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः।।

शिव मानस पूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्कबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभोस्वीकुरु।।
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

शम्भुस्तुतिः

नमामि शम्भुं पुरुषं पुराणं, नमामि सर्वज्ञमपारभावम्।
नमामि रुद्रं प्रभुमक्षयं तं, नमामि शर्वं शिरसा नमामि।।
नमामि देवं परमव्ययं तं, उमापतिं लोकगुरुं नमामि।
नमामि दारिद्र्यविदारणं तं, नमामि रोगापहरं नमामि।।

नमामि कल्याणमचिन्त्यरूपं, नमामि विश्वोद्भवबीजरूपम्।
नमामि विश्वस्थितिकारणं तं, नमामि संहारकरं नमामि।।
नमामि गौरीप्रियमव्ययं तं, नमामि नित्यं क्षरमक्षरं तम्।
नमामि चिद्रूपममेयभावं, त्रिलोचनं तं शिरसा नमामि।।
नमामि कारुण्यकरं भवस्य, भयंकरं वाऽपि सदा नमामि।
नमामि दातारमभीप्सितानां, नमामि सोमेशमुमेशमादौ।।
नमामि वेदत्रयलोचनं तं, नमामि मूर्तित्रयवर्जितं तम्।
नमामि पुण्यं सदसद्व्यतीतं, नमामि तं पापहरं नमामि।।
नमामि विश्वस्य हिते रतं तं, नमामि रूपाणि बहूनि धत्ते।
यो विश्वगोप्ता सदसत्प्रणेता, नमामि तं विश्वपतिं नमामि।।
यज्ञेश्वरं सम्प्रति हव्यकव्यं, तथागतिं लोकसदाशिवो यः।
आराधितो यश्च ददाति सर्वं, नमामि दानप्रियमिष्टदेवम्।।
नमामि सोमेश्वरमस्वतन्त्रं, उमापतिं तं विजयं नमामि।
नमामि विघ्नेश्वरनन्दिनाथं, पुत्रप्रियं तं शिरसा नमामि।।
नमामि देवं भवदुःखशोक, विनाशनं चन्द्रधरं नमामि।
नमामि गङ्गाधरमीशमीड्यं, उमाधवं देववरं नमामि।।
नमाम्यजादीशपुरन्दरादि, सुरासुरैरर्चितपादपद्मम्।
नमामि देवीमुखवादनामी, क्षार्थमक्षित्रितयं य ऐच्छत्।।
पञ्चामृतैर्गन्धसुधूपदीपै, र्विचित्रपुष्पैर्विविधैश्च मन्त्रैः।
अन्नप्रकारैः सकलोपचारैः, सम्पूजितं सोममहं नमामि।।

वन्दे शिवं शंकरम्

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे सर्वजगद्विहारमतुलं वन्देऽन्धकध्वंसिनं
वन्दे देवशिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम्।
वन्दे नागभुजङ्गभूषणधरं वन्दे शिवं चिन्मयं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे दिव्यमचिन्त्तमद्वयमहं वन्देऽर्कदर्पापहं
वन्दे निर्मलमादिमूलमनिशं वन्दे मखध्वंसिनम्।
वन्दे सत्यमनन्तमाद्यमभयं वन्देऽतिशान्ताकृतिं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे भूरथमम्बुजाक्षविशिखं वन्दे श्रुतित्रोटकं
वन्दे शैलशरासनं फणिगुणं वन्देऽधितूणीरकम्।
वन्दे पद्मजसारथिं पुरहरं वन्दे महाभैरवं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे पञ्चमुखम्बुजं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं चन्द्रार्धगङ्गाधरम्।
वन्दे भस्मकृतत्रिपुण्ड्रजटिलं वन्देष्टमूर्त्यात्मकं

वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जटिं
वन्दे सर्वगतं दयामृतनिधिं वन्दे नृसिंहापहम्।
वन्दे विप्रसुरार्चिताङ्घ्रिकमलं वन्दे भगाक्षापहं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे मङ्गलराजताद्रिनिलयं वन्दे सुराधीश्वरं
वन्दे शङ्करमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्वेषिणम्।
वन्दे कुण्डलिराजकुण्डलधरं वन्दे सहस्रानन
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे हंसमतीन्द्रियं स्मरहरं वन्दे विरूपेक्षणं
वन्दे भूतगणेशमव्ययमहं वन्देऽर्थराज्यप्रदम्।
वन्दे सुन्दरसौरभेयगमनं वन्दे त्रिशूलायुधं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।
वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाद्यमभयं वन्देऽन्धकारापहं
वन्दे फूलननन्दिभृङ्गिविनतं वन्दे सुपर्णावृतम्।
वन्दे शैलसुतार्धभागवपुषं वन्देऽभयं त्र्यम्बकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।
वन्दे पावनमम्बरात्म विभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयामरतरुं वन्दे नताभीष्टदम्।
वन्दे जह्नुसुताम्बिकेशमनिशं वन्दे गणाधीश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।

शिवस्तोत्रम्

ॐ विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय
ज्ञानप्रदाय करुणामृत सागराय
कर्पूरकुन्द धवलेन्दु जटाधराय
दारिद्य्र दुःख दहनाय नमः शिवाय।।

गौरीप्रियाय निशिराज कलाधराय
लोकान्तकाय भुजगाधिप कङ्कणाय।
गङ्गाधराय जलदानव मर्दनाय
दारिद्य्र दुःख दहनाय नमः शिवाय।।

भानु प्रियाय भवसागर नाशनाय
कामान्तकाय कमलाप्रिय पूजिताय।
नेत्र त्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय
दारिद्य्र दुःख दहनाय नमः शिवाय।।

पञ्चाननाय फणि राजविभूषणाय
स्वर्गापवर्ग फलदाय विभूतिदाय।
हैमांशुकाय भवन त्रय वन्दिताय
दारिद्य्र दुःख दहनाय नमः शिवाय।।

भक्ति प्रियाय भव रोग भया पहाय
दिव्याय दिव्य वसनाय गुणार्णवाय
तेजो मयाय सकलार्थ दसंस्थिताय
दारिद्य्र दुःख दहनाय नमः शिवाय।।

रामप्रियाय रघुनाथ वर प्रदाय
नाथप्रियाय नगराज सुताप्रियाय।

पुण्याय पुण्य चरिताय सुरार्चिताय
दारिद्र्य दुःख दहनाय नमः शिवाय।।
चर्माम्बराय चितिभस्म विलेपनाय
भालेक्षणाय मणिकुण्डल मण्डिताय।
मञ्जीरपाद युगलाय वृषध्वजाय
दारिद्र्य दुःख दहनाय नमः शिवाय।।
मुक्ताय यज्ञफलदाय गणेश्वराय
गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय।
मातङ्गचर्म वसनाय महेश्वराय
दारिद्र्य दुःख दहनाय नमः शिवाय।।
वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिकृन्तनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां हत्याकोटिविनाशनम्
ब्रह्मघ्नो वा सुरापोवा स्त्रीहन्तागुरुतल्पगः।
यः पठेच्छिवसान्निध्यं शिव सायुज्यमाप्नुयात्।।
इति वसिष्ठकृतं शिवस्तोत्रम्।

ॐ **नमः शिवाय**

उत्पलदेवकृतं संग्रहस्तोत्रम्

संग्रहेण सुखदुःखलक्षणां
मां प्रति स्थितमिदं शृणु प्रभो!
सौख्यमेष भवता समागमः
स्वामिना विरह एव दुःखिता।।
अन्तरप्यतितरामणीयसी
या त्वदप्रथनकालिकास्ति मे।

तामपीश परिमृज्य सर्वतः
स्वं स्वरूपममलं प्रकाशय।।
तावके वपुषि विश्वनिर्भरे
चित्सुधारसमये निरत्यये।
तिष्ठतः सततमर्चतः प्रभुं
जीवितं मृतमथान्यदस्तु मे।।
ईश्वरोऽहमहमेव रूपवान्
पण्डितोऽस्मि सुभगोऽस्मि कोऽपरः।
मत्समोऽस्ति जगतीति शोभते
मानिता त्वदनुरागिणाः परम्।।
देवदेव भवदद्वयामृता
ख्यातिसंहरणलब्धजन्मना।
तद्यथास्थितपदार्थसंविदा
मां कुरुष्व चरणार्चनोचितम्।।
ध्यायते तदनु दृश्यते ततः
स्पृश्यते च परमेश्वरः स्वयम्।
यत्र पूजनमहोत्सवः स मे
सर्वदास्तु भवतोऽनुभावतः।।
यद्यथास्थितपदार्थदर्शनं
युष्मदर्चन महोत्सवश्च यः
युग्ममेतदितरेतराश्रयं
भक्तिशालिषु सदा विजृम्भते।।
तत्तदिन्द्रियमुखेन सन्ततं

युष्मददर्चनरसायनासवम्।
सर्वभावचषकेषु पूरिते
ष्वापिबन्नपि भवेयमुन्मदः।।
अन्यवेद्यमणुमात्रमस्ति न
स्वप्रकाशमखिलं विजृम्भते।
यत्र नाथ भवतः पुरेस्थितिं
तत्र मे कुरु सदा तवार्चितुः।।
दासधाम्नि विनियोजितोऽप्यहं
स्वेच्छयैव परमेश्वर त्वया।
दर्शनेन न किमस्मि पात्रितः
पादसंवहनकर्मणापि वा।।
शक्तिपातसमये विचारणं
प्राप्तमीश न करोषि कर्हिचित्।
अद्य मां प्रति किमागतं यतः
स्वप्रकाशनविधौ विलम्बसे।।
तत्र तत्र विषये बहिर्विभा
त्यन्तरे च परमेश्वरीयुतम्।
त्वां जगत्त्रितयनिर्भरं सदा
लोकयेय निजपाणिपूजितम्।।
स्वामिसौधमभिसन्धिमात्रतो
निर्विबन्धमधिरुह्य सर्वदा।
स्यां प्रसादपरमामृतासवा
पानकेलिपरिलब्धनिर्वृतिः।।

यत्समस्तसुभगार्थवस्तुषु
स्पर्शमात्रविधिना चमत्कृतिम्।
तां समर्पयति तेन ते वपुः
पूजयन्त्यचलभक्तिशालिनः।।
स्फारयस्यखिलमात्मना स्फुरन्
विश्वमामृशसि रूपमामृशन्।
यत्स्वयं निजरसेन घूर्णसे
तत्समुल्लसति भावमण्डलम्।।
योऽविकल्पमिदमर्थमण्डलं
पश्यतीश निखिलं भवद्वपुः।
स्वात्मपक्षपरिपूरिते जग
त्यस्य नित्यसुखिनः कुतो भयम्।।
कण्ठकोणविनिविष्टमीश ते
कालकूटमपि से महामृतम्।
अप्युपात्तममृतं भवद्वपु
र्भेदवृत्ति यदि रोचते न मे।।
त्वत्प्रलापमयरक्तगीतिका
नित्ययुक्तवदनोपशोभितः।
स्यामथापि भवदर्चनक्रिया
प्रेयसीपरिगताशयः सदा।।
ईहितं न बत पारमेश्वरं
श्यक्यते गणयितुं तथा च मे।
दत्तमप्यमृतनिर्भरं वपुः

स्वं न पातुमनुमन्यते तथा।।
त्वामगाधमविकल्पमद्वयं
स्वं स्वरूपमखिलार्थघस्मरम्।
आविशन्नहमुमेश सर्वदा
पूजयेयमभिसंस्तुवीय च।।

पण्डित् शिव कौल कृता
आक्रन्दमानगिरया शिवस्तुतिः

(रोती हुई वाणी में भक्ति-भाव से भगवान शिव की आराधना)

रे चित्त! भीत! चपल! विपुलां विहाय
चिन्तां, समाश्रय पदद्वयमार्तबन्धोः।
आक्रन्दमानगिरया परया च भक्त्या
जन्मादिदुःखशमनमभिप्रार्थयस्व।।
किं त्वं मुधा कथय संसरणाख्यघोरां
गारेषु कातरतयाऽभिपचन् स्थितोऽसि?
दैन्यं विहारय भवदुःखविमुक्तये त्वं
आराधनां कुरु शिवस्य, तथाऽत्र वक्ष्ये।।
हा किं न पश्यसि दृढैरपि पाशजालैः
मां हन्तुमिच्छति पशुमिव कालव्याधः।
कालान्तकारक! महेश्वर! क्वासि, क्वासि?
भीतं न पालयसि किं? जगतां निवासिन्।।
आः किं न उद्धरसि नाथ निमज्जमानं

मोहार्णवेऽतिगहने भवभारक्षिण्णम्?
मा पश्य मत्कुकृतिमप्यतिगर्हितां च
वीक्षस्व स्वां महदनुग्रहशक्तिमेव।।
कष्टं करालदशनो ह्यपि कालव्यालो
दष्टुं महत्तरजवेन प्रधावति माम्।
नष्टुं किमस्य तव शक्तिरपोहितैव
येनातुरं हि उरगाय ह्यु पेक्षसे माम्।।
दग्धुं कुकर्मपवनेन च दीप्यमानः
कालानलोऽयमभितो ह्यचिरात्प्रयाति।
भस्मीकरोत्यहह मां झटिति पिनाकिन्!
शान्तिं नयस्व सुकृपामृतवर्षणेन।।
रुग्नः लुठाम्यवनि भग्नकटीव सर्पः
कंदर्पदर्पहर! मे हरसि न दुःखम्।
को वा परः त्वदपरः वरणर्ह ब्रूहि
यं त्वां विहाय कृपणः शरणं गमिष्ये।।
आर्तोऽस्म्यहं हि विलपामि त्वदङ्घ्रिलग्नः
त्वं तु सुविस्मृतिप्रदौषधिपानमग्नः।
एतत् चरित्रमुभयोरवलोकमानाः
त्वां शीघ्रतोषित! कथं जगति स्तुवन्ति।।
शक्नोसि त्वं यदि न संसृतिदुःखमेतत्
हर्तुं समर्थयसि नार्थिनमुत्तरञ्च।
नार्हामि चेत् तवकृपालवलेशमीश

शीघ्रं बहिष्कुरु तथापि प्रपंचकोशात्।।
याचे न वैश्रवणकोशसमाधिकारं
नो वाऽमरेन्द्रसमतां न दिवि विहारम्।
भोगेच्छयापि भगवन्! न च सार्वभौमं
यच्चिन्तया तव मनः ननु खेदमायात्।।
दीनोऽस्मि कर्मगतिना सरणौ निक्षिप्तः
जन्मजरामरणव्याधिशतैश्वतप्तः।
त्वामर्थयामि गिरिजावर! एतदेव
मामुद्धराशु कृपया ननु कोऽत्र खेदः।।
त्वं चेन्न उद्धरसि मां हरसि न तापं
पापस्य स्वस्य फलमेव तु तद्विजाने।
किंच जनास्तवगुणानुस्मृणे वदेरन्
नैवार्तत्राणकुशलो जटिलो कपाली।।
यच्च त्वया त्रिपुरधानवध्वंसकाले
यच्चान्तकान्तकरणे दहने स्मरस्य!
दिव्यं बलमतुलमीश! प्रदर्शितं तत्
दीनस्य त्राणकरणावसरे क्व यातम्।।
त्वं निर्बलोस्यप्यथवा बलवत्तरोऽसि
कर्त्तुं कृपां त्वमक्षमोस्यथवा क्षमोऽसि।
स्वामिन्! ममासि भवदङ्घ्रियुगं कथञ्चित्
प्राप्तोऽस्मि नाथ! शरणं न तु तं विमुञ्चे।।
स्वामिन्! विनापि विनयेन यदि त्वदग्रे

तीक्ष्णैः पदैः प्रकटयामि च स्वाभिसंधिम्।
लज्जोज्झितत्वमपि तत् भगवन्! क्षमोऽसि
सोढुं भवान् पितुरिवार्भकदुर्वचांसि।।
आक्रन्दनस्तुतिरियं शिवसन्निधाने
भक्त्या तु दीनमनसा पठति पुमान् यः।
तस्य नगेन्द्रतनुजापतिराशुतोषः
दुर्वार दुःखशमनं दयया करोति।।

शिवापराधक्षमापन स्तोत्रम्

आदौ कर्म प्रसङ्गात्कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तघो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद्रु दनपरवशः शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टोऽविवेकः सुतधनयुवति स्वादसौख्ये निषण्णः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमति श्चाधिदैवादितापैः

पापै रोगैवियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषै र्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहन प्रत्यवायाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे
नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनार्तखण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धधूपौ त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।।
नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुम्भके सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।
नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्यावस्थया त्वां विगतकलिमलं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्

इस 'आदित्यहृदय' नामक स्तोत्र का विनियोग एवं न्यासविधि इस प्रकार है।

विनियोग

ॐ अस्य आदित्य हृदय स्तोत्रस्य अगस्त्यऋषिः अनुष्टुप छन्दः, आदित्य हृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेष- विघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ अगस्त्य ऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। आदित्य हृदय भूत ब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुः इत्यादि गायत्री- कीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास

इस स्तोत्र के अङ्गन्यास और करन्यास तीन प्रकार से किये जाते हैं। केवल **प्रणवसे**, गायत्रीमन्त्र से अथवा '**रश्मिमते नमः**' इत्यादि छः नाम-मन्त्रों से। यहाँ नाम-मन्त्रों से किये जाने वाले न्यास का प्रकार बताया जाता है—

ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवने श्वराय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अंगन्यास

ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्। इस प्रकार न्यास करके निम्नाङ्कित मन्त्र से भगवान् सूर्य का ध्यान एवं नमस्कार करना चाहिये—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

तत्पश्चात् 'आदित्यहृदय' स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्।।1।।
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपगम्याब्रवीद्-राममगस्त्यो भगवांस्तदा।।2।।
राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे।।3।।
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ।।4।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोक प्रशमनम आयुर्वर्धनम् उत्तमम् ।।5।।
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुर नमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ।।6।।

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एष देवासुरगणाँ ल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ।।7।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः ।।8।।
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ।।9।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ।।10।।
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्ति र्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ।।11।।
हिरण्यगर्भः शिशिरः तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ।।12।।
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ।।13।।
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ।।14।।
नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ।।15।।
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ।।16।।
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ।।17।।
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ।।18।।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ।।19।।

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ।।20।।
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ।।21।।
नाशयत्येष वै भूतं तमेष सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ।।22।।
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ।।23।।
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ।।24।।
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ।।25।।
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ।।26।।
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ।।27।।
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ।।28।।
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ।।29।।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ।।30।।
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ।।31।।

।। श्रीवाल्मीकीये रामायणे युद्धकाण्डे,
अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्

पुष्प-दन्त उवाच

महिम्नः पारं-ते परम्-विदुषो यद्य-सदृशी
स्तुतिर्-ब्रह्मादीनाम्-अपि तद-वसन्नाः-त्वयि गिरः।
अथा-वाच्यः सर्वः स्वमति-परिणामा-वधि गृणन्।
ममा-प्येष-स्तोत्रे हर ! निर्-अपवादः परिकरः (1)

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्-मनोसयोर्-
अतत्-व्यावृत्त्या यं चकितम्-अभिधते श्रुतिर् अपि।
स कस्य-स्तोतव्यः कतिविध-गुणः कस्य विषयः
पदे-त्वा-र्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः (2)

मधु-स्फीता वाचः परमम्-अमृतं निर्मितवतः
तव ब्रह्मन्-किं वाक्-अपि सुरगुरो-र्विस्मय-पदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुण-कथन-पुण्येन भवतः
पुनामी-त्यर्थेऽस्मिन्-पुर-मथन ! बुद्धि-र्व्यवसिता (3)

तवैश्वर्यं-यत-तत्-जगत-उदय-रक्षा-प्रलय-कृत्
त्रयी-वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण-भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम्-अस्मिन्-वरद रमणीयाम्-अरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः (4)

किम् ईहः किं कायः स खुल किमुपायः त्रिभुवनम्
किम् आधारो धाता सृजति किम्-उपादन-इति च
अतर्क्यै-श्वर्य्ये त्वय्य-नव-सर दुःस्थो-हतधियः
कुतर्कोऽयं कान्-चित्-मुखरयति मोहाय जगतः (5)

अजन्मानो-लोकाः किम्-अवयव-वन्तोपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भव-विधिर्-अनादृत्य भवति।

अनीशो वा कुर्यात् भवुन-जनने कः परिकरो।
यतो मन्दाः-त्वां प्रत्यमरवर ! संशेरत इमे (6)
त्रयी सांख्यं योगः पशुपति-मतं वैष्णवम्-इति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परम्-इदम्-अधः पथ्यम्-इति-च।
रुचीनां वैचित्र्यात्-ऋजु-कुटिल-नाना-पथ जुषाम्
नृणाम्-एको गम्यः-त्वमसि पयसाम्-अर्णव इव (7)
महोक्षः खट्वांगं परशु-रजिनं भस्म फणिनः
कपालं चे ती यत्-तव वरद। तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां ताम्-ऋद्धिं दधति तु भवत्-भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मा रामं विषय-मृग तृष्णा भ्रमयति (8)
ध्रुवं कश्चित्-सर्वं सकलम्-अपरस्त्व-ध्रुवम्-इदं
परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्ते प्ये-तस्मिन्-पुरमथन ! तै र्विस्मित इव
स्तुवन्-जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता (9)
तवै-श्वर्यं यत्नात् यत्-उपरि विरिञ्चो-हरिर्-अधः
परिच्छेतुं यातौ-अनलम्-अनलस्कन्ध-वपुषः।
ततो भक्ति-श्रद्धा-भर-गुरु-गृणत्-भ्यां गिरिश ! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम्-अनुवृत्ति-र्न फलति (10)
अयत्नात्-आसाद्य त्रिभुवनम्-अवैर-व्यतिकरम्
दशास्यो यत्-बाहून-अभृत रण कण्डू-पर-वशान्
शिरः पद्म-श्रेणी-रचित-चरणाम्भोरुह-बलेः
स्थिरायास्त्व्-भक्तेः-त्रिपुर-हर ! विस्फूर्जितम्-इदम् (11)
अमुष्य त्वत्-सेवा-सम्-अधिगत-सारं भुजवनम्
बलात्-कैलासेपि त्वत्-अधि-वसितौ विक्रम-यतः।
अलभ्यः-पाताले-प्यलस-चलितांगुष्ठ-शिरसि

प्रतिष्ठा-त्वयासीत्-ध्रुवम्-उपचितो मुह्यति खलः (12)
यत्-ऋद्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोचैर्-अपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजन-विधेय-त्रिभुवनः।
न तत्-चित्रं तस्मिन् वरि-वसितरि त्वत्-चरणयोः
न कस्या-प्युन्नत्यै भवति शिर-सस्त्वय्य-वनतिः (13)
अकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षय-चकित-देवा-सुर-कृपा
विधेयस्यासीत्-यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियम्-अहो
विकारोपि श्लाघ्यो भुवन-भय-भंग-व्यसनिनः (14)
असिद्धार्था नैव क्वचित्-अपि सदेवा-सुर-नरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्-ईश त्वाम्-इतर-सुर-साधारणम्-अभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः (15)
मही पादाघातात्-व्रजति सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर्-भ्राम्यत्-भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रह-गणम्।
महुर्-द्यौर्-दौस्थ्यं यात्यनि-भृत-जटा-ताडित-तटा
जगत्-रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता (16)
वियत्-व्यापी तारागण-गुणित-फेनोत्-गम-रुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत-लघु-दृष्टः शिरसि ते।
जगत्-द्वीपाकारं जलधि-वलयं तेन कृतमि-
त्येननै-वोन्नेयं धृत-महिम दिव्यं तव वपुः (17)
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिर्-आगेन्द्रो धनु-रथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथ-चरण-पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुर-तृणम्-आडम्बर-विधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु-परतन्त्राः प्रभुधियः (18)

हरिस्ते साहस्रं कमल-बलिम्-आधाय पदयोः
यत्-एकोने तस्मिन्-निजम्-उदहरत्-नेत्र-कमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिम्-असौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर-हर। जागर्ति जगताम् (19)
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां उत्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्धवा दृढपरिकरः कर्मसु जनः (20)
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिर्-अधीशस्तनु-भृताम्
ऋषीणाम्-आर्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः
कृतुभ्रंशस्त्वतः क्रतुफल-विधान-व्यसनिनो
ध्रुवं-कर्तुः श्रद्धा-विधुरम्-अभिचाराय हि मखाः (21)
प्रजानाथं नाथ ! प्रसभम्-अभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहित्-भूतां रिर-मयिषुम्-ऋष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणे-र्यातं दिवम्-अपि सपत्रा-कृतम्-अमुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध-रभसः (22)
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः (23)
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि (24)
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।

यदालोक्याल्हादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् (25)
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि (26)
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् (27)
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते (28)
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः (29)
बहुल-रजसे विश्वो-त्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल-तमसे तत् संहारे-हराय नमोनमः
जनसुख-कृते सत्त्वो-द्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे नि-स्त्रैगुण्ये-शिवाय नमोनमः (30)
कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् (31)

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति (32)
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः (33)
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः (34)
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते (35)
श्री पुष्पदन्त-मुख-पंकज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विष-हरेण हर-प्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपति-र्महेशः (36)
।। इति शुभम् ।।

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा,
ओ३म् हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे,
स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे,
ओ३म् हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे,

स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे,
ओ३म् हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी,
स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी,
ओ३म् हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे,
स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे,
ओ३म् हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल
धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन
कारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका,
ओ३म् हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई
नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

शिवजी की आरती

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
सर्व विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों की वही आत्मा है।
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलावे
न पानी गलावे न मृत्यु मिटावे।
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
अजर और अमर जिस को वेदों ने गाया
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया।
अमर आत्मा है मरण शील काया,
सभी प्राणियों के जो घट में समाया।
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
है तारी से तारों में प्रकाश जिस का,
है चन्द्र व सूर्य में है वास जिस का
वही आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ,

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्ण शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।
यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं।
शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु ।
यद्बल्ये यश्च कौमारे यत् यौवने कृतं मया,
वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मात्तरेषुच।
कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवर्जितं
तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।
तत्रैव गंगा यमुना चवेणी,
गोदावरी सिंधु सरस्वती च,
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र,
यत्रेच्युतोदार कथा प्रसंगा।
नमामि नारायण पादपंकजं

करोमि नारायण पूजनं सदा।
वदामि नारायण नाम निर्मलं,
स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम्।
गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी,
प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः।
यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं,
गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।।
ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्ठः।
केयूरवान-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी
हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः।8।
करार बिन्देन पदारबिन्दं
मुखारबिन्दं विनिवेश्ययन्तं।
अश्वत्थपत्रस्य पुटेशन,
बालं मुकन्दं मनसा स्मारामि।
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे,
गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे।
गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण,
गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते।

विष्णु स्तुतिः

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।

माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे, नहि किम्-अपि स सत्वम्।
तत्-अपि न मुञ्चति माम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।

कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-अष्टादशा-ध्यायिनीम्,
अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्-गीते भव-द्वेषिणीम्।

नमोस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविंदा-यतपत्र-नेत्र।
येन त्वया भारत-तैल-पूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।
प्रपन्न-पारिजाताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नमः।
सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।
वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर-मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।
भीष्मद्रोणतटा जयत्रथ-जला गान्धर-नीलोत्पला,
शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा दुर्योधना-वर्तिनी,
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी कैवर्तके केशवः।
पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं, गीतार्थ-गन्धोत्कटं
नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा, सम्बोधना बोधितम्।
लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः पेपीयमानं मुदा,
भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-प्रध्वंसिनः श्रेयसे।
मूकं करोति वाचालं पंङ्गुं लङ्घयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्चन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अष्टादश श्लोकी गीता

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव,
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।
योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य-सिद्ध्-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्,
इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।
श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः,
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।
यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः,
विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।
युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु,
युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।
अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्,
तत्रो प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।
अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्,
साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।
यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक महेश्वरम्,
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।
मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः,
निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,
ध्यानात्-कर्म-फलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत,
क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।
मां च यो-व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,
स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।
निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा
अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः,
द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञै
गच्छन्त्य मूढाः पदम्-अव्ययं तत्।।
यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।
मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः,
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।
सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्,
यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या।
जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति।
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।
सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्,
सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठति।
कविं पुराणम्-अनुशासितारम्।
अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः।।
सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्।
आदित्यवर्ण तमसः परस्तात्।
उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो
वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।
मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः।।

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।

भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं,
वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं,
धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यत्-अगात्-अरण्यम्।
मायामृगं दयित-येप्सितं-अनुधावत्,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
श्रीमत्-सरोरुह-यवाँकुश-चक्रचाप,
मत्स्या-ङ्कितं नव-विल्लोहित-पल्लवाभम्।।
लक्ष्म्यालयं परममंगलं-आत्मरूपं,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
वृन्दावनान्तरं-अगात्-अनुगोकुलानां,
संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी।
संचिन्तयत्-अगगुरो-मृगपक्षिणां यत्,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणार बिन्दम्।
यत्-गोपिका-विरह-जाग्नि परीतदेहाः,
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच-कुँकम-पङ्कलिप्तं,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य,
मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्,

ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः,
त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्ते,
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।
इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो,
नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य।
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः,
संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज,
उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रौलोक्ये मंगलं कुरु ।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः,
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः ।
मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्,
यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम् ।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च,
जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ।
कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च,
नन्द गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,

त्वमेव सर्वं मम देव देव ।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं,

कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।

श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं,

जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।

अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं,

माधवं, श्रीधरं राधिकाऽराधितम्।

इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं,

देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।।

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे,

रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।

वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने,

कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण,

श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।

अच्युतानन्त हे माध्वाधोक्षज,

द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।।

राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो,

दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।

लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो

गस्त्य-सम्पूजितो- राघवः-पातु-माम्।।

धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां,

केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः।

पूतना कोपकः सूरजा खेलनो,

बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।।

विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं,

प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।

वन्यया मालया शोभितोरः स्थलं,

लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।।

कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भ्राजमा-नानं,

रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयोः।

हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्ज्वलं,

किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।

अच्युतस्याष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं,

प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।

वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं

तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

गोविन्दं भज गोविन्दं

दिनमपि रजनी सायं प्रातः
शिशिर वसन्तौ पुनर् आयातः।
कालः क्रीडति गच्छति-आयु
तदपि न मुञ्चति-आशावायुः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे
नहि नहि रक्षति डुकृञ-करणे।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू
रात्रौ चिबुक-समर्पित जानुः
करतल भिक्षा तरु तल वासः,
तदपि न मुञ्चति-आशा-पाशः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।
यावत्-वित्तोपार्जन-सक्तः
तावत् निज-परिवारो रक्तः।
पश्चात्-धावति-जर्जर-गेहे
वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं, मूढमते।
जटिलो मुण्डी लुञ्चित-केशः,
काषायाम्बर-बहु कृत वेषः।

पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ,
उदर-निमित्तं-बहु कृत वेषः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं, मूढमते।
भगवत्-गीता-किञ्चित्-अधीता,
गङ्गा-जल-लव-कणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा,
तस्य यमः किं कुरुते चर्चा।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं, मूढमते।
अङ्गं गलितं पलितं मुण्ड़ं,
दशनविहीनं-जातं-तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं,
तदपि न मुञ्चति-आशा-पिण्डम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं, मूढमते।
बालः-तावत्-क्रीडा-सक्तः,
तरुणःतावत्-तरुणी-रक्तः।
वृद्धः-तावत्-चिन्ता-मग्नः,
परमे-ब्रह्मणि-कोऽपि-न-लग्नः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं, मूढमते।
पुनरपि-जननं-पुनरपि-मरणं,
पुनरपि-जननी-जठरे-शयनम्।

इह संसारे-खलु-दुस्तारे,
कृपयाऽ पारे-पाहि-मुरारे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।

पुनरपि-रजनी-पुनरपि-दिवसः,
पुनरपि-पक्षः-पुनरपि-मासः।
पुनरपि-अयनं-पुनरपि-वर्षं,
तदपि-न-मुञ्चति-आशा-मर्षम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।

वयसि-गते-कः-कामविकारः,
शुष्के-नीरे-कः-कासारः।
नष्टे-द्रव्ये-कः-परिवारो,
ज्ञाते-तत्त्वे-कः-संसारः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।

नारीस्तन भर-नाभि निवेशं,
मिथ्या-माया-मोहा-वेशम्।
एतत्-मांस-वसादि-विकारं,
मनसि-विचारय-बारम्-बारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,

भज गोविन्दं मूढमते।

कः-त्वं-कोऽहं-कुत-आयातः,

का-मे-जननी-को-मे-तातः।

इति-परि-भावय-सर्वम्-असारं,

विश्वं-त्यक्त्वा-स्वप्न-विचारम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,

भज गोविन्दं मूढमते।

गेयं-गीता-नाम-सहस्रं,

ध्येयं-श्री-पति-रूपं-अजस्रम्।

नेयं-सज्जन-सङ्गे-चितं,

देयं-दीन-जनाय-च-वित्तम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,

भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-जीवो-निवसति-देहे,

कुशलं-तावत्-पृच्छति-गेहे।

गत-वति-वायौ-देहापाये,

भार्या-बिभ्यति-तस्मिन्-काये।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,

भज गोविन्दं मूढमते।

सुखतः-क्रियते-रामा-भोगः,

पश्चात्-हन्त-शरीरे-रोगः।

यद्यपि-लोके-मरणं-शरणं,

तदपि-न-मुञ्चति-पापा-चरणम्
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।
कुरुते-गङ्गा-सागर-गमनं,
व्रत-परि-पालनम्-अथवा-दानम्।
ज्ञान-विहीनः-सर्व मतेन,
मुक्तिः-न-भवति-जन्मशतेन
भज गोविन्दं भज गोविन्दं,
भज गोविन्दं मूढमते।

श्री कृष्ण स्तोत्राणि

गोविन्दाष्टकम्

चिदानन्दाकारं श्रुतिसरससारं समरसं
निराधाराधारं भवजलधिपारं परगुणम्।
रमाग्रीवाहारं व्रजवनविहारं हरनुतं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
महाम्भोधिस्थानं स्थिरचरनिदानं दिविजपं
सुधाधारापानं विहगपतियानं यमरतम्।
मनोज्ञं सुज्ञानं मुनिजननिधानं ध्रुवपदं।
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
धिया धीरैर्ध्येयं श्रवणपुटपेयं यतिवरै
र्महावाक्यैर्ज्ञेयं त्रिभुवनविधेयं विधिपरम्।
मनोमानामेयं सपदि हृदि नेयं नवतनुं।

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
महामायाजालं विमलवनमालं मलहरं
सुभालं गोपालं निहतशिशुपालं शशिमुखम्।
कलातीतं कालं गतिहतमरालं भुररिपुं।
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
नभोबिम्बस्फीतं निगमगणगीतं समगतिं
सुरौघैः सम्प्रीतं दितिजविपरीतं पुरिशयम्।
गिरां मार्गातीतं स्वदितनवनीतं नयकरं।
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
परेशं पद्मेशं शिवकमलजेशं शिवकरं
द्विजेशं देवेशं तनुकुटिलकेशं कलिहरम्।
खगेशं नागेशं निखिलभुवनेशं नगधरं।
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
रमाकान्तं कान्तं भवभयभयान्तं भवसुखं
दुराशान्तं शान्तं निखिलहृदि भान्तं भुवनपम्।
विवादान्तं दान्तं दनुजनिचयान्तं सुचरितं।
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
जगज्ज्येष्ठं श्रेष्ठं सुरपतिकनिष्ठं क्रतुपतिं
बलिष्ठं भूयिष्ठं त्रिभुवनवरिष्ठं वरवहम्।
स्वनिष्ठं धर्मिष्ठं गुरुगुणगरिष्ठं गुरुवरं।
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे।।
गदापाणेरेतद्दुरितदलनं दुःखशमनं
विशुद्धात्मा स्तोत्रं पठति मनुजो यस्तु सततम्।

स भुक्त्वा भोगौघं चिरमिह ततोऽपास्तवृजिनः
परं विष्णोः स्थानं व्रजति खलु वैकुण्ठभुवनम्।।

श्रीराम स्तुतिः

सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।
कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि।
संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।
लक्ष्मो-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।
मन्दार-मालं-वचने रसालं-गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।
वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।
श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।
विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।
लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।
गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्र सततं नमामि।
खले कृतान्तं स्वजने विनीतं-सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।
रोगाणगीतं वचनात्-अतीतं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

श्री हनूमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस विकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि - पुत्र पवन सुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राज काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।

को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
रावण त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ।
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै,
रोग-दोष जाके निकट न झाँकै।
अंजनि पुत्र महा बलदाई,
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे,
सीयारामजी के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे,
आनि सजीवन प्रान उबारे।
पैठि पताल तोरि जमकारे,
अहिरावन की भुजा उखारे।
बायें भुजा असुर दल मारे,
दहिने भुजा संतजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें,
जै जै जै हनुमान उचारें।
कंचन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजना माई।

जो हनुमान जी की आरति गावै।
बसि बैकुंठ परमपद पावै।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई,
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।

श्री राम वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।
नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्गं।
सीता समारोपित वामभागम्।।
पाणौ महासायक चारु चापं।
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

श्री राम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुताबरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जिल-खरदूषणं।।

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एति भाँति गौरि असीम सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

श्री रामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरिषत महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अतंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हिम लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलाला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।

यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

श्री राम चन्द्र स्तुति

नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शील कोमलं

भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं।

निकाम श्याम सुंदरं भवांबुनाथ मन्दरं

प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं।।

प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभोऽप्रमेय वैभवं

निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोक नायकं।

दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनं

मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृंद भंजनं।।

मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं

विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणापहं।

नमामि इंदिरा पतिं सुखाकरं सतां गतिं

भजे सशक्ति सानुजं शची पति प्रियानुजं।।

त्वदंघ्रि मूल ये नराः भजन्ति हीन मत्सराः

पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले।

विविक्त वासिनः सदा भजंति मुक्तये मुदा

निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं।।

तमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं

जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलं।

भजामि भव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं

स्वभक्त कल्प पादपं समं सुसेव्यमन्वहं।।
अनूप रूप भूपतिं नतोऽहमुर्विजा पतिं
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्ज भक्ति देहि मे।
पठंति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं
व्रजंति नात्र संशयं त्वदीय भक्ति संयुताः।।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

रामरक्षास्तोत्रम्

'रामरक्षाकवच' की सिद्धिकी विधि

नवरात्रमें प्रतिदिन नौ दिनों तक ब्राह्म-मुहूर्त में नित्य-कर्म तथा स्नानादि से निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारणकर कुशा के आसन पर बैठ जाइये। भगवान् श्रीराम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्तको एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्र का कम-से-कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ कीजिये। वैसे 'रामरक्षाकवच' कुछ लंबा है, पर इस संक्षिप्त रूप से भी काम चल सकता है। पूर्ण शान्ति और विश्वास से इसका जाप होना चाहिये, यहाँ तक कि यह कण्ठस्थ हो जाय।

विनियोगः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षा-स्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्।।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।।1।।
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।।2।।

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ।।3।।
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ।।4।।
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ।।5।।
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ।।6।।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ।।7।।
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
उरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ।।8।।
जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ।।9।।
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ।।10।।
पाताल-भूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ।।11।।
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।।12।।
जगज्जैत्रेकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यःकण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ।।13।।
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।

अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥14॥
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥15॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभु ॥16॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥17॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥18॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥19॥
संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन् मनोरथान् नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥20॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥21॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥22॥
इत्येतानि जपन् नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥23॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥24॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं।

वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्।।25।।

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।26।।

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम

श्री राम राम भरताग्रज राम राम।

श्री राम राम रणकर्कश राम राम

श्री राम राम शरणं भव राम राम ।।27।।

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि

श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।

श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि

श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ।।28।।

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः

स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।

सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः

नान्यं जाने नैव जाने न जाने ।।29।।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।

पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्।।30।।

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।

कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।31।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।32।।

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।34।।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।

लोकाभिराम श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।35।।
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ।।36।।
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।।37।।
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।38।।

।।इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

गौरी स्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुंजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये।।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां,
गौरीम् अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं,
भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्ब-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्ड़ं, जगत्-अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां,
गौरीम् अम्बां -अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम् अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम्-उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः।
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते,

नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः।।
चितिरूपेण या कृत्स्नम् एतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापिते,
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः,
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।।

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
द्रारिद्र्य-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता।
सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।
सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।
रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा
रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां
त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।
सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी,
गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता,
इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा,
सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारूढ सितम्बर धारी,
स्वर्णकान्ति, शुचि गगन बिहारी।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला,
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई,
सुख उपजल दुख दुरमति खोई।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया,
निराकर की अद्भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई,
तरै सकल संकट सो सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली,
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै,
जो शारद शत मुख गुन गावै।
चार वेद की मातु पुनीता,
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं,

कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै,
आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी,
कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते,
तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे,
जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी,
जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना,
तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा,
तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।
जानत तुमहिं तुमहिं है जाई,
पारस परसि कुधातु सुहाई
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं,
माता तुम सब ठौर समाई।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे,
सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता,
पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी,
तुम सम तेर पालकी भारी।

जा कर कृपा तुम्हारी होई,
ता पर कृपा करे सब कोई।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें,
रोगी रोग रहित है जावें।
दारिद्र मिटै कटै सब पीरा,
नासै दुख हर भव भीरा।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी,
नासै गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें,
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।
भूत पिशाच सबै भय खावें,
यम के दूत निकट नहीं आवें।
जो सधवा सुमिरैं चितलाई,
अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी,
विधवा रहें सत्य व्रत धारी।
जयति जयति जगदम्ब भवानी,
तुम सम और दयालु न दानी।
जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं,
सो साधन को सफल बनावें।
सुमिरन करै सुरुचि बडभागी,
लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता,
सब समर्थ गायत्री माता।

ऋषि मुनि तपस्वी योगी,
आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवें,
सो सो निज वांछित फल पावें।
बल विद्या शील सुभाऊ,
धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना,
जो यह पाठ करै धर ध्याना।
यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय,
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।

दुर्गास्तुति

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे,
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे,
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य,
भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये,
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे,
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला,
समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्दव निस्तारबीजं,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न,
जाताजितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे,
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं,
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

सरस्वती वंदना

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोप-शोभिता।
श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानु लेपना।।

श्वेताक्षी शुक्ल वस्त्रा च श्वेत-चन्दन-चर्चिता।
वरदा सिन्धु-गन्धर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्।
ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते।।
या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्र-सुर-किन्नरैः।
सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती।।

अपराध क्षमा स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।
विधेर्-अज्ञानेन द्रविण विरहेणा लसतया,
विधेयाशक्यत्वात्-तव चरणयो र्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्विचदपि कुमाता न भवति।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया,
मया पञ्चाशीतेर धिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा,
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं,
भवानि त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम्।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभव वाञ्छापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे,
धत्से कृपाम् उचितम् अम्ब परं तवैव।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।
जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।

आरती लक्ष्मी जी

ओ3म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता,
मैया तु ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता,
मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता,
मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता,

मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता,
मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता,
मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता,
ओ3म् जय लक्ष्मी माता।।

गंगा माँ

ओ3म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता,
ओ3म् जय गंगे माता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता,
मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता,
ओ3म् जय गंगे माता।
पुत्र सागर के तारे, सब जग को ज्ञाता,
मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता,
ओ3म् जय गंगे माता।
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता,

मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता,
ओ3म् जय गंगे माता।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता,
मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता,
ओ3म् जय गंगे माता।

गुरु स्तुति :

ॐ ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।
स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्ति
ध्यायं ध्यायं पशुपतिमु माकान्तमन्त निर्षण्णम्।
पायं पायं सपदि परमानन्द पीयूषधारा
भूयोभूयो निजगुरुपदाम्भोजयुग्मं नमामि ।
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये।
श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द विग्रहम्।
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिंदानन्दायते परम्।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।
सर्वदेवस्वरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्व तस्मै श्रीगुरवे नमः।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
ज्ञानमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।
नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्यावतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह।
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे।
सर्वाज्ञान तमोभेद भानवे चिद्धनाय ते।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय परात्मने।
परतन्त्राय भक्ताना भव्यानां भव्यहेतवे।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्।
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
पुरस्तात्पाश्र्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।

इति गुरुस्तुतिः।।

नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम्

सूर्य
ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः,
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडा-हरतु-मे रविः।

चन्द्र
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रःसुधाशनः,
विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः।

भौम
भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा,
वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः।

बुध
उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः,
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः।

गुरु
देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः,
अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।

शुक्र
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः,
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।

शनि
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः,
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।

राहु
महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः,
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी।

केतु
अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्रशः,
उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः।

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना - सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ–ध्यानम्

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्राधरां शुभाम्
वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।
सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्,
प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।
श्री-दुर्गा सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां,
त्रौलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र–उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता,
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।
कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः,
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला,
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी।
मेघ-श्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी,

महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला।
आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया,
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा,
महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदवेता।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी,
श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती।
आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता,
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी,
एतै-र्नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यं सुख-संपत्तिकारकम्,
क्षया-पस्मार कुष्ठादि-ताप - ज्वर-निवारकम्।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का,
स्वामी दुःखविनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
मात-पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ मैं किसकी,

स्वामी शरण पड़ूँ में किसकी।
तुम बिन और ना दूजा आस करूँ में जिसकी,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम-पूरण-परमात्म तुम अन्तर्यामी,
स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता,
स्वामी तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति,
स्वामी तुम सबके प्राणपति।
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे,
स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा में तेरे,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा,
स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा,
ओ३म् जय जगदीश हरे।।

देवीस्तुतिः

ॐ नमो भवान्यै

(कशमीर के श्री धर्माचार्यकृत पञ्चस्तवी से)

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन्व्याधीञ्छमयति सुखानि प्रतनुते।
हठादन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्टविरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते।।
अजानन्तो यान्ति क्षयमवशमन्योन्यकलहै
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्मज्वरभयतमः कौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्।।
मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भेधौमग्नं त्रिगुणलहरीकोटिलुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः! करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्।।
पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी।।
शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयम णिमादिर्गुणगणः।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं

पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति! न वीक्षामह इमे।।
असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्मविलया
द्रते जन्मन्यन्तं गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवा
न्नयेयं त्वत्पूजास्तुतिविरचनेनैव दिवसान्।।
(श्रीमदाद्य शंकराचार्यकृत सौन्दर्यलहरी से)

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ।।
सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटी परिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे।
शिवाकारे मंचे परमशिवपर्यङ्क निलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम्।।
भवानि! त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम्।।
शब्दब्रह्ममयि स्वच्छे देवि त्रिपुरसुन्दरि!
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि।।
नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा।।

न जानामि ध्यानं तव चरणयोः प्रीतिजननं
न जानामि न्यासं मननमपि मातर्न गिरिजे!
तदेतदक्षन्तव्यं न खलु सत्त्वरोषा समुचित
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरु
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्
गतिस्त्वं गतिस्वं त्वमेका भवानि।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रु मध्ये।
शरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानिं।।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रनष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।

प्रातः स्मरणीय स्तोत्र

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

एक श्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम्।
बाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं चैतत्-हि-रामायणम्।

एकश्लोकी भागवत्

आदौ देवकि-देवगर्भ जननं गोपीगृहे-वर्धनम्
माया-पूतनि-जीवितापहरणं गोवर्द्धनो-द्धारणम्
कंस-च्छेदन कौरवादि-हननं कुन्ती सुता-पालनम्।
एतत्-भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्ण-लीलामृतम्।

सप्तर्षि – स्मरणम्

कश्यपो-अत्रिः-भरद्वाजः, विश्वामित्रोऽथ गौतमः
जमदग्नि-र्वसिष्ठश्च सप्त-ते ऋषयः स्मृताः।

सप्तचिर–जीवि स्तुतिः

अश्वत्थामा बलि व्यासः, हनुमान् च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च, सप्त-ते चिरजीविनः

पंचदेवी स्तुतिः

उमा उषा च वैदेही, रमा गंगेति पंचकम्
प्रातर्-एव स्मरेत्-नित्यं घोर-संकट-नाशनम्।।

पंचकन्या स्तुतिः

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक-नाशनम्।

सप्तपुरी स्तुतिः

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिकाः।
पुरी द्वारवती चैव सप्तता मोक्षदायिकाः।।

हकारादि–पञ्चदेव स्तुतिः

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुध्म
पंचकं हं स्मरेत्-नित्यं घोर-संकटनाशनम्

प्रातर्वन्दनीय स्तुतिः

प्रातः काले पिता-माता, ज्येष्ठा-भ्राता तथैवच
आचार्याः स्थाविराः चैव, वन्दनीया दिने दिने।

मातृतीर्थम्

नास्ति मातृसमं तीर्थं पुत्राणां तारणाय च
हितायात्र परत्रार्थं यैस्तु माता प्रपूजिता।

पितृ तीर्थम्

वेदैर्-अपि च किं पुत्र ! पिता येन प्रपूजितः
एष पुत्रस्य वै धर्म-स्तथा तीर्थं नरेष्विह।।

मृतसंजीवनी मंत्र

इस मन्त्र से शिलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है। ॐ हौं जूं सः, ॐ भूभुर्वः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐसुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, ॐ भर्गो देवस्य धीमहि, ॐ

उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौ ॐ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य की उपासना से आरोग्य की प्राप्ति होती है। अतः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें:-

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये-नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ मित्र-रवि-सूर्य-भानु- खग-पुष्प-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य सवित्रार्क -भास्करेभ्यो नमः।

असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि-तृष्टा
रुष्टा तु कामन्-सकलान्-अभीष्टान्।
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम्
त्वाम्-आश्रिता ह्यश्रियतां प्रयान्ति।।

दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

जिस घर में इस मंत्र की गूंज होगी उस घर

में लक्ष्मी, सतबुद्धि श्रद्धा, लज्जा, हर समय विद्यमान रहती है।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः,
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि! विश्वम्।

नवग्रहों के छोटे तथा आसान मन्त्र

"सूर्य" ओ३म् रं रवये नमः।
"चन्द्र" ओ३म् सौं सोमाय नमः।
"भौम" ओ३म् भौं भौमाय नमः।
"बुध" ओ३म् बं बुधाय नमः।
"गुरु" ओ३म् गुं गुरवे नमः।
"शुक्र" ओ३म् शुं शुक्राय नमः।
"शनि" ओ३म् शं शनैश्चराय नमः।
"राहु" ओ३म् राम् राहवे नमः।
"केतु" ओ३म् कें केतवे नमः।

बारह राशियों के मन्त्र

मेषः- ओ३म् ह्रीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायाणाय नमः।
वृषः- ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः।
मिथुनः- ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः।
कर्कः- ओ३म् ह्रीं हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः।
सिंहः- ओ३म क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः।
कन्याः- ओ३म् पीं पीताम्बराय नमः।

तुला:- ओ३म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः।
वृश्चिक:- ओ३म् नारायणाय सूरसिंहाय नमः।
धनु:- ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः।
मकर:- ओ३म् श्रीं-वत्सलाय नमः।
कुम्भ:- ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः।
मीन:- ओ३म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते।

विपित्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त-परित्राण परायणे,
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।

सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र

सर्वाबाधा-विर्निमुक्तो-धन धान्य-समन्विताः
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति-न संशयः।

भय नाश का मन्त्र

सर्वस्वरुपे-सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते
भयेभ्यः त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम् आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्,
रूपं देहि जयं-देहि यशो देहि द्विषो जहि।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे,
रमा-रमण विश्वेश, विद्याम्-आशु प्रयच्छ मे।।

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्र

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें-शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, बुखार मृगी आदि बेहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छींटे दिये जाने से रोग की निवृति होती है:-

मन्त्रः- अ इ उण्। ऋ लृक्। ए ओङ। ऐ औच्। ह य व र ट्। लण्। ञ, म, ङ ण नम्। झ भ ङ् घ ड ध श। ज ब ग ड् - द श। ख फ छठ थ - च ट, तव्। क, प, य्। शष सर्। हल्।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते
देहि से तनयं कृष्ण। त्वाम् - अहं शरणं गतः।

सामूहिक कल्याण मंत्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देव गण शक्तिसमूह मूर्त्या।

तामम्बिकाम खिलदेव महर्षि पूज्यां,
भक्त्या नतः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

शुभ फल की प्राप्ति का मंत्र

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

पाप नाश का मंत्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।

महामारी नाश का मंत्र

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

दारिद्र्यदुःखादिनाश का मंत्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम शेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम् अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

रक्षा पाने का मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

प्रसन्नता प्राप्ति का मंत्र

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वोर्तिहारिणि।
त्रैलोक्य वासिनाम् ईड्ये लोकानां वरदा भव।।

पापनाश तथा भक्ति प्राप्ति का मंत्र

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

मोक्ष प्राप्ति का मंत्र

त्वं वैष्णवी शक्तिर् अनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहित देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

अन्नपूर्णा स्तुतिः

ज्योंही अन्न की थाली आप के सामने आये। तो इस श्लोक का उच्चारण करना चाहिये।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

पुरुष—सूक्तम्

पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्।

ॐ सहस्त्रशीर्षा, पुरुषः सहस्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमिं विश्वतो वृत्वा त्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्।।
पुरुष एवेदं सर्वं यत् भूतं चत् च भव्यम्।
उत्तामृत त्वस्ये शानो, यत् अन्नेनाति रोहति।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायान-च, पुरुषः।
पादोस्य, विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्या मृतं दिबि।।

त्रिपात् ऊर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः।
ततो विश्वं व्याक्रामत् साशना नशने अभि।।
तस्मात् विराड् अजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः।।
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्-अतन्वत।
वसन्तो अस्यासीत्-आज्यं ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषत् आज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्चये।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्मात् यजु तस्मात् अजायत।।
तस्मात्-अश्वा-अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।।
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का उरू पादा उच्यते।।
ब्रह्माणोस्य मुखं-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यत् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।
चन्द्रमः मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखात् इन्द्रश्चाग्निश्च प्राणात् वायुः अजायत।।
नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमि दिंशः श्रोत्रात् तथा लोकान्-अकल्पयन्।।

सप्तास्या सन् परिधयः त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यत् यज्ञं तन्वाना आबध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः।।

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।।
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।।
तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम्।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।

शांतिपाठ

भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः, भर्द्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजत्राः।

स्थिरैरंगैः तष्टुवांसस्तनूभि र्व्यशेम देवहित यदायुः,
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्तिनः तार्क्ष्यो अरिष्टनेमीः स्वस्ति नो बृहस्पतिः
दधातु।।

स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्तां,
न्यायेन मार्गेण महीं महीपाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं,
लोकाः समस्तः सुखिनो भवन्तु।।
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः।।
दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिम् आप्नुयात्।
शान्तिम् उच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।
राजस्वस्ति प्रजास्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च।
यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्राह्मणेषु च ।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियं
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।
शन्नो मित्रः, शं वरुणः, शन्नो भवत्वर्यमा, शन्नो इन्द्रो बृहस्पतिः, शन्नो विष्णुरुरुक्रमः, नमो ब्रह्मणे, नमो वायवे, नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि,

सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु मामवतु वक्तारं, शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।
सह नौ अवतु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्य करवावहै, तेजस्विनाम् अधीतमस्तु माद्विषावहै शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ब्राह्मी–विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप,, सृष्टिस्थिति - संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि- धामासि - अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त-होता वेदिषत् अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्-व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्ग-जहि - षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

ब्राह्मी विद्या

ॐ ॐ ॐ = तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में 'ॐ' का उच्चारण किया गया है, त्रिगुण पुरुष = तुम त्रिगुण पुरुष हो अर्थात् तीन गुणों में तेरा ही निवास है, क्षेत्र चर = शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो,

मोहं = मोह रूपी ग्रन्थि को, **भिन्धि**= **काटो**, **रजस्तमसी** = रजो गुण, तमो गुण रूपी ग्रथियों को काटो, **प्राकृत**= बनावटी, **पाशजालं** = बन्धनों का जाल, **सावरणं** = आवरण सहित, **परिहर** = फैंक दो, **सत्वं ग्रहाण** = तत्व को जान, **पुरुषोत्तमोसि** = तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, **सोम** = चन्द्रमा, **सूर्य** = सूरज, **अनल** = अग्नि, **प्रवर** = तेजोमय रूप, **परमधामन्** = उत्तम स्थान वाले, ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, **स्वरूप** = तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, **सृष्टि स्थिति** = तुम ही सृष्टि को बनाने वाले हो, **संहार कारक** = नाश करने वाले हो, **भ्रू-मध्य-निलय** = भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, **तेजोसि** = तुम तेज रूप हो, **धामासि** = तुम उत्तम धाम वाले हो, **अमृतात्मन्** = तुम अमृत रूप हो, **ॐ तत्सत्** = तुमं सत् रूप हो, **हंस** = तुम स्वयं प्रकाश हो, **शुचिषत्** = तुम निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, **वसुरन्त-रिक्षसत्** = तुम आकाश में रहने वाले वस नाम के देवता हो, **होता** = तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, **वेदिषत्** = तुम ही यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुये अग्नि हो, **अतिथिर्दराणसत्** = तुम ही गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, **नृषत्** = तुम मनुषयों में रहने वाले हो, **वरसत** = तुम देवताओं में रहने वाले हो, **ऋत ऋत्** = तुम सत्य में रहने वाले हो, **व्योम सत्** = तुम आकाश में ओत प्रोत हो, **अब्जः** = तुम जल में उत्पन्न होने वाले रत्न शंक आदि हो, **गोजा** = तुम पर्वतों तथा पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो, **अद्रिजा** = तुम पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी-नाले रूप हो, **ऋतुजा** = तुम सब से महान् और परम सत्य हो, **परम-ब्रह्म-स्वरूप** = तुम परम ब्रह्म स्वरूप हो, **सर्वगत** = तुम सब मे गए हो, **सर्व शक्ते** = तुम सर्व शक्तिमान् हो, **सर्वेश्वर** = तुम सबों के स्वामी हो, **सर्वन्द्रिय** = सब इन्द्रियों से, **ग्रन्थि भेदं कुरु** = आसक्ति छोड़ो, **परमं-पदं** = उस परमपद का, **पर-मार्ग** = उस उत्तम मार्ग का, **परामर्शय** = विचार कर, **ब्रह्म-द्वारं सर** = ब्रह्मद्वार की ओर चल अर्थात् अपने स्वरूप को जान, **कुमार्ग जहि** = अज्ञान के मार्ग को छोड़, **षट-कौशिकं शरीरं** = इस षट् कोशिक शरीर अर्थात् रोम, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य से बने हुये शरीर

को, त्यज = छोड़ो, शुद्धोसि = तुम शुद्ध रूप हो, बुद्धोसि = तुम बुद्धि रूप हो, विमलोसि = तुम निर्मल हो, स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा = अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

सन्ध्या उपासना विधि

सन्ध्या का वास्तविक अर्थ है दिन और रात्रि के मिलने का समय, सांयकाल। शास्त्रों में सन्ध्या के विषय में लिखा है:–

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः।
विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम्॥

अर्थात्: जो नियम पूर्वक प्रतिदिन संध्या करते हैं वे पापरहित हो कर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

संध्योपासना हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है परन्तु समय के साथ साथ संध्योपासना का लोप होता जा रहा है इस को फिर से सुदृढ करने के निमित मैं संक्षिप्त रूप में शास्त्रानुसार संध्या उपासना विधि यहां पर लिख रहा हूँ ताकि हमारे नवयुवक इस को अपना कर अपने ज़ीवन का उद्धार करें तथा अपनी संस्कृति के अंग भूत सन्ध्या उपासना विॣ का प्रचार करें। हमारे पूर्वज दरिया के किनारे सन्ध्या करते थे परन्तु विस्थापन के कारण काश्मीरी पण्डित पूरे विश्व में भिखर गया और ऐसे स्थानो पर गये जहां पर दरिया, नदियां नही है इस कारण आप अपने बाथरूम में भी सून्या कर सकते है (यह शास्त्र की आज्ञा है।)

जब आप स्नान के लिये बाथरूम में नहाने के लिये जायेंगे तो सबसे पहले बायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें– **ॐ नमोस्त्व-नन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्र-पादाक्षि-शिरोरु-बाहवे। सहस्त्र-नाम्ने**

पुरुषाय शाश्वते, सहस्र - कोटी -युगधारिणे नमः। दायाँ पाँव धोते हुये पढ़ें– ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥ अञ्जलि में जल उठा कर पढ़ें– गंगा-प्रयाग-गय नैमिष-पुष्करादि तीर्थानि यानि भुवि सन्ति हरिप्रसादत्। आयान्तु तानि कर पद्म-पुटे मदीये, प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम्। इसी जल से मुँह धोते हुये पढ़ें– तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः। शंस्यो-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। यज्ञोपवीत दोनों हाथों के अँगूठों में रख कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ते हुये धोयें– ॐ भूर्भुवः- स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। यज्ञोपवीत को पहले दायें भुजा में डालते हुये पढ़ें– यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते - र्यत् - सहजं पुरस्तात्। आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु-तेजः, प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके नमस्कार करते हुये पढ़ें– नमो-अग्नये-अप्सुषदे, नम इन्द्राय, नमो वरुणाय, नमो वारुण्यै, नमोऽपां पतये, नमोऽदभ्यः। स्नान करते हुये पढ़ें– ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुर्-आततम् तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्-परमं पदम्॥ माथे पर सात बार पानी छिड़कते हुये पढ़ें– ॐ भूः, ॐ भुवः

ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः, ॐ तपः, ॐ सत्यम्। प्राणायाम तथा उपस्थान करते हुये पढ़ें– ॐ हंसः शुचिषत्-वसुरन्त- रिक्षसत् - होता - वेदिषत् - अतिथि-दुरोण-सत्। नृषत्-वरसत्, ऋत - सत्-व्योमसत्-अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम्। सूर्यदेवता को नमस्कार करते हुये पढ़ें– नमो धर्मनिधानाय, नमः सुकृत साक्षिणे नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः। तर्पण करते हुये पढ़ें– ॐ नमो देवभ्यः यज्ञोपवीत गले में रखते हुये पढ़ें– स्वाहा ऋषिभ्यः, बायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें– स्वधा पितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवित रखकर पढ़ें– आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत्-तृप्यतु तृप्यतु-एवम्-अस्तु। गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण गोविन्द गोविन्द नमो नमोस्तु।

स्नान करके सूर्य भगवान् के ओर नमस्कार करते हुये पढ़ें– ॐ गायत्र्यै नमः, सावित्र्यै नमः, सरस्वत्यै नमः। ॐ प्रणवस्य ऋषि-ब्रह्मा, गायत्रं छन्द एव च। देवोग्नि-व्याहृतिषु चः, विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते व्याहृतयः, पूर्वस्य परमेष्ठिनः, व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च, ब्राह्मम् - अक्षरम् - ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां, दैवतं तु प्रजापतिः। व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च, वायुः

सूर्यश्च देवताः। छन्दश्च व्याहृतीनाम् - एकाक्षराणां - उक्ताख्यं, द्व्यक्षराणां - अत्युक्ताख्यम्। विश्वामित्र ऋषिश्छन्दो, गायत्रं सविता तथा देवतो पनये जप्ये, गायत्र्या योग उच्यते। आवाहयामि गायत्रीं, सर्वपापप्रणाशिनीम्। न-गायत्र्याः परं जप्यं, न व्याहृति-समं हुतम्। आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधो भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता। अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च बृहस्पत्या-प एव च। इन्द्रश्च विश्वे देवाश्च देवताः समुदाहृताः। एवम्-आर्षं छन्दो दैवतं, विनियोगं चानु-स्मृत्य। गायत्र्या शिखां-आबद्ध्य, गायत्र्यैव समन्ततः। आत्मनश्चापः परिक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात्। अपने आप को पानी छिड़क कर अंजलि धारण करते हुये पढ़ें– ॐ ओजोसि सहोसि बलं-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि। विश्वं-असि विश्वायुः सर्वं-असि सर्वायुर्-अभिभूः तीन आचमन एक साथ करते हुये पढ़े :– ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च- मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः। पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यत्-रात्र्या पापं-अकार्षं, मनसा वाचा हस्ताभ्यां, पद्भ्यां-उदरेण शिश्ना। रात्रिस्तत्-अवलुम्पतु, यत् किंचित् दुरितं मयीदम्-अहं-आपोऽमृत-योनौ सूर्य ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा, अब सारे शरीर पर पानी छिड़कते हुये पढ़े– ॐ आपो हिष्ठा

मयोभुव-स्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रस-स्तस्य भाजयते हनः। उशतीर्-इव मातरः। तस्मा-अरंगमाम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः। ॐ शन्नो देवीर् अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर अभिस्रुवन्तु नः। तीन बार आचमन करते हुये पढ़ें– ॐ अन्तः-चरसि-भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार-आपोज्यातिः रसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

उपस्थान करते हुये पढ़ें:– शुक्रियं रुद्रस्य-य उदगात्-पुरस्तात्-महतो अर्णवात् - बिभ्राज - मानः सरिरस्य मध्ये। स माम्-ऋषभो रोहिताक्षः, सूर्यो विपश्चित्-मनसा पुनातु। यत्-ब्रह्मा-वादिष्म तन्मा मा हिंसीत्-सूर्याय बिभ्राजाय वै नमो नमः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर सभी पितरों का तर्पण करके फिर से तर्पण करते हुये पढ़ें:– मातृपक्ष्या-स्तु ये केचित्-ये चान्ये पितृपक्षजाः। गुरु-क्श्वरशुर बन्धूनां ये कुलेष्षु समुद्भवाः, ये प्रेतभावम्- आपन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिता, जलदानेन ते सर्वे लभन्तां तृप्तिम्-उत्तमाम् दायाँ यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करते हुये पढ़ें:– ॐ नमो देवेभ्यः गले में यज्ञोपवीत रख कर स्वाहा ऋषिभ्यः बायाँ यज्ञोपवीत रखकर स्वधापितृभ्यः दायाँ यज्ञोपवीत रखकर पढ़ें:– आब्रह्मस्तम्ब - पर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं। जगत्-तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवम् - अस्तु सूर्य देवता

को नमस्कार करते हुये पढ़ें:– **नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः, शान्तिः पुष्टि-स्तथा तुष्टिः सन्तु मे त्वत्-प्रसादतः, सर्वपाप-प्रशान्तिश्च तीर्थराज नमोस्तुते।**

नोटः– यदि आप पूरी विधि अनुसार सन्ध्या करना चाहते हैं तो आप हमारे कार्यालय द्वारा छपाई हुई 'सन्ध्या' मंगा सकते है।

मुकुन्दमालास्तुतिः ।।

ॐ वन्दे मुकुन्दमरविन्ददलायताक्षं
कुन्देन्दुशङ्खदशनं शिशुगोपवेशम्।
इन्द्रादिदेवगणवन्दितपादपीठं
वृन्दावनालयमहं वसुदेवसूनुम्।। 1

श्री वल्लभेति वरदेति दयापरेति
भक्तप्रियेति भवलुण्ठनकोविदेति।
नाथेति नागशयनेति जगन्निवासे
त्यालापिनं प्रतिदिनं कुरु मां मुकुन्द।। 2

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः।
जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः।। 3

मुकुन्द मूर्ध्ना प्रणिपत्य याचे
भवन्तमे कान्तमियन्तमर्थम्।

अविस्मृतिस्त्वच्चरणारविन्दे
भवेभवे मेस्तु भवत्प्रसादात्।। 4
श्रीमुकुन्दपदाम्भोजमधुनः परमाद्भुतम्।
यत्पायिनो न मुह्यन्ति मुह्यन्ति यदपायिनः।। 5
नाहं वन्दे तव चरणयोर्द्वन्द्वमद्वन्द्वहेतोः
कुम्भीपाकं गुरुमपि हरे तारकं नापनेतुम्।
रम्या रामामृदु तनुलता नन्दने नापि रन्तुं
भावेभावे हृदयभवने भावयेयं भवन्तम्।। 6
नास्था धर्मे न वसुनिचये नैव कामोपभोगे
यद्यद्भव्यं भवतु भगव न्पूर्वकर्मानुरूपम्।
एतत्प्रार्थ्यं मम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेपि
त्वत्पादाम्भो रुहयुगगता निश्चला भक्तिरस्तु।। 7
दिवि वा भुवि वा ममास्तु वासो
नरके वा नरकान्तक प्रकामम्।
अवधीरित शारदार विन्दौ
चरणौ ते मरणेपि चिन्तयामि।।8
सरसिजनयने सशङ्खचक्रे
मुरभिदि मा विरमेह चित्त रन्तुम्।
सुखतरमपरं न जातु जाने
हरिचरणस्मरणामृतेन तुल्यम्।। 9
माभैर्मन्दमनो विचिन्त्य बहुधा यामिश्चिरं यातना
नामी नः प्रभवन्ति पापरिपवः स्वामी ननु श्रीधरः।
आलस्यं व्यपनीय भक्तिसुलभं ध्यायस्व नारायणं

लोकस्य व्यसनापनोदनकरो दासस्य किं न क्षमः।।
भवजलधिमगाधं दुस्तरं निस्तरेयं
कथमहमिति चेतो मास्मगाः कातरत्वम्।
सरसिजदृशि देवे तावकी भक्तिरेका
नरकभिदि निषण्णा तारयिष्यत्यवश्यम्।। 11
तृष्णातोये मदन पवनोद्धूतमोहोर्मिमाले
दारावर्ते तनयसहजग्राहसङ्घकुले च।
संसाराख्ये महति जलधौ मज्जतां नस्त्रिधामन्
पादाम्भोजे वरद भवतो भक्तिनावे प्रसीद।।
पृथ्वी रेणुरणुः पयांसि कणिकाः फल्गुः स्फुलिङ्गो लघु
स्तेजो निःश्वसनं मरुत्तनुतं रन्ध्रं सुसूक्ष्मं नभः।
क्षुद्रा रुद्रपितामहप्रभृतयः कोटाः समस्ताः सुरा
दृष्टे यत्र स तावको विजयते भूमा वधूतावधिः।।
आम्नायाभ्यसितान्यरण्यरुदितं कृच्छ्रव्रतान्यन्वहं
मेघच्छेदफलानि पूर्वविधयः सर्वं हुतं भस्मनि।
तीर्थानामवगाहनानि च गजस्नानं विनायत्पद
द्वन्द्वाम्भोरुहसंस्तुतिं विजयते देवः स नारायणः।।
भवजलधिगतानां द्वन्द्ववाता हतानां
सुतदुहितृ कलत्र त्राणभारा वृतानाम्।
विषमविषयातोये मज्जतामप्लवानां
भवति शरणमेको विष्णुपोतो नराणाम्।।
रजसि निपतितानां मोहजालावृतानां
जननमरणधूली दुर्गतिं सङ्गतानाम्।

शरणमशरणानामेक एवातुराणां
कुशलपथि नियोक्ता चक्रपाणिर्नराणाम्।।
अपराध सहस्त्र सङ्कुलं पतितं भीमभवार्णवोदरे।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु।।
यच्चिन्तितं च मनसा वचसा यदुक्तं
चक्षुः करश्रवणपादविचेष्टितं च।
यद्यन्निशासु दिवसेषु कृतं मयैव
तत्तज्जनार्दन तवार्चनमेव भूयात्।।
मा मे स्त्रीत्वं मा च मे दासभावो
मा मूर्खत्वं मा कुदेशेषु जन्म।
मिथ्यादृष्टिर्मा च मे स्यात्कदाचित्
जातौ जातौ विष्णुभक्तो भवामि।। 19
आनन्द गोविन्द मुकुन्द राम
नारायणानन्त निरामयेति।
वक्तुं समर्थोपि न वक्ति कश्चित्
अहो जनानां व्यसनानि मोक्षे।। 20
क्षीरसागरतरङ्गशीकरा सारतारकतचारु मूर्तये
भोगिभोगशयनीयशायिने माधवाय मधुविद्विषे नमः।।
क्षीरसारम्पनीय शङ्कया स्वीकृतं यदि पलायनं त्वया।
मानसे मम नितान्ततामसे नन्दनन्दन कुतो न लीयसे।।
वात्सल्याद भयप्रदानसमयादार्तार्तिनिर्वापणात्
औदार्यादघशोषणादगणितेश्रेयःपदप्रापणात्।
सेव्यः श्रीपतिरेव सर्वजगतामे कान्ततः साक्षिणः

प्रह्लादश्च विभीषणश्च करिराट्पाञ्चाल्यहल्या ध्रुवः।।
नाथे श्रीपुरुषोत्तमे त्रिजगतामेका धिपे चेतसा
सेव्ये स्वस्य पदस्य दातरि परे नारायणे तिष्ठति
यं कंचित्पुरुषाधमं कतिपय ग्रामेशमल्पार्थदं
सेवायै मृगयामहे नरमहो मूढा वराका वयम्।।
हे लोकाः! शृणुत प्रसूतिमरण व्याधेश्चिकित्सामिमां
योगज्ञाः समुदाहरन्ति मुनयो या याज्ञवल्क्यादयः।
अन्तर्ज्योतिरमेयमेकममृतं कृष्णाख्यमापीयता
तत्पीतं परमौषधं वितनुते निर्वाणमात्यंतिकम्।।
बद्धेनाञ्जलिना नतेन शिरसा गात्रैः सरोमोद्गमैः
कण्ठेन स्वरगद्गदेन नयनोद्गीर्णेन बाष्पाम्बुना।
नित्यं त्वच्चरणारविन्दयुगल ध्या नामृतास्वादिनाम्
अस्माकं सरसीरुहाक्ष! सततं सम्पद्यतां जीवितम्।।
तत्त्वं ब्रुवानाणि परं परस्मादत्

अहो क्षरन्तीव सुधां पदानि।
आवर्तय प्राञ्जलिरस्मि जिह्वे

नामानि नारायणगोचराणि।।
इदं शरीरं परिणामपेशलं

पतत्यवश्यं श्लथसन्धिजर्जरम्।
किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ दुर्मते!

निरामयं कृष्णरसायनं पिब।। 28
श्रीमन्नाम प्रोच्य नारायणाख्यं

के न प्राप्ता वाञ्छितं पापिनोपि।

हा नः पूर्वं वाक् प्रवृत्ता न तस्मिं
स्तेन प्राप्तं गर्भवासादिदुःखम्।। 29
माद्राक्षं क्षीणपुण्यान् क्षणमपि भवतो भक्तिहीनान्पदाब्जे
माश्रौषं श्राव्यबद्धं तव चरितमपास्यान्यदाख्यानजातम्।
मास्प्राक्षं माधव त्वामपि भुवनपतिं चेतसापह्नवानं
माभूवं त्वत्सपर्याव्यतिकररहितो जन्मजन्मान्तरेपि।।
मदन परिहर स्थितिं मदीये मनसि मुकुन्दपदारविन्दधाम्नि।
हरनयनकृशानुना कृशोसि स्मरसि न चक्रपराक्रमं मुरारे।।
दारा वाराकरवरसुता तऽङ्गजोयं विरिञ्चिः
स्तोता वेदस्तव सुरगणो भृत्यवर्गः प्रसादः।
मुक्तिर्मध्ये जगदविकलं तावकी देवकीयं
माता मित्रं बलरिपुसुतस्तत्त्वतोन्यन्न जाने।।
जिह्वे कीर्तय केशवं मुररिपुं चेतो भज श्रीधरं
पाणिद्वन्द्व समर्चयाच्युतकथाः श्रोत्रद्वय त्वं शृणु।
कृष्णं लोकय लोचनद्वय हरे र्गच्छाङ्घ्रियुग्मालयं
जिघ्र घ्राण मुकुन्दपादतुलसीं मूर्धन्नमाधोक्षजम्।।
यत्कृष्णप्रणिपातधूलिधवलं तद्वै शिरः स्याच्छुभं
ते नेत्रे तमसोजिते सुरुचिरे याभ्यां हरिर्दृश्यते।
सा बुद्धिर्नियमै र्यमैश्च विमला या माधवध्यायिनी
सा जिह्वामृतवर्षिण प्रतिपदं या स्तौति नारायणम्।।
भक्तद्वेषभुजङ्गगारुडमणिस्त्रैलोक्यरक्षामणि
गोपीलोचनचातकाम्बुदमणिः सौन्दर्यमुद्रामणिः।
श्रीकान्तामणि-रुक्मिणीघनकुचद्वन्द्वैकभूषामणिः

श्रेयो ध्येयशि खामणिर्दिशतु नो गोपालचूडामणिः।।
शत्रुच्छेदैकमन्त्रं सकलमुपनिषद्वाक्यसम्पूज्यमन्त्रं
संसारोत्तारमन्त्रं समुदिततमसां सङ्गनिर्याणमन्त्रम्।
सर्वैश्वर्यैकमन्त्रं व्यसनभुजगसन्दष्ट सन्त्राणमन्त्रं जिह्वे
श्रीकृष्णमन्त्रं जप जप सततं जन्मसाफल्यमन्त्रम्।।
व्यामोहोद्दलनौषधं मुनिमनोवृत्तिप्रवृत्त्यौषधं
दैत्यानर्थकरौषधं त्रिभुवने सञ्जीवनैकौषधम्।
भक्तार्त्तिप्रशमौषधं भवभयप्रध्वंसि दिव्यौषधं
श्रैयःप्राप्तिकरौषधं पिब मनः श्रीकृष्णनामौषधम्।।
आश्चर्यमेतद्धि मनुष्यलोके
सुधां परित्यज्य विषं पिबन्ति।
नामानि नारायणगोचराणि
त्यक्तान्यवाचः कुहकाः पठन्ति।।
लाटी नेत्रपुटी पयोधरघटी क्रीडाकुटी दोस्तटी
पाटीरद्रुमवर्णनेन कविभिर्मूढैर्दिनं नीयते।
गोविन्देति जनार्दनेति जगतांनाथेति कृष्णेति च
व्याहारैः समयस्तदेकमनसां पुंसां परिक्रामति।।
अयाच्यमक्रेयमयातयाम मऽयाच्यमऽक्षय्यमदुर्भरं मे।
अस्त्येव पाथेयमतिप्रयाणे श्रीकृष्णनामामृतभागधेयम्।।
यस्य प्रियौ श्रुतिधरौ रविलोकगीतौ
मित्रे द्विजन्मपरिवारशिवावभूताम्।
तेनाम्बुजाक्ष चरणाम्बुजषट्पदेन
राज्ञा कृता स्तुतिरियं कुलशेखरेण।। 41

श्रीराज्ञास्तुतिः

ॐ संसारसागरमहं तरितुं सुनौकां
राज्ञीं नमामि शिरसाशिवसुन्दरीं त्वाम्।।
सर्वेश्वरीं सकललोकसुखप्रदात्रीं
त्वामेव देवि सततं शरणं प्रपद्ये।। 1
मातः पयोधरयुगं पिबतु त्वदीयं
नागाननर्तुमुखवत्सलपुत्रयुग्मम्।।
निर्णेजनाम्बुन इह स्पृहयाम्यहं तु
त्वत्पादपद्मयुगलस्य भवाग्निशान्त्यै।। 2
मातस्त्वदीयपरितोष विशेषलब्धे
छत्रे प्रहृष्यतु सदा भगवान्सुरेन्द्रः।।
पीयूषवर्षणकरात्तव देवि पाद
च्छत्राद्विना किमपि राज्ञि न नाम याचे।। 3
मोहाटवीविकट संकटपीडितोऽहं
राज्ञी प्रपन्नपरमार्तिहरा त्वमेका।।
जाज्वल्यतेऽम्ब हृदयार्तिकरो ममान्तः
पापाग्निरेशि शमयैनममास्वरूपे।। 4
आरारटीमि करुणं भवतापतप्तः
प्रोल्लालपीमि पतितो भवदुःखसिन्धौ।।
मोमोर्मि राज्ञि लुठितो भवसर्पदष्ट
स्त्वामन्तरेण शरणं मम कः शरण्ये।। 5
राज्ञि प्रपन्नवरदे सुकृतादपर्णा

त्वामाश्रितोऽस्मि सुचिरात्तु महद्विचित्रम्।।
किं नास्मि भैरवि ऋणैस्त्रिविधैर्विमुक्तः
पाशैरिवोत्कट विषाक्तभुजङ्गमानाम्।। 6
राज्ञि प्रसीद नतसौख्यकरे मृडानि
रुद्राणि रोगहरणे चतुरे प्रसीद।।
शर्वाणि सर्वजनपापहरे प्रसीद
गौरि प्रसीद गुणगौरि शिवे प्रसीद।। 7
कल्याणि राज्ञि जगदीश्वरि विश्वमात
स्त्वामन्तरेण नहि देवि सुखं जनस्य।।
पुत्रस्य दुःखहरणे सततीद्यता द्राक्
मातैव हि स्नुतकुचा नु भवत्यवश्यम्।। 8
राज्यष्टकमिदं पुण्यं यः पठेद्धषपूरितः सोऽत्र द्राक्
प्राप्नुयात्कामान्परलोके च स्वर्गतिम्।। 9

श्री ज्वालामुखी स्तोत्रम्।

ॐ जाज्वल्यमानवपुषा दशदिग्विभागान्
सन्दीपयन्त्य भयपद्म गदावराढ्या।।
सिंहस्थिता शशिकलाभरणा त्रिनेत्रा
ज्वालामुखी हरतु मोहतमः सदा नः ।। 1
आब्रह्मकीट जननीं महिषीं शिवस्य
मुग्धस्मितां प्रलयकोटि रविप्रकाशाम्।।
ज्वालामुखीं कनककुण्डल शोभितांसां
वन्दे पुनः पुनरपीह सहस्रकृत्वः।। 2

देदीप्यमान मुकुट द्युतिभिश्च देवै
दासैरिव द्विगुणितांघ्रि नखप्रदीप्तिम्।।
ज्वालामुखीं सकलमङ्गलमङ्गलां ताम्
अम्बां नतोऽस्म्यखिल दुःखविपत्तिदग्धीम्।। 3
क्षित्यब्हुताश पवनाम्बर सूर्यचन्द्र
यष्ट्राख्य मूर्तिं मलानपि पावयन्तीम।।
ज्वालामुखीं प्रणतकल्पलतां शिवस्य
साम्राज्यशक्तिमतुलां महतीं नमामि।। 4
नौमीश्वरीं त्रिजगतोऽभयदानशौण्डां
ज्वालामहार्यभवजालहरां नमामि।।
मोहान्धकारहरणे विमलेन्दुकान्तिं
देवीं सदा भगवतीं मनसा स्मरामि।। 5
दुष्कर्मवायुभिरितस्तत एव दीप्तैः
पापज्वल ज्जवलन जात शिखाकलापैः।।
दग्धं च जीवयतु मां परितो लुठन्तं
देवी दयार्द्र हृदयामृत पूर्णदृष्ट्या।। 6
ज्वालामुखी ज्वलदनल्प लयाग्निकोटि
रोचिष्मती रविशशि प्रतिभानकर्त्री।।
भक्तस्य भर्गवपुषा भवभर्जनाय
भूयात्सदाभ्युदय दान वदान्यमुख्या।। 7
त्वं चौषधीशमुकुटा ऽहमसाध्यरोग
स्त्वं चित्प्रदीप्तिरहमत्र भवांध्यमग्नः।।
त्वं चाम्ब! कल्पतरुरेवमहं च भिक्षु

ज्वालामुखि प्रकुरु देवि यथोचितं मे।। 8
यद्ध्यानकेसरि समाक्रमणोत्थभीते
र्मर्मव्यथाजनकदु:खशतानि सद्यः।।
गोमायवन्ति परितो भृशकान्दिशीकान
स्मांश्च पालयतु सैव भवाब्धिदु:खात्।। 9
ज्वालामुखि क्षणमपीह विलम्बमम्ब
नार्तो ह्यनर्थपतितः सहते विपन्नः।।
हस्तस्थिता मृतकमण्डलु वारिणैव
मां मूर्च्छितं झटिति जीवय तापतप्तम्।। 10
बाह्यान्ध्यनाशनविधौ रविचन्द्रवह्नि
ज्योतींषि देवि दययाऽजनयः पुरा त्वम्।।
एतत्तु रूपमखिलान्तर मोहरात्रि
ध्वान्ताकारि तव यत्स्फुरतादतोऽन्तः।। 11
मन्ये त्रिधामनयने नयनत्रयं ते
भक्तार्तिनाशननिमित्तविलोकनाय।।
मातः परं यदपि देवि तथाप्यधन्य
स्त्वद्दृष्टिपात रहितोस्म्य हहा हतोऽस्मि।। 12
सत्यं ब्रवीमि शृणु चित्त मदान्ध मूर्ख
मागाः कदापि विषयान्विषमान्विषाक्तान्।।
ईशीमपारकरुणां भवभीतिभेत्रम्
अम्बां भवस्व सततं परसौख्यदात्रीम्।। 13
त्वं मे महेशि जननी परमार्तिहर्त्री
त्वं मे पिता हिततमस्त्वमहेतुबंधुः।। 14

ज्वालां जगज्जनन संहरणस्थितीनां
हेतुं गतिं मुषित लज्जित दुःखितानाम्।।
उन्मोचनां च भवबंधनदुर्गतीनां
त्वां नौमि नौमि शरणं शरणागतानाम्।। 15
ज्वालामुखीस्तवमिमं शृणुयात्पठेद्वा
यः श्रद्धया परमया बहुभक्तियुक्तः।।
भूयात्स दग्धबहुजन्म शतार्जिताऽघो
ऽविघ्नोप्यनेक जननाथित राज्यभूमिः।। 16

श्री शारिका स्तोत्रम्

ॐ अष्टादशै रसिगदादियुतै भुंजैर्या
त्रातुं समस्तभुवनानि विपद्भयेभ्यः।।
जागर्त्यशेषजन दुःखहरा परा सा
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 1
उद्यत्सहस्त्ररविभास्कर दीप्तिदीप्तां
सिंहासनां शशिकलाभरणां त्रिनेत्राम्।।
यां चिन्तयन्ति बहुभक्तिरसार्द्रचित्ताः
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 2
यत्पादयोः सकृदपीह कृतार्चनो ना
भक्त्यान्वितो ह्यनुभवत्य समरप्रभुत्वम्।।
श्री राजराज सखिसौख्य निवासभूमिः
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 3
सौदामनी प्रमदमत्त गजेन्द्रकर्ण

स्थित्या समापि भजते स्थिरतां विभूतिः।।
यत्पादपङ्कज युगाश्रयणात्सदा सा
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 4
यत्कीर्तन श्रवणसं मननोत्थपुण्यं
शक्नोति नो गणयितुं बहुधाप्यनन्तः।।
साऽशेषरोग दलनाय धृतौषधीशा
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 5
श्री मातृकाभिः उपसेवित पादधूल्या
प्रद्युम्नपीठ समवस्थितया ययेश्या।।
कश्मीरदेशजनता परिपाल्यते सा
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 6
यस्याः प्रदक्षिण परिक्रमणा त्सुभक्त्या
पापोऽप्यलं ध्यभवसागर पारमेति।।
सा शोकमोहपरिताप विपत्ति हर्त्री
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 7
मूलालवाल मणिपूरकनाभि पद्मा
हृत्कण्ठशिष्टि मतिवाह्य करन्ध्रमेत्य।।
या मोदते सह शिवेन सहस्रपत्रे
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 8
यस्या अनाहतनिनाद सुधारसेन
स्नातः परात्परसुखानु भवात्प्रहृष्टः।।
जीवंश्च मुक्त इव भाति नरोत्तमः सा
श्री शारिका दिशतु मङ्गलसन्ततिं नः।। 9

यद्देहसंगतिरसेन सुधापरार्ध
धिक्कारकेण विषधारण शक्तियुक्तः।।
श्री नीलकण्ठ इति कीर्तिमवाप शंभुः
श्री शारिका दिशतु मंगलसंततिं नः।। 10
अमे सुरेशि योगीन्द्रामृतपायतत्परे।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 11
कामे कामितकामानां पूरणे पूर्णताप्रदे।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 12
चार्वङ्गि कोटिकन्दर्पलावण्ये विश्वमोहिनि।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 13
टङ्कधारिणि शत्रूणां तिलशो देहखण्डिनि।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 14
तारे निसर्गगम्भीर भवसागर तारिणि।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 15
पार्वति त्रिजगन्मात र्हिमवद्वंशपावने।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 16
यक्षिणीष्टाष्टसिद्धीनां दायिनी देवपूजिते।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 17
सत्त्वादिशबलेऽनन्त ब्रह्माण्डजननीश्वरि।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 18
कलानिधिकला कान्त किरीटकुण्डलोज्ज्वले।।
श्रीशारिके नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागतम्।। 19

इति श्रीशारिकास्तोत्रं समाप्तम्।

श्री शिव चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देउअभय वरदान।।
जय गिरिजापति दीनदयाला।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके
कानन कुण्डल नागफनी के।।
अंग गौर सिर गंग बहाये।
मुण्डमाल तन क्षार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै।
छवि को देखि नाग मुनि मोहै।।
मैना मातु कि हवै दुलारी।
वाम अंग सोहत छवि न्यारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नंदि गणेश सोहैं तहं कैसे।
सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक श्याम और गणराऊ।
या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा।
तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा।।
कियो उपद्रव तारक भारी।
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।।

तुरत षडानन आप पठायउ।
लव निमेष महं मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा।
सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।
सबहिं कृपा करि लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी।
पुरव प्रतिज्ञा तासु पुरारी।।
दानिन महं तुम सम कोई नाहीं।
सेवक स्तुति करत सदाहीं।।
वेद माहि महिमा तब गाई।
अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रकटी उदधि मथन ते ज्वाला।
जरत सुरासुर भए विहाला।।
कीन्ह दया तहं करी सहाई।
नीलकंठ तव नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा।
जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ गोई।
कमल नैन पूजन चहं सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर।
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर।।

जय जय जय अनन्त अविनाशी।
करत कृपा सबके घटवासी।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं।
भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारौं।
यहि अवसर मोहि आन उबारो।।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारो।
संकट ते मोहि आन उबारो।।
मात-पिता भ्राता सब होई।
संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी।
आय हरहु मम संकट भारी।।
धन निर्धन को देत सदाहीं।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं।।
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर को संकट के नाशन।
विघ्न विनाशन मंगल कारन।।
योगी यति मुनि ध्यान लगावें।
नारद सारद शीश नवावें।।
नमो नमो जय नमः शिवाय।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय।।
जो यह पाठ करे मन लाई।

ता पर होत हैं शम्भु सहाई।।
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी।
पाठ करे सो पावनहारी।।
पुत्र होन कर इच्छा कोई।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावै।
ध्यान पूर्वक होम करावै।।
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा।
तन नहिं ताके रहै कलेशा।।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावै।।
जन्म-जन्म के पाप नसावै।
अन्त धाम शिवपुर में पावै।।
कहत अयोध्या आस तुम्हारी।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।
नित्य नेम कर प्रात ही
पाठ करो चालीस।।
तुम मेरी मनोकामना,
पूर्ण करो जगदीस।।
भवानी शंकरौ वन्दे
श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति
सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम्।।

शिव स्तुति

श्री गिरिजापति वंदिकर, चरण मध्य शिरनाय।
कहत अयोध्यादास तुम, मो पर होहु सहाय।।
नंदी की सवारी नाग अंगीकार धारी,
नित संत सुखकारी नीलकंठ त्रिपुरारी हैं।
गले मुण्डमाला धारी, सिर सोहे जटाधारी,
वाम अंग में बिहारी, गिरिजा सुतवारी हैं।।
दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी,
काशीपति मदनारी, कर त्रिशूल चक्रधारी हैं।।
कला उजियारी, लख देव सो निहारी,
यश गावें वेद चारी, सो हमारी रखवारी हैं।।
शम्भु बैठे हैं विशाला भंग पीवें सो निराला,
नित रहें मतवाला अहि अंग पै चढ़ाये हैं।।
गले सोहे मुण्डमाला कर डमरू विशाला,
अरु ओढ़े मृगछाला भस्म अंग में लगाए हैं।।
संग सुरभी सुतशाला, करें भक्त प्रतिपाला,
मृत्यु हरें अकाला, शीश जटा को बढ़ाये हैं।
कहैं रामलला करो मोहि तुम निहाला,
गिरिजापति कसाला जैसे काम को जलाए हैं।।
मारा है जलंधर और त्रिपुर को संहारा जिन,
जारा है काम जाके शीश गंगधारा है।।
धारा है अपार जासु, महिमा है तीनों लोक,
भाल सोहै इन्दु, जाके सुषमा की सारा है।।

सारा अहिबात सब, खायो हलाहल जानि
भक्तन के अधारा जाहि वेदन उचारा है।
चारों हैं भाग जाके, द्वार हैं गिरीश कन्या,
कहत अयोध्या सोई, मालिक हमारा है।।
अष्ट गुरु ज्ञानी जाके, मुख वेदबानी शुभ,
सोहै भवन में भवानी सुख सम्पत्ति लहा करें।
मुण्डल की माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहै,
दासन के दस जाके दारिद दहा करें।।
चारों द्वार बन्दी, जाके द्वारपाल नन्दी
कहत कवि अनन्दी, नर नाहक हा हा करें।
जगत रिसाय, यमराज की कहा बसाय,
शंकर सहाय, तो भयंकर कहा करें।।
गौर शरीर में गौर विराजत,
मौर जटा सिर सोहत जाके
नागन को उपवीत लसै अरु,
भाल विराजत है शशि ताके।।
दान करै पल में फल चारि,
और टारत अंक लिखे विधना के।
शंकर नाम निःशंक सदा ही,
भरोसे रहैं निशिवासर ताके।।
मंगसर मास हेमन्त ऋतु,
छठा दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्यादास तुम,
शिव के विनय समुद्ध।।

श्री शिवाष्टक

आदि अनादि अनन्त,
अखण्ड अभेद सुवेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेश को,
जोगी जती-मुनि ध्यान न पावैं।।
आगम-निगम-पुरान सबैं,
इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,
सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
सृजन, सुपालन लय लीलाहित,
जो विधि-हरि-हररूप बनावैं।
एकहि आप विचित्र अनेक,
सुवेष बनाइकै लीला रचावैं।।
सुन्दर सृष्टि सुपालन करि,
जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,
सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
अगुन अनीह अनामय अज,
अविकार सहज निज रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन-आभूषण,
सजि मुनि-मोहन रूप करावैं।।
ललित ललाट बाल बिधु विलसै,
रतन-हार उर पै लहरावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,

सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
अंग विभूति रमाय मसान की,
विषमय भुजंगनि कौ लपटावैं।
नर-कपाल कर, मुण्डमाल गल,
भालु-चर्म सब अंग उढ़ावैं।।
घोर दिगम्बर, लोचन तीन,
भयानक देखि कै सब थर्रावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,
सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
सुनतहि दीन की दीन पुकार,
दयानिधि आप उबारन आवैं।
पहुंच तहां अविलम्ब सुदारुन,
मृत्यु को मर्म बिदारि भगावैं।।
मुनि मृकंडु-सुत की गाथा सुचि,
अजहूं विज्ञजन गाइ सुनावैं।
बड़भागी नर-नारी सोई जो,
सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
चाउर चारि जो फूल धतूरे के,
बेल के पात और पानी चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोल जो,
'हर हर महादेव' धुनि जोर लगावैं।।
तिनहिं महाफल देंय सदाशिव,
सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,

सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
बिनसि दोष दुःख दुरित दैन्य,
दारिद्र्यं नित्य सुख-शांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब,
निर्मल बुद्धि-चित्त बकसावैं।।
असरन-सरन काटि भवबन्धन,
भव जिन भवन भव्य बुलवावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,
सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
औढरदानी, उदार अपार जु,
नैकु-सी सेवा तें ढुरि जावैं।
दमन अशांति, समन संकट,
बिरद विचार जनहिं अपनावैं।।
ऐसे कृपालु कृपामय देव के,
क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो,
सांब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।

श्री बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारम्-एकबिल्वं शिवार्पणम्।।
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।।
शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।।
अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।।

शुद्धयन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।।
शालग्रामशिलामेकां विप्राणांजातु अर्पयेत्।।
सोमयज्ञ महापुण्यम्-एकबिल्वं शिवार्पणम्।।
दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
कोटिकन्या महादानम्-एकबिल्वं शिवार्पणम्।।
लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।।
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनंपापनाशनम्।।
अघोरपापसंहारम्-एकबिल्वं शिवार्पणम्।।
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यातो विष्णुरूपिणे।।
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्।।
बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।।

इति श्रीबिल्वाष्टकं संपूर्णम्।।

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो अम्बे दुःख हरनी।।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूं लोक फैली उजियारी।।
शशि ललाट मुख महा विशाला।
नेत्र लाल और भृकुटि विकराला।।
रूप मातु को अधिक सुहावे।

दरश करत जन अति सुख पावे।।
तुम संसार शक्ति लय कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना।।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला।।
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी।।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें।।
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।।
धर्यो रूप नरसिंह को अम्बा।
प्रगट भई फाड़कर खम्बा।।
रक्षा करहिं प्रह्लाद बचायो।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो।।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाही।।
क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा।।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जात बखानी।।
मातंगी अरु धूमावती माता।
भुवनेश्वरी बगला सुखदाता।।

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी।।
केहरी वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी।।
कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै।।
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला।।
नगर कोट में तुम्हीं विराजत।
तिहूं लोक में डंका बाजत।।
शुम्भ-निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे।।
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी।।
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा।।
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब।।
अमर पुरी अरु बासव लोका।
तव महिमा सब रहे अशोका।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर नारी।।
प्रेम भक्ति से जो यश गावे।

दुःख दारिद्र निकट नहि आवे।।
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई।।
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।।
शंकर आचारज तप कीनो।
काम अरु क्रोध जीति सब लीनो।।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।।
शक्ति रूप को मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्ब भवानी।।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।।
आशा तृष्णा निपट सतावै।
मोह मदादिक सब विनशावै।।
शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी।।
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला।।

जब लगि जिऊं दया फल पाऊं।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं।।
दुर्गा चालीसा जो नित गावै।
सब सुख भोग परम पद पावै।।
देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी।।

श्री विंध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्तजनों के काज में, मां करती नहीं विलम्ब।।
जय जय जय विन्ध्याचल रानी।
आदि शक्ति जग विदित भवानी।।
सिंहवाहिनी जय जग माता।
जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता।।
कष्ट निवारिणी जय जग देवी।
जय जय जय असुरासुर सेवी।।
महिमा अमित अपार तुम्हारी।
शेष सहस मुख वर्णत हारी।।
दीनन के दुख हरत भवानी।
नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी।।
सब कर मनसा पुरवत माता।
महिमा अमित जगत विख्याता।।
जो जन ध्यान तुम्हारो लावे।

सो तुरतहि वांछित फल पावे।।
तू ही वैष्णवी तू ही रुद्राणी।
तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी।।
रमा राधिका श्यामा काली।
तू ही मात संतन प्रतिपाली।।
उमा माधवी चण्डी ज्वाला।
वेगि मोहि पर होहु दयाला।।
तू ही हिंगलाज महारानी।
तू ही शीतला अरु विज्ञानी।।
दूर्गा दुर्ग विनाशिनी माता।
तू ही लक्ष्मी जग सुखदाता।।
तू ही जाह्नवी अरु उत्राणी।
हेमावती अम्बे निर्वाणी।।
अष्टभुजी वाराहिनी देवी।
करत विष्णु शिव जाकर सेवी।।
चौसट्ठी देवी कल्याणी।
गौरी मंगला सब गुणखानी।।
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी।
भद्रकाली सुन विनय हमारी।।
वज्रधारिणी शोक विनाशिनी।
आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी।
जया और विजया बैताली।
मातु सुगन्धा अरु विकराली।।

नाम अनन्त तुम्हार भवानी।
बरनै किमि मानुष अज्ञानी।।
जा पर कृपा मातु तव होई।
तो वह करै चहै मन जोई।।
कृपा करहु मो पर महारानी।
सिद्धि करिए अम्बे मम बानी।।
जो नर धरै मातु कर ध्याना।
ताकर सदा होय कल्याना।।
विपत्ति ताहि सपनेहु नहिं आवै।
जो देवी का जाप करावै।।
जो नर कहं ऋण हो अपारा।
सो नर पाठ करै शत वारा।।
निश्चय ऋण मोचन होई जाई।
जो नर पाठ करै मन लाई।।
अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावै।
या जग में सो अति सुख पावै।।
जाको व्याधि सतावै भाई।
जाप करत सब दूरि पराई।।
जो नर अति बन्दी महं होई।
बार हजार पाठकर सोई।।
निश्चय बन्दी ते छुटि जाई।
सत्य वचन मम मानहु भाई।।
जा पर जो कछु संकट होई।

निश्चय देविहिं सुमिरै सोई।।
जो नर पुत्र होय नहिं भाई।
सो नर या विधि करे उपाई।।
पांच वर्ष सो पाठ करावै।
नौरातर में विप्र जिमावै।।
निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी।
पुत्र देहि ता कहं गुणखानी।।
ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै।
विधि समेत पूजन करवावै।।
नित्य प्रति पाठ करै मन लाई।
प्रेम सहित नहिं आन उपाई।।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा।
रंक पढ़त होवे अवनीसा।।
यह जनि अचरज मानहुं भाई।
कृपा दृष्टि ता पर होई जाई।।
जय जय जय जगमातु भवानी।
कृपा करहुं मोहिं पर जन जानी।।

श्री विंध्येश्वरी स्तोत्र

निशुम्भ शुम्भ गर्जनी, प्रचण्ड मुण्ड खण्डिनी।
वनेरणे प्रकाशिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
त्रिशूल मुण्ड धारिणी, धरा विघात हारिणी।
गृहे-गृहे निवासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।

दरिद्र दुःख हारिणी, सदा विभूति कारिणी।
वियोग शोक हारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
लसत्सुलोल लोचन, लतासनं वरप्रदं।
कपाल-शूल धारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
कराब्जदानदाधरां, शिवाशिवां प्रदायिनी।
वरा-वराननांशुभा, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
कपीन्द्र जामिनीप्रदां, त्रिधा स्वरूप धारिणी।
जले-थले निवासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
विशिष्ट शिष्ट कारिणी, विशाल रूप धारिणी।
महोदरे विलासिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।
पुरंदरादि सेवितां, पुरादिवंशखण्डिताम्।
विशुद्ध बुद्धिकारिणी, भजामि विन्ध्यवासिनी।।

श्री विंध्येश्वरीजी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।
पान सुपारी ध्वजा नारियल,
ले तेरी भेंट चढ़ाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।
सुवा चोली तेरे अंग विराजै,
केसर तिलक लगाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।

नंगे पैरों अकबर आया,
सोने का छत्र चढ़ाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।
ऊंचे ऊंचे पर्वत बन्यो दिवालो,
नीचे शहर बसाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।
सतयुग, त्रेता, द्वापर मध्ये,
कलियुग राज सवाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।
धूप दीप नैवेद्य आरती,
मोहन भोग लगाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।
ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावैं,
मनवांछित फल पाया।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया।।

श्री गणेश चालीसा

जय जय जय वंदन भुवन, नंदन गौरिगणेश।
दुख द्वंद्वन फंदन हरन, सुंदर सुवन महेश।।

जयति शंभु सुत गौरी नंदन।
विघ्न हरन नासन भव फंदन।।
जय गणनायक जनसुख दायक।
विश्व विनायक बुद्धि विधायक।।
एक रदन गज बदन विराजत।
वक्रतुंड शुचि शुंड सुसाजत।।
तिलक त्रिपुण्ड भाल शशि सोहत।
छबि लखि सुर नर मुनि मन मोहत।।
उर मणिमाल सरोरुह लोचन।
रत्न मुकुट सिर सोच विमोचन।।
कर कुठार शुचि सुभग त्रिशूलम्।
मोदक भोग सुगंधित फूलम्।।
सुंदर पीताम्बर तन साजित।
चरण पादुका मुनि मन राजित।।
धनि शिव सुवन भुवन सुख दाता।
गौरी ललन षडानन भ्राता।।
ऋद्धि सिद्धि तव चंवर सुढारहिं।
मूषक वाहन सोहित द्वारहिं।।
तव महिमा को बरनै पारा।
जन्म चरित्र विचित्र तुम्हारा।।
एक असुर शिवरूप बनावै।
गौरिहिं छलन हेतु तहं आवै।।
एहि कारण ते श्री शिव प्यारी।

निज तन मैल मूर्ति रचि डारी।।
सो निज सुत करि गृह रखवारे।
द्वारपाल सम तेहिं बैठारे।।
जबहिं स्वयं श्री शिव तहं आए।
बिनु पहिचान जान नहिं पाए।।
पूछ्यो शिव हो किनके लाला।
बोलत भे तुम वचन रसाला।।
मैं हूं गौरी सुत सुनि लीजै।
आगे पग न भवन हित दीजै।।
आवहिं मातु बूझि तब जाओ।
बालक से जनि बात बढ़ाओ।।
चलन चह्यो शिव बचन न मान्यो।
तब ह्वै क्रुद्ध युद्ध तुम ठान्यो।।
तत्क्षण नहिं कछु शंभु बिचार्‍यो।
गहि त्रिशूल भूल वश मार्‍यो।।
शिरिष फूल सम सिर कटि गयउ।
छट उड़ि लोप गगन महं भयउ।।
गयो शंभु जब भवन मंझारी।
जहं बैठी गिरिराज कुमारी।।
पूछे शिव निज मन मुसकाये।
कहहु सती सुत कहं ते जाये।।
खुलिगे भेद कथा सुनि सारी।
गिरी बिकल गिरिराज दुलारी।।

कियो न भल स्वामी अब जाओ।
लाओ शीष जहां से पाओ।।
चल्यो विष्णु संग शिव विज्ञानी।
मिल्यो न सो हस्तिहिं सिर आनी।।
धड़ ऊपर स्थित कर दीन्ह्यो।
प्राण वायु संचालन कीन्ह्यो।।
श्री गणेश तब नाम धरायो।
विद्या बुद्धि अमर वर पायो।।
भे प्रभु प्रथम पूज्य सुखदायक।
विघ्न विनाशक बुद्धि विधायक।।
प्रथमहिं नाम लेत तव जोई।
जग कहं सकल काज सिध होई।।
सुमिरहिं तुमहिं मिलहिं सुख नाना।
बिनु तव कृपा न कहुं कल्याना।।
तुम्हरहिं शाप भयो जग अंकित।
भादौं चौथ चंद्र अकलंकित।।
जबहिं परीक्षा शिव तुहिं लीन्हा।
प्रदक्षिणा पृथ्वी कहि दीन्हा।।
षड्मुख चल्यो मयूर उड़ाई।
बैठि रचे तुम सहज उपाई।।
राम नाम महि पर लिखि अंका।
कीन्ह प्रदक्षिण तजि मन शंका।।
श्री पितु मातु चरण धरि लीन्ह्यो।

ता कहं सात प्रदक्षिण कीन्ह्यो।।
पृथ्वी परिक्रमा फल पायो।
अस लखि सुरन सुमन बरसायो।।
नित्य गजानन जो गुण गावत।
गृह बसि सुमति परम सुख पावत।।
जन धन धान्य सुवन सुखदायक।
देहिं सकल शुभ श्री गणनायक।।
श्री गणेश यह चालिसा, पाठ करै धरि ध्यान।
नित नव मंगल मोद लहि, मिलै जगत सम्मान।।

एकदन्त नामाष्टक स्तोत्रम्

ज्ञानार्थवाचको गंश्च गणश्च निर्वाणवाचकः।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्।।
एक शब्दः प्रधानार्थो दन्तश्च बलवाचकः।
बलं प्रधानं सर्वस्मादेकदन्तं नमाम्यहम्।।
दीनार्थवाचको हेश्च रम्बः पालकवाचकः।।
दीनानां परिपालकं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्।।
विपत्ति वाचको विघ्नो नायकः खण्डनार्थकः।
विपत्खण्डन कारकं नमामि विघ्ननायकम्।।
विष्णुदत्तैश्च नैवेद्यैर्यस्य लम्बोदरं पुरा।
पित्रा दत्तैश्च विविधैर्वन्दे लम्बोदरं च तम्।।
शूर्पाकारौ च यत्कर्णौ विघ्नवारणकारणौ।
सम्पदौ ज्ञान रूपौ च शूर्प कर्णं नमाम्यहम्।।
विष्णु प्रसाद पुष्पं च यन्मूर्ध्नि मुनिदत्तकम्।

तद् गजेन्द्रवक्त्र युक्तं गजवक्त्रं नमाम्यहम।।
गुहस्याग्रे च जातेऽयमाविर्भूतो हरालये।
वन्दे गुहाग्रजं देवं सर्वदेवाग्रपूजितम्।।
एतन्नामाष्टकं दुर्गे नामभिः संयुतं परम्।
पुत्रस्य पश्य वेदे च तदा कोपं यथा कुरू।।
एतन्नामाष्टकं स्तोत्रं नानार्थ संयुतं शुभम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स सुखी सर्वतोजयी।।
ते विध्ना पलायन्ते वैनतेयाद् यथोरगः।
गणेश्वर प्रसादेन महाज्ञानी भवेद् ध्रुवम्।।
पुत्रार्थी लभते पुत्रं भार्यार्थी विपुलं स्त्रियम्।
महाजडो कवीन्द्रश्च विद्यावांश्च भवेद् ध्रुवम्।।

श्री लक्ष्मी चालीसा

।।दोहा।।

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस।।
यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूं।
सवविधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका।।
सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही।
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही।।
तुम समान नहिं कोई उपकारी।
सब विधि पुरवहु आस हमारी।।
जय जय जगत जननि जगदम्बा।

सबकी तुम ही हो अवलम्बा।।
तुम ही हो घट घट की वासी।
विनती यही हमारी खासी।।
जगजननी जय सिन्धु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी।।
विनवौं नित्य तुमहिं महरानी।।
कृपा करौ जग जननि भवानी।
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी।।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
जगजननी विनती सुन मोरी।।
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरो हमारी माता।।
क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो।
चौदह रत्न सिन्धु में पायो।।
चौदह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभु बनि दासी।।
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा।
रूप बदल तहं सेवा कीन्हा।।
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा।।
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं।।

अपनाया तोहि अन्तर्यामी।
विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी।।
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी।
कहं तक महिमा कहौं बखानी।।
मन क्रम वचन करै सेवकाई।
मन इच्छित वांछित फल पाई।।
तजि छल कपट और चतुराई।
पूजहिं विविध भांति मन लाई।।
और हाल मैं कहौं बुझाई।
जो यह पाठ करै मन लाई।।
ताको कोई कष्ट न होई।
मन इच्छित पावै फल सोई।।
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि।
त्रिविध ताप भव बंधन हारिणि।।
जो यह चालीसा पढ़ै पढ़ावै।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।।
ताको कोई न रोग सतावै।
पुत्र आदि धन सम्पति पावै।।
पुत्रहीन अरु संपति हीना।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना।।
विप्र बोलाय कै पाठ करावै।
शंका दिल में कभी न लावै।।
पाठ करावै दिन चालीसा।

ता पर कृपा करैं गौरीसा।।
सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
कमी नहीं काहू की आवै।।
बारह मास कर जा पूजा।
तेहि सम धन्य और नहिं दूजा।।
प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं।
उन सम कोई जग में कहुं नाहीं।।
बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई।।
करि विश्वास करैं व्रत नेमा।
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।।
जय जय जय लक्ष्मी भवानी।
सब में व्यापित हो गुण खानी।।
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं।
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं।।
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै।।
भूल चूक करि क्षमा हमारी।
दर्शन दीजै दशा निहारी।।
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी।
तुमहि अक्षत दुःख सहते भारी।।
नहिं माहिं ज्ञान बुद्धि है तन में।
सब जानत हो अपने मन में।।

रूप चतुर्भुज करके धारण।
कष्ट मोर अब करहु निवारण।।
केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई।
ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई।।

।।दोहा।।

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो वेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु का नाश।।

श्री राम चालीसा

श्री रघुवीर भक्त हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।
निशिदिन ध्यान धरै जो कोई।
ता सम भक्त और नहिं होई।।
ध्यान धरे शिवजी मन माहीं।
ब्रह्मा इन्द्र पार नहिं पाहीं।।
जय जय जय रघुनाथ कृपाला।
सदा करो सन्तन प्रतिपाला।।
दूत तुम्हार वीर हनुमाना।
जासु प्रभाव तिहूं पुर जाना।।
तव भुज दण्ड प्रचण्ड कृपाला।
रावण मारि सुरन प्रतिपाला।।
तुम अनाथ के नाथ गोसाईं।
दीनन के हो सदा सहाई।।
ब्रह्मादिक तव पार न पावैं।

सदा ईश तुम्हरो यश गावैं।।
चारिउ वेद भरत हैं साखी।
तुम भक्तन की लज्जा राखी।।
गुण गावत शारद मन माहीं।
सुरपति ताको पार न पाहीं।।
नाम तुम्हार लेत जो कोई।
ता सम धन्य और नहिं होई।।
राम नाम है अपरम्पारा।
चारिहु वेदन जाहि पुकारा।।
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हो।
तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हो।।
शेष रटत नित नाम तुम्हारा।
महि को भार शीश पर धारा।।
फूल समान रहत सो भारा।
पाव न कोउ तुम्हारो पारा।।
भरत नाम तुम्हरो उर धारो।
तासों कबहुं न रण में हारो।
नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा।
सुमिरत होत शत्रु कर नाशा।।
लखन तुम्हारे आज्ञाकारी।
सदा करत सन्तन रखवारी।।
ताते रण जीते नहिं कोई।
युद्ध जुरे यमहूं किन होई।।

महालक्ष्मी धर अवतारा।
सब विधि करत पाप को छारा।।
सीता राम पुनीता गायो।
भुवनेश्वरी प्रभाव दिखायो।।
घट सों प्रकट भई सो आई।
जाको देखत चन्द्र लजाई।।
सो तुम्हरे नित पांव पलोटत।
नवो निद्धि चरणन में लोटत।।
सिद्धि अठारह मंगलकारी।
सो तुम पर जावै बलिहारी।।
औरहु जो अनेक प्रभुताई।
सो सीतापति तुमहिं बनाई।।
इच्छा ते कोटिन संसारा।
रचत न लागत पल की बारा।।
जो तुम्हरे चरणन चित लावै।
ताकि मुक्ति अवसि हो जावै।।
जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा।
निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा।।
सत्य सत्य जय सत्यव्रत स्वामी।
सत्य सनातन अन्तर्यामी।।
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै।
सो निश्चय चारों फल पावै।।
सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं।

तुमने भक्तिहिं सब विधि दीन्हीं।।
सुनहु राम तुम तात हमारे।
तुमहिं भरत कुल पूज्य प्रचारे।।
तुमहिं देव कुल देव हमारे।
तुम गुरु देव प्राण के प्यारे।।
जो कुछ हो सो तुम ही राजा।
जय जय जय प्रभु राखो लाजा।।
राम आत्मा पोषण हारे।
जय जय दशरथ राज दुलारे।।
ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरूपा।
नमो नमो जय जगपति भूपा।।
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा।
नाम तुम्हार हरत संतापा।।
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया।
बजी दुन्दुभी शंख बजाया।।
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन।
तुम ही हो हमरे तन मन धन।।
याको पाठ करे जो कोई।
ज्ञान प्रकट ताके उर होई।।
आवागमन मिटै तिहि केरा।
सत्य वचन माने शिव मेरा।।
और आस मन में जो होई।
मन वांछित फल पावे सोई।।

तीनहुं काल ध्यान जो ल्यावै।
तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै।।
साग पत्र सो भोग लगावै।
सो नर सकल सिद्धता पावै।।
अन्त समय रघुबरपुर जाई।
जहां जन्म हरि भक्त कहाई।।

दोहा

सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय।
हरिदास हरि कृपा से, अविस भक्ति को पाय।।
राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चित लाय।
जो इच्छा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय।।

श्री कृष्ण चालीसा

दोहा

वंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन स्याम।
अरूण-अधर जंनु बिम्ब फल, नयन कमल अभिराम।।
पूर्ण इन्द्र अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्ण चन्द्र महाराज।।
जय यदुनंदन जय जगवंदन।
जय वसुदेव देवकी नन्दन।।
जय जसुदा सुत नन्द दुलारे।
जय प्रभु, भक्तन के, दृग तारे।।
जय नट-नगर, नाग नथइया।

कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया।।
पुनि नख परप्रभु गिरिवर धारो।
आओ दीनन कष्ट निवारो।।
वंशी मधुर अधर धरि टेरौ।
पूर्ण होये आराधन मेरौ।।
आओ हरि पुनि माखन चाखो।
आज लाज भारत की राखो।।
ललित कपोल, चिबुक अरुणारे।
मृदु मुस्कान मोहनी डारे।।
राजित राजीव नयन विशाला।
मोर मुकुट वैजन्ती माला।।
कुंडल श्रवन, पीत पट आछे।
कटि किंकिणी काछनी काछे।।
नील जलज सुन्दर तनु सोहे।
छवि लखि, सुर नर मुनि मन मोहे।।
मस्तक तिलक, अलक घुंघरारे।
आओ कृष्ण बांसुरी वारे।।
करि पय पान, पूतनहि तारयो।
अका-बका कागासुर मारयो।।
मधुबन जलत अग्नि जब ज्वाला।
भइ शीतल लखतहिं नंदलाला।।
सुरपति जब ब्रज चढ्यो रिसाई।
मूसर घारि वारि वर्षाई।।

लगत देखि ब्रज जात बहायो।
गोवर्धन नख धारि बचायो।।
जसुदा के मन भ्रम जब आवा।
निज मुख चौदह भुवन दिखावा।।
दुष्ट कंस के मन यह आया।
कोटि कमल के फल मंगायो।।
नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हा।
चरण चिन्ह दै निर्भय कीन्हा।।
करि गोपिन्ह संग रास विलासा।
सबकी पूर्ण करी अभिलाषा।।
केतिक महा असुर संहारै।
कंसहि केस पकड़ दे मारे।।
मात पिता की बन्दि छुड़ाई।
उग्रसेन कंह राज दिवाई।।
महि से मृतक छहों सुत लाये।
मातु देवकी मन सुख छाये।।
भौमासुर मुर दैत्य संहारी।
लाये षटदश सहस कुमारी।।
भीमहिं दै तृणी चीर सहारा।
जरासिंधु राक्षस कहं मारा।।
असुर बकासुर आदिक मारे।
भक्तन के तब कष्ट निवारे।।
दीन सुदामा के दुख टारे।

तंदुल तीन मुठी मुख डारे।।
प्रेम ते साग विदुर घर मांगे।
दुर्योधन के मेवा त्यागे।।
लखे प्रेम की महिमा भारी।
ऐसे श्याम दीन हितकारी।।
भारत में पारथ रथ हांके।
लिये चक्र कर नहिं बल थाके।।
गीताजी के ज्ञान सुनाये।
भक्तन हृदय सुधा वर्षाये।।
कृष्ण कृपा सारे दुख बीते।
युद्ध क्षेत्र में पांडव जीते।।
जग में विजय न्याय की कीन्ही।
भारत की लज्जा रख लीन्ही।।
निज माया तुम विधिहिं दिखायो।
उर ते संशय सकल मिटायो।।
जब शत निन्दा करी विहाला।
जीवन मुक्त कियो शिशु पाला।।
जबहिं द्रोपदी टेर लगाई।
दीनानाथ लाज अब जाई।।
तुरतहि वसन बने नंदलाला।
बढ़े चीर भा अरिमुंह काला।।
अस अनाथ के नाथ कन्हैया।
डूबत भंवर बचावत नैया।।

नाथ सकल मम कुमति निवारो।
क्षमहु बेगि अपराध हमारो।।
खोलो पट अब दर्शन दीजै।
बोलो कृष्ण कन्हैया की जै।।

श्री सरस्वती चालीसा

दोहा

जय जग जननी शारदा, जगद्व्यापिनी देवि।
आदि शक्ति परमेश्वरी, जय सुर नर मुनि सेव्य।।

जय जय वीणा पुस्तक धारिणि।
निर्मल ब्रह्म विचार प्रचारिणि।।
शरद शशी सम शुक्ल शरीरा।
हरनि समस्त भक्त भय भीरा।।
मूरखता तम-तोम बिनासिनि।
विमल बुद्धि विज्ञान प्रकासिनी।।
हस्त स्फटिक माला वर राजै।
अमल कमल पर अम्ब विराजै।।
कुन्द इन्दु हिम सम जेहि गाता।
धारे श्वेत वस्त्र सुखदाता।।
जाके कर वर वीणा मनोहर।
राजत श्वेताम्बुज पर सुन्दर।।
जो विधि हरिहरादि सुर पूजित।
रक्षहिं मोहिं शारदा सो नित।।
तव प्रभाव विधि सृष्टि रचाहिं।

पालहिं विष्णु शम्भु विनसाहिं।।
मंगल दायिनी वीणा धारिणी।
विधि हरिहर वन्दित भय हारिणि।।
जन मनोर्थ प्रद यश विस्तारिणि।
विद्या दानि भगत भव तारिणि।।
सेवहिं तुम्हीं जे भक्ति समेता।
त्यागि अन्य सुर भजहिं सचेता।।
ते यह नश्वर तन तज जावैं।
अमरावति बस अमर कहावैं।।
हरो मोह-तम मम उर केरा।
करिकै मातु हृदय मम डेरा।।
करहुं अजाना तिमिर विनाशा।
पूरहुं निर्मल ज्ञान प्रकाशा।।
ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं बीज स्वरूपे।
पुस्तक धारिणि अमल अनूपे।।
स्मित मुख संतुष्ट अपारा।
षडैश्वर्ययुक्त अमित उदारा।।
सकल कला सब विद्या दानी।
अग जग मोहक मातु भवानी।।
कोटि चन्द्र सम प्रभा विशाला।
शोभित वाहन मंजु मराला।।
गोः गो, वाक् भारती नामा।
सध्य साध्य शारद अभिरामा।।

कविवर रसना सिद्धि सुदानी।
हरहुं कुमति दै सुमति भवानी।।
हे देवी कुल जीवन माहीं।
विलसै विद्या रूप सदाहीं।।
सो वरदात्री सरस्वती को।
करौं प्रणाम जोरि कर नीको।।
शक्ति रूप ते जो सब ही में।
करत निवास भक्त कवि में।।
काव्य स्वरूप ललित करि बानी।
देहुं ज्ञान मोहिं नित्य भवानी।।
कीर्ति रूप बस मम जीवन में।
करहुं कृपा हो हरषित मन में।।
प्रतिभा कर विकसित महारानी।
करौं प्रणाम मात वर दानी।।
ब्रह्म स्वरूपा ज्योति अनूपा।
सकल ज्ञानदाता सुख रूपा।।
मात्रा बिन्दु विसर्ग तुम्हीं हो।
दानि स्वर्ग, अपवर्ग तुम्हीं हो।।
संख्या तुम्हीं, तुम्हीं त्रय काला।
ज्ञान स्मृति वर बुद्धि विशाला।।
प्रतिभा तुम्हीं कल्पना शक्ति।
राजत भक्त हृदय में भक्ति।।
तुम साहित्य तुम्हीं संगीता।

राग रागिनी मञ्जुल गीता।।
तुम्हीं नाद, सुबिन्दु तुम्हीं हो।
तुम्हीं दिवाकर, इन्दु तुम्हीं हो।।
वीणा मधुर जबहिं झनकारे।
नाद ब्रह्म देवे सुख सारे।।
विधि हरिहर इन्द्रादि सकल सुर।
ध्यावत तुमहिं शुद्ध कर निज उर।।
चतुरानन षणमुख पंचानन।
करि न सकें स्तुति सहसानन।।
इक मुख स्तुति माता तेरी।
करौं कौन विधि लघु मति मेरी।।
नहिं बल बुद्धि विद्या विज्ञाना।
सब प्रकार हों मूढ़ अजाना।।
दया दृष्टि करि मम तन हेरो।
सब विधि मातु मान निज चेरो।।
श्रद्धानत् चालीसा गावै।
निश्चय वह कत्विप्रवर कहावै।।
जय भक्तन भव भ्रान्ति नसायिनि।
जय "नारायण" शान्ति प्रदायिनी।।

दोहा

जय जय वीणा वादिनी, हंस वाहिनी अम्ब।
जय जय जय मां भारती, भक्तन की अवलम्ब।।

श्री काली चालीसा

दोहा

जय जय सीताराम के मध्य वासिनी अम्ब।
देहु दरस जगदम्ब अब करहु न मातु विलम्ब।।

जय काली कंकाल मालिनी।
जय मंगला महाकपालिनी।।
रक्तबीज वधकारिणी माता।
सदा भक्तन की सुखदाता।।
शिरोमालिका भूषित अंगे।
जय काली मधु मद्य तरंगे।।
हर हृदयारविन्द सुविलासिनी।
जय जगदम्ब सकल दुखनासिनी।।
ह्रीं काली श्री महाकराली।
क्रीं कल्याणी दक्षिणकाली।।
कलावती जय जय विद्यावति।
जय तारासुन्दरी महामति।।
देहु सुबुद्धि हरहु दुख द्वन्द्वा।
काटहु सकल जगत के फन्दा।।
जय ॐ कारे जय हुंकारे।
महाशक्ति जय अपरम्पारे।।
कमला कलियुग दर्प विनाशिनी।
सदा भक्तजन की भयनाशिनी।।
अब जगदम्ब न देर लगावहु।

दुख दरिद्र सब मोर हटावहु।।
जयति कराल काल की माता।
कालानल समान तुनिगाता।।
जय शंकरी सुरेशि सनातनी।
कोटि सिद्धि कवि मातु पुरातनी।।
कपर्दिनी कलि कल्मष मोचनी।
जै विकसित नव नलिन विलोचनी।।
आनन्दा आनन्द निधाना।
देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना।।
करुणामृत सागरा कृपामयि।
होहु दुष्ट जन कहं तुम निर्दयी।।
सकल जीव तोहि परम पियारे।
सकल विश्व तव रहहिं अधारे।।
प्रलय काल महं नर्तन कारिणि।
जग जननी सब जग की पालिनी।।
महोदरी माहेश्वरी माया।
हिमगिरी सुता विश्व की छाया।।
स्वच्छच्छरद मरद धुनि माहीं।
गरजत तू ही और कोउ नाही।।
स्फुरित मणिगणाकर प्रताने।
तारागण तू व्योम विताने।।
श्रीधाने सन्तन हितकारिणी।
अग्निपाणि तुम दुष्ट विदारिणी।।

धूम्र विलोचन प्राण विमोचिनी।
शुम्भ निशुम्भ मथनि वर लोचनि।।
सहस्रभुजी सरोरुह मालिनि।
चामुण्डे मरघट की वासिनी।।
खप्पर मध्य सुशोणित साजी।
संहारेउ महिषासुर पाजी।।
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका।
सब एके तुम आदि कालिका।।
अजा एकरूपा बहुरूपा।
अकथ चरित्रा शक्ति अनूपा।।
कलकत्ता के दक्षिण द्वारे।
मूरति तोरि महेशि अपारे।।
कादम्बरी पानरत श्यामा।
जयमातंगी अनूप अकामा।।
कमलासन वासिनी कमलायनि।
जय जय श्याम जय यामायनि।।
रासरते नवरसे प्रकृति हे।
जयति भक्त उर कुमति-सुमति है।।
जयति ब्रह्म शिव विष्णु कामदा।
जयति अहिंसा धर्म जन्मदा।।
जलथल नभ मण्डल में व्यापिनी।
सौदामिनी मध्य आलापिनि।।
झननन तच्छुमरिन रिन नादिनी।

जय सरस्वती वीणा वादिनी।।
ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं चामुण्डा।
कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा।।
जय ब्रह्माण्ड सिद्ध कवि माता।
कामाख्या काली विख्याता।।
हिंगुलाज विन्ध्याचल वासिनी।
अट्टहासिनी अधिगण नासिनी।।
कहं लगि अस्तुति करहुं अखण्डे।
तू ब्रह्माण्ड शक्तिजित चण्डे।।
करहु कृपा सब पे जगदम्बा।
रहहिं निशंक तोर अवलम्बा।।
चतुर्भुजी काली तुम श्यामा।
रूप तुम्हार महा अभिरामा।।
खड्ग और खप्पर कर सोहत।
सुरनर मुनि सबको मन मोहत।।
तुम्हरी कृपा पावे जो कोई।
रोग शोक नहिं ता कहं होई।।
जो यह पाठ करै चालीसा।
तापर कृपा करहिं गौरीशा।।

दोहा

जय कपालिनी जय शिवा जय जय जय जगदम्बा।
सदा भक्तजन केरि दुख हरहु मातु अविलम्बा।।

श्री पार्वती चालीसा

दोहा

जय गिरि तनये दक्षते, शंभु प्रिये गुणखानि।
गणपति जननी पार्वती अम्बे! शक्ति! भवानि।।

ब्रह्मा भेद न तुम्हरो पावे।
पंच बदन नित तुमको ध्यावे।।
षड्मुख कहि न सकत यश तेरो।
सहसबदन श्रम करत घनेरो।।
तेऊ पार न पावत माता।
स्थिति रक्षा लय हित संजाता।।
अधर प्रवाल सदृश अरुणारे।
अति कमनीय नयन कजरारे।।
ललित ललाट विलेपित केशर।
कुंकुम अक्षत शोभा मनहर।।
कनक बसन कंचुकी सजाए।
कटि मेखला दिव्य लहराए।।
कंठ मदार हार की शोभा।
जाहि देखि सहजहि मन लोभा।।
बालारुण अनन्त छबि धारी।
आभूषण की शोभा प्यारी।।
नाना रत्न जटित सिंहासन।
तापर राजति हरि चुरानन।।
इन्द्रादिक देवन ते पूजित।

जग मृग नाग यक्ष रव कूजित।।
गिरि कैलास निवासिनि जय जय।
कोटिक प्रभा विकासिनि जय जय।।
त्रिभुवन सकल कुटुम्ब तिहारी।
अणु-अणु महं तुम्हरी उजियारी।।
हैं महेश प्राणेश तुम्हारे।
त्रिभुवन के जो नित रखवारे।।
उनसो पति तुम प्रास कीन्ह जब।
सुकृत पुरातन उदित भए तब।।
बुढ़ा बैल सवारी जिनकी।
महिमा का गावे कोउ तिनकी।।
सदा श्मशान बिहारी शंकर।
आभूषण है भुजंग भयंकर।।
कण्ठ हलाहल को छबि छाई।
नीलकण्ठ की पदवी पाई।।
देव मगन के हित अस कीन्हों।
विष लै आपु तिनहि अमि दीन्हों।।
ताकी तुम पत्नी छवि धारिणि।
दुरित विदारिणि मंगल कारिणि।।
देखि परम सौन्दर्य तिहारो।
त्रिभुवन चकित बनावन हारो।।
भय भीता सो माता गंगा।
लज्जा मय है सलिल तरंगा।।

सौत समान शम्भु पहआई।
विष्णु पदाब्ज छोड़ि सो धाई।।
तेहिकों कमल बदन मुरझायो।
लखि सत्वर शिव शीश चढ़ायो।।
नित्यानन्द करी बरदायिनि।
अभय भक्त कर नित अनपायिनि।।
अखिल पाप त्रयताप निकन्दिनि।
माहेश्वरी हिमालय नन्दिनि।।
काशी पुरी सदा मन भाई।
सिद्ध पीठ तेहि आपु बनाई।।
भगवती प्रतिदिन भिक्षा दात्री।
कृपा प्रमोद सनेह विधात्री।।
रिपुक्षय कारिणि जय जय अम्बे।
वाचा सिद्ध करि अवलम्बे।।
गौरी उमा शंकर काली।
अन्नपूर्णा जग प्रतिपाली।।
सब जन की ईश्वरी भगवती।
पतिप्राणा परमेश्वरी सती।।
तुमने कठिन तपस्या कीनी।
नारद सों जब शिक्षा लीनी।।
अन्न न नीर न वायु अहारा।
अस्थि मात्र तन भयउ तुम्हारा।।
पत्र घास को खाद्य न भायउ।

उमा नाम तब तुमने पायउ।।
तप बिलोकि रिषि सात पधारे।
लगे डिगावन डिगी न हारे।
तब तव जय जय जय उच्चारेउ।
सप्तरिषी निज गेह सिधारेउ।।
सुर विधि विष्णु पास सब आए।
वर देने के वचन सुनाए।।
मांगे उमा वर पति तुम तिनसों।
चाहत जग त्रिभुवन निधि जिनसों।।
एवमस्तु कहि ते दोउ गए।
सुफल मनोरथ तुमने लए।।
करि विवाह शिव सों हे भामा।
पुनः कहाई हर की बामा।।
जो पढ़िहै जन यह चालीसा।
धन जन सुख देईहै तेहि ईसा।।

दोहा

कूट चंद्रिका सुभग शिर जयति जयति सुख खानि।
पार्वती निज भक्त हित ररहु सदा वरदानि।।

श्री वैष्णो चालीसा

दोहा

गरुड़ वाहिनी वैष्णवी त्रिकुटा पर्वत धाम।
काली, लक्ष्मी, सरस्वती शक्ति तुम्हें प्रणाम।।
नमो नमो वैष्णो वरदानी।

कलिकाल में शुभ कल्यानी।।
मणि पर्वत पर ज्योति तुम्हारी।
पिंडी रूप में हो अवतारी।।
देवी-देवता अंश दियो है।
रत्नाकर घर जन्म लियो है।।
करी तपस्या राम को पाऊं।
त्रेता की शक्ति कहलाऊं।।
कहा राम मणि पर्वत जाओ।
कलियुग की देवी कहलाओ।।
विष्णु रूप से कल्की बनकर।
लूंगा शक्ति रूप बदलकर।।
तब तक त्रिकुटा घाटी जाओ।
गुफा अंधेरी जाकर पाओ।।
काली-लक्ष्मी-सरस्वती मां।
करेंगी शोषण-पार्वती मां।।
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारे।
हनुमत, भैंरो प्रहरी प्यारे।।
रिद्धि, सिद्धि चंवर डुलायें।
कलियुग-वासी पूजन आवें।।
पान सुपारी ध्वजा नारियल।
चरणामृत चरणों का निर्मल।।
दिया फलित वर मां मुस्काई।
करन तपस्या पर्वत आई।।

कलि-काल की भड़की ज्वाला।
इक दिन अपना रूप निकाला।।
कन्या बन नगरोटा आई।
योगी भैरों दिया दिखाई।।
रूप देख सुन्दर ललचाया।
पीछे-पीछे भागा आया।।
कन्याओं के साथ मिली मां।
कौल-कंदौली तभी चली मां।।
देवा माई दर्शन दीना।
पवन रूप हो गई प्रवीणा।।
नवरात्रों में लीला रचाई।
भक्त श्रीधर के घर आई।।
योगिन को भण्डारा दीना।
सबने रुचिकर भोजन कीना।।
मांस, मदिरा भैरों मांगी।
रूप पवन कर इच्छा त्यागी।।
बाण मारकर गंगा निकाली।
पर्वत भागी हो मतवाली।।
चरण रखे आ एक शिला जब।
चरण-पादुका नाम पड़ा तब।।
पीछे भैरों था बलकारी।
छोटी गुफा में जाय पधारी।।
नौ माह तक किया निवासा।

चली फोड़कर किया प्रकाशा।।
आद्या शक्ति-ब्रह्म कुमारी।
कहलाई मां आदि कुंवारी।।
गुफा द्वार पहुंची मुस्काई।
लांगुर वीर ने आज्ञा पाई।।
भागा-भागा भैरों आया।
रक्षा हित निज शस्त्र चलाया।
पड़ा शीश जा पर्वत ऊपर।
किया क्षमा जा दिया उसे वर।।
अपने संग में पुजवाऊंगी।
भैरों घाटी बनवाऊंगी।।
पहले मेरा दर्शन होगा।
पीछे तेरा सुमरन होगा।।
बैठ गई मां पिण्डी होकर।
चरणों में बहता जल झर-झर।।
चौंसठ योगिनी-भैरों बरवन।
सप्तऋषि आ करते सुमरन।।
घंटा ध्वनि पर्वत पर बाजे।
गुफा निराली सुन्दर लागे।।
भक्त श्रीधर पूजन कीना।
भक्ति सेवा कर वर लीना।।
सेवक ध्यानूं तुमको ध्याया।
ध्वजा व चोला आन चढ़ाया।।

सिंह सदा दर पहरा देता।
पंजा शेर का दुःख हर लेता।।
जम्बू द्वीप महाराज मनाया।
सर सोने का छत्र चढ़ाया।।
हीरे की मूरत संग प्यारी।
जगे अखंड इक जोत तुम्हारी।।
आश्विन चैत्र नवराते आऊं।
पिण्डी रानी दर्शन पाऊं।।
सेवक 'शर्मा' शरण तिहारी।
हरो वैष्णो विपत हमारी।।

दोहा

कलियुग में महिमा तेरी, है मां अपरम्पार।
धर्म की हानि हो रही, प्रगट हो अवतार।।

श्री गायत्री चालीसा

दोहा

जयति जयति अम्बे जयति, यज्ञ गायत्री देवि।
ब्रह्मज्ञान धारनि हृदय, आदिशक्ति सुरसेवि।।
जयति जयति गायत्री अम्बा।
काटहु कष्ट न करहु विलम्बा।।
तव ध्यावत विधि विष्णु महेसा।
लहत अगम सुख सांति हमेसा।।
तू ही ब्रह्मज्ञान उर धारिणि।
जग तारिणि मगमुक्ति प्रसारिणि।।

जन तन संकट नासनि हारी।
हरनि पिसाच प्रेत दै तारी।।
मंगल मोद भरणि भय नासिनि।
घट-घट वासिनि बुद्धि प्रकासिनि।।
पूरन ज्ञान रत्न की खानी।
सकल सिद्धि दानी कल्याणी।।
संभु नेत्र नित निरत करैया।
भव भय दारुण दर्प हरैया।।
सर्व काम क्रोधादिक माया।
ममता मत्सर मोह अदाया।।
अगम अनिष्ट हरन महासक्ती।
सहज भरण भक्तन उर भक्ती।।
ॐ रूप कलि कलुष विभंजनि।
भूभुवः स्वः स्वतः निरंजनि।।
सब्द 'तत् सवितुः' हंस सवारी।
अरू 'वरेण्यम्' ब्रह्मदुलारी।।
'भर्गो' जन तनु क्लेस नसावत।
प्रेम सहित 'देवस्य' जु ध्यावत।।
'धीमहि' धीर धरत उर माही।
'धियो' बुद्धिबल विमल सुहाही।।
'योनः' नित नवभक्ति प्रकासन।
'प्रयोदयात्' पुंज अघनासन।।
अक्षर-अक्षर महं गुन रूपा।

अगम अपार सुचरित अनूपा।।
जो गुन सास्त्र न तुम्हरो जाना।
सब्द अर्थ जो सुना न नाना।।
सो नर दुर्लभ अस तन पावत।
कनक घटन पापस करि डारत।।
जब लगि ब्रह्म कृपा नहिं तेरी।
रहहि तबहि लगि ज्ञान की देरी।।
प्रकृति ब्रह्म सक्ती बहुतेरी।
महा व्याहृती नाम घनेरी।।
ॐ तत्व निर्गुण जग जाना।
भूः महि रूप चतुर्दल माना।।
भूवः भुवन पालन सुचिकारी।
स्वः अक्षर सोलह दल धारी।।
'तत्' विधिरूप जगत दुःखहारी।
'स' रस रूप ब्रह्म सुखकारी।।
'वि' रचित गंध सिसिर संयुक्ता।
'तुर्' मित घट-घट जीवन मुक्ता।।
'वृ' नत सब्द सुविग्रह कारन।
'रे' स्वसरीर तत्वयुत धारन।।
'ण्यम्' सर्वत्र सुपालन कर्ता।
'भर्' त्रिभुवन मुद मंगल भर्ता।।
'गो' संयुक्त गंध अविनासी।
'दे' तन बुद्धि बचन सुख रासी।।

'व' सत् ब्रह्म सुबाहु स्वरूपा।
'स्य' तनु लसै सतदल अनुरूपा।।
'धी' जनु प्रकृति सब्द नित कारन।
'म' नित ब्रह्मरूपिणी धारन।।
'हि' जहि सर्व ब्रह्म परकासन।
'धियो' बुद्धि बल विद्या वासन।।
'यो' सर्वत्र लसत थल जल निधि।
'नः' नित तेज पुंज जग बहु विधि।।
'प्र' बल अनिलकाय नित कारन।
'चो' परिपूर्ण सिव श्री धारन।।
'द' मन करत प्रकट अघ सक्ती।
'यात्' प्रबेस करे हरि भक्ति।।
जयति-जयति जय-जय जगधात्री।
जय-जय महामंत्र गायत्री।।
तू ही राम राधिका सीता।
तू श्री कृष्ण निसृत श्री गीता।।
आदिशक्ति तू भक्ति भवानी।
जगत जननि फल वांछित दानी।।
तू ही दुर्गा दुर्ग विनासिनि।
उमा रमा बैकुण्ठ निवासिनि।।
तू श्री भक्ति भैरवी दानी।
तुही मातु मंगल मिरडानी।।
जेते मंत्र जगत में आहीं।

पर गायत्री सम कोइ नाहीं।।
जाहि ब्रह्म हत्यादिक लागै।
गायत्रिहि जप सो अघ भागै।।
धनि हो धनि त्रैलौक्य वंदिनी।
जय जो जय श्री ब्रह्मनंदिनी।।

दोहा

श्री गायत्री चालीसा पाठ करै सानंद।
सहज तरै पातक हरै परै न पुनि भव फंद।।
बास होई गृह लक्ष्मी गहि मन वांछित आस।
आसा पूरन लहि सकल विरच्यो सुंदरदास।।

श्री अन्नपूर्णा चालीसा

दोहा

विश्वेश्वर-पदपदम की रज-निज शीश-लगाय।
अन्नपूर्ण तव सुयश बरनौं कवि-मतिलाय।।
नित्य आनंद करिणी माता।
वर-अरु अभय भाव प्रख्याता।।
जय, सौंदर्य सिंधु जग-जननी।
अखिल पाप हर भव-भय हरनी।।
श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि।
संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि।।
काशी पुराधीश्वरी माता।
माहेश्वरी सकल जग-त्राता।।
वृषभारूढ़ नाम रुद्राणी।

विश्व विहारिणि जय कल्याणी।।
पदिदेवता सुतीत शिरोमनि।
पदवी प्राप्त कीन्ह गिरि-नंदिनि।।
पति-विछोह दुख सहि नहिं पावा।
योग अग्नि तब बदन जरावा।।
देह तजत शिव-चरण सनेहू।
राखेहु जाते हिमगिरि-गेहू।।
प्रकटी गिरिजा नाम धरायो।
अति आनंद भवन महं छायो।।
नारद ने तब तोहिं भरमायहु।
ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु।।
ब्रह्मा-वरुण-कुबेर गनाये।
देवराज आदिक कहि गाये।।
सब देवन को सुजस बखानी।
मतिपलटन की मन महं ठानी।।
अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या।
कीन्हीं सिद्ध हिमाचल कन्या।।
निज कौ तव नारद घबराये।
तब प्रण-पूरण मंत्र पढ़ाये।।
करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ।
संत-बचन तुम सत्य परेखेउ।।
गगनगिरा सुनि टरी न टारे।
ब्रह्मा, तब तव पास पधारे।।

कहेउ पुत्रि वर मांगु अनूपा।
देहुं आज तुम मति अनुरूपा।।
तुम तप कीन्ह अलौकिक भारी।
कष्ट उठयेहु अति सुकुमारी।।
अब संदेह छांड़ि कछु मोसों।
है सौगंध नहीं छल तोसों।।
करत वेद विद ब्रह्मा जानहु।
वचन मोर यह सांजो मानहु।।
तजि संकोच कहहु निज इच्छा।
देहौं मैं मन मानी भिक्षा।।
सुनि ब्रह्मा की मधुरी बानी।
मुखसों कछु मुसुकायि भवानी।।
बोली तुम का कहहु विधाता।
तुम तो जगके स्रष्टाधाता।।
मम कामना गुप्त नहिं तोंसों।
कहवावा चाहहु का मोसों।।
यक्ष यज्ञ महं मरती बारा।
शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा।।
सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये।
कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये।।
तब गिरिजा शंकर तव भयऊ।
फल कामना संशय गयऊ।।
चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा।

तब आनन महं करत निवासा।।
माला पुस्तक अंकुश सोहै।
कर महं अपर पाश मन मोहे।।
अन्नपूरणे! सदापूरणे।
अज-अनवद्य अनंत अपूर्णे।।
कृपा सगरी क्षेमंकरी मां।
भव-विभूति आनंद भरी मां।।
कमल बिलोचन विलसित बाले।
देवि कालिके! चण्डि कराले।।
तुम कैलास मांहि है गिरिजा।
विलसी आनंद साथ सिंधुजा।।
स्वर्ग-महालक्ष्मी कहलाई।
मर्त्यलोक लक्ष्मी पद पाई।।
विलसी सब महं सर्व सरूपा।
सेवत तोहिं अमर पुर-भूपा।।
जो पढ़िहहिं यह तुव चालीसा।
फल पइहहिं शुभ साखी ईसा।।
प्रात समय जो जन मन लायो।
पढ़िहहिं भक्ति सुरुचि अधिकायो।।
स्त्री-कलत्र पनि मित्र-पुत्र युत।
परमैश्वर्य लाभ लहि अद्भुत।।
राज विमुख को राज दिवावै।
जस तेरो जन-सुजस बढ़ावै।।

पाठ महा मुद मंगल दाता।
भक्त मनोवांछित निधि पाता।।

दोहा

जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावहिंगे माथ।
तिनके कारज सिद्ध सब, साखी काशी नाथ।।

श्री सूर्य चालीसा

दोहा

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग।
पद्मासन स्थित ध्याइये, शंख चक्र के सङ्ग।।
जय सविता जय जयति दिवाकर।
सहस्रांशु! सप्ताश्व तिमिरहर।।
भानु, पतंग, मरीचि, भास्कर।
सविता, हंस सुनूर विभाकर।।
विवस्वान, आदित्य, विकर्तन।
मार्तण्ड हरिरूप विरोचन।।
अम्बरमणि खग रवि कहलाते।
वेद हिरण्यगर्भ कह गाते।।
सहस्रांशुप्रद्योतन, कहि कहि।
मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि।।
अरुण सदृश सारथी मनोहर।
हांकत हय साता चढ़ि रथ पर।।
मंडल की महिमा अति न्यारी।
तेज रूप केरी बलिहारी।।

उच्चैः श्रवा सदृश हय जोते।
देखि पुरंदर लज्जित होते।।
मित्र, मरीचि, भानु, अरु भास्कर।
सविता, सुर्य, अर्क, खग कलिकर।।
पूषा, रवि, आदित्य नाम लै।
हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै।।
द्वादस नाम प्रेम सों गावै।
मस्तक बारह बार नवावै।।
चार पदारथ सो जन पावै।
दुःख दारिद्र अघ पुञ्ज नसावै।।
नमस्कार को चमत्कार यह।
विधि हरिहर को कृपासार यह।।
सेवै भानु तुमहिं मन लाई।
अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई।।
बारह नाम उच्चारन करते।
सहस जनम के पातक टरते।।
उपाख्यान जो करते तवजन।
रिपु सों जमलहते सोतेहि छन।।
छन सुत जुत परिवार बढ़तु है।
प्रबलमोह को फंद कटतु है।।
अर्क शीश को रक्षा करते।
रवि ललाट पर नित्य बिहरते।।
सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत।

कर्ण देस पर दिनकर छाजत।।
भानु नासिका वास करहु नित।
भास्कर करत सदा मुख कौ हित।।
ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे।
रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे।।
कंठ सुवर्ण रेत की शोभा।
तिग्मतेजसः कांधे लोभा।।
पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर।
त्वष्टा-वरुण रहम सउष्णकर।।
युगल हाथ पर रक्षा कारन।
भानुमान उरसर्म सुउदरचन।।
बसत नाभि आदित्य मनोहर।
कटि महं हंस, रहत मन मुदभर।।
जंघा गोपति, सविता बासा।
गुप्त दिवाकर करत हुलासा।।
विवस्वान पद की रखवारी।
बाहर बसते नित तम हारी।।
सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै।
रक्षा कवच विचित्र विचारै।।
अस जोजन अपने मन माहीं।
भय जग बीज करहुं तहि नाही।।
दरिद्र कुष्ट तेहिं कबहुं न व्यापै।
जोजन याको मनमहं जापै।।

अंधकार जग का जो हरता।
नव प्रकाश से आनन्द भरता।।
ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही।
कोटि बार मैं प्रनवौं ताही।।
मन्द सदृश सुतजग में जाके।
धर्मराज सम अद्भुज बांके।।
धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा।
किया करत सुरमुनि नर सेवा।।
भक्ति भावयुत पूर्ण नियमसों।
दूर हटतसो भवके भ्रमसों।।
परम धन्य सो नर तनधारी।
हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी।।
अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन।
मध वेदांगनाम रवि उदयन।।
भानु उदय वैसाख गिनावै।
ज्येष्ट इन्द्र आषाढ़ रवि गावै।।
यम भादों आश्विन हिमरेता।
कार्तिक हीत दिवाकर नेता।।
अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं।
पुरुष नाम रवि हैं मलमासहिं।।

दोहा

भानु चालिसा प्रेम युत, गावहि जे नर नित्य।
सुख-सम्पत्ति लहै विविध, होहिं सदा कृतकृत्य।।

श्री शनि चालीसा

दोहा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल।।
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज।।

जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला।।
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।
माथे रतन मुकुट छवि छाजै।।
परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।।
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके।
हिये माल मुक्तन मणि दमके।।
कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं अरिहिं संहारा।।
पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुखभंजन।।
सौरी, मन्द, शनि, दश नामा।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा।।
जा पर प्रभु प्रसन्न ह्वै जाहीं।
रंकहुं राव करैं क्षण माहीं।।
पर्वतहू तृण होई निहारत।

तृण हू को पर्वत करि डारत।।
राज मिलत बन रामहिं दीन्हो।
कैकेइहुं की मति हरि लीन्हो।।
बनहूं में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई।।
लखनहिं शक्ति विकल करि डारा।
मचिगा दल में हाहाकारा।।
रावण की गति-मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई।।
दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंग बीर की डंका।।
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा।।
हार नौलखा लाग्यो चोरी।
हाथ पैर डरवयो तोरी।।
भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो।
विनय राग दीपक महं कीन्हो।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हो।।
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी।।
तैसे नल पर दशा सिरानी।

भूंजी-मीन कूद गई पानी।।
श्री शंकरहिं गह्यो जब जाई
पारवती को सती कराई।।
तनिक विलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।।
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी।
बची द्रौपदी होति उघारी।।
कौरव के भी गति मति मार्‍यो।।
युद्ध महाभारत करि डार्‍यो।।
रवि कहं मुख महं धरि तत्काला।
लेकर कूदि पर्‍यो पाताला।।
शेष देव-लखि विनती लाई।
रवि को मुख ते दिया छुड़ाई।।
वाहन प्रभु के सात सुजाना।
जग दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना।।
जम्बुक सिंह आदि नखधारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी।।
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
यह ते सुख सम्पति उपजावैं।।
गर्दभ हानि करै बहु काजा।
सिंह सिद्ध कर राज समाजा।।
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।

मृग दे कष्ट प्राण संहारै।।
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी।।
तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चांदी अरु तामा।।
लौह चारण पर जब प्रभु आवैं।
धन जन सम्पति नष्ट करावैं।।
समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी।।
जो यह शनि चरित्र नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै।।
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला।।
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई।।
पीपल जल शनि ग्रह दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत।।
कहत 'रामसुन्दर' प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा।।

दोहा

पाठ शनिश्चर देव को, की हों 'विमल' तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार।।

नवग्रह चालीसा

दोहा

श्री गणपति गुरुपद कमल प्रेम सहित शिर नाय।
नवग्रह चालीसा कहत शारद होहु सहाय।।
जय जय रवि शशि भौम बुद्ध जय गुरु भृगु शनि राज।
जयति राहु अरु केतु ग्रह करहु अनुग्रह आज।।

सूर्य

प्रथमहिं रवि कहं नावौ माथा।
करहु कृपा जन जानि अनाथा।।
हे आदित्य! दिवाकर भानू।
मैं मति मन्द महा अज्ञानू।।
अब निज जन कहं हरहु कलेशा।
दिनकर द्वादश रूप दिनेशा।।
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर।
अर्क मित्र अघ ओघ क्षमाकर।।

चन्द्र

शशि मयङ्क रजनीपति स्वामी।
चन्द्र, कलानिधि नमो नमामी।।
राकापति हिमांशु राकेशा।
प्रणवत जन नित हरहु कलेशा।।
सोम इन्दु विधु शान्ति सुधाकर।
शीत रश्मि औषधी निशाकर।।

तुमहीं शोभित भाल महेशा।
शरण-शरण जन हरहु कलेशा।।

मंगल

जय जय जय मङ्गल सुखदाता।
लोहित भौमादित विख्याता।।
अंगारक कुज रुज ऋणहारी।
दया करहु यहि विनय हमारी।।
हे महिसुत! छितीसुत! सुखरासी।
लोहितांग जग जन अघनासी।।
अगम अमंगल मम हर लीजे।
सकल मनोरथ पूरण कीजे।।

बुध

जय शशिनन्दन बुध महाराजा।
करहु सकल जन कहं शुभ काजा।।
दीजै बुद्धि सुमति बल ज्ञाना।
कठिन कष्ट हरि हरि कल्याना।।
हे तारासुत! रोहिणी नन्दन।
चन्द्र सुवन दुःख दूरि निकन्दन।।
पूजहु आस दास कहं स्वामी।
प्रणत पाल प्रभु नमो नमामी।।

बृहस्पति

जयति जयति जय श्री गुरु देवा।
करौं सदा तुम्हरो प्रभु सेवा।।

देवाचार्य देव गुरु ज्ञानी।
इन्द्र पुरोहित विद्या दानी।।
वाचस्पति वागीस उदारा।
जीव बृहस्पति नाम तुम्हारा।।
विद्या सिन्धु अंगिरा नामा।
करहु सकल विधि पूरण कामा।।

शुक्र

शुक्रदेव तव पद जल जाता।
दास निरन्तर ध्यान लगाता।।
हे उशना! भार्गव भृगुनन्दन।
दैत्य पुरोहित दुष्ट निकन्दन।।
भृगुकुल भूषण दूषण हारी।
हरहु नेष्ट ग्रह करहु सुखारी।।
तूहि पण्डित जोषी द्विजराजा।
तुम्हरे रहत सहत सब काजा।।

शनि

जय श्री शनि देव रवि नन्दन।
जय कृष्णो सौरि जगवन्दन।।
पिङ्गल मन्द रौद्र यम नामा।
बभ्रु आदि कोणस्थल लामा।।
वक्र दृष्टि पिप्पल तन साजा।
छण महं करत रंक छण राजा।।
ललत स्वर्ण पद करत निहाला।

करहु विजय छाया के लाला।।

राहु

जय जय राहु गगन प्रविसइया।
तुम ही चन्द्रादित्य ग्रसइया।।
रवि शशि अरि स्वर्भानू धारा।
शिखी आदि बहु नाम तुम्हारा।।
सैंहिकेय निशाचर राजा।
अर्धकाय तुम राखहु लाजा।।
यदि ग्रह समय पाय कहुं आवहु।
सदा शान्ति रहि सुख उपजावहु।।

केतु

जय जय केतु कठिन दुखहारी।
निज जन हेतु सुमंगलकारी।।
ध्वजयुत रुण्ड रूप विकराला।
घोर रौद्रतन अधमन काला।।
शिखी तारिका ग्रह बलवाना।
महा प्रताप न तेज ठिकाना।।
।। इति शुभम् ।।

अपना गोत्र जानिये
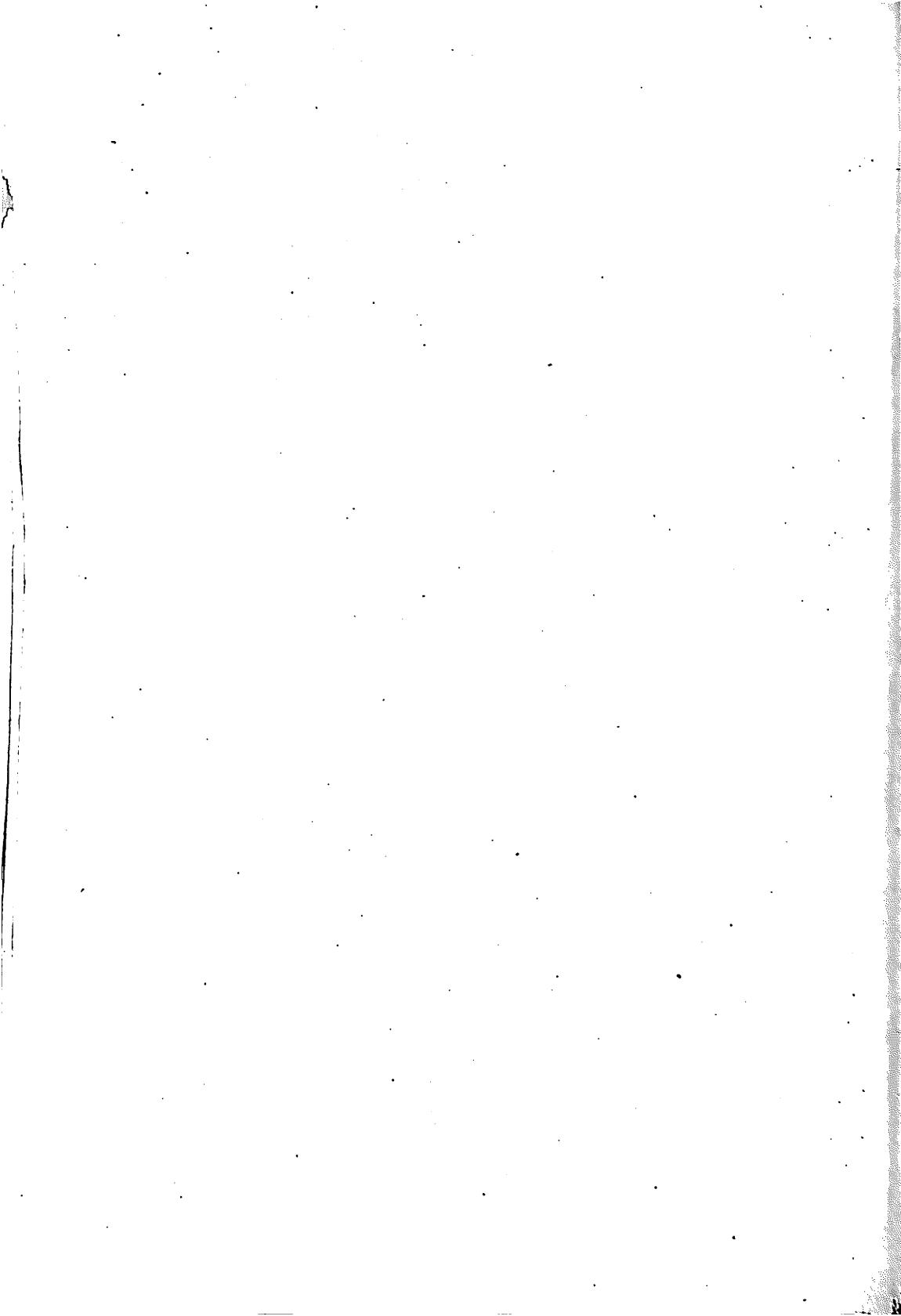
विजयेश्वर कैसट्स

स्व. प्रेम नाथ शस्त्री की वाणी से

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

अजीत कालोनी
गोल गुजराल जम्मू
Ph. : 555607